



# कवि-धी माला

• तमिल •

कवि

नामककल रामलिङ्गम पिल्लै

सम्पादक—अनुवादक

क म शिवराम शर्मा



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

मोहनलाल अर्द

धन्वी

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

दिल्लीनगर, बच्ची



सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण—१००

मई, १९६२

मूल्य—रु. २/-



मुद्रक

मोहनलाल अर्द

राष्ट्रभाषा प्रचार

दिल्लीनगर, बच्ची



हर्षण विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्षों अपने कार्य का लक्ष्य २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मन्थनेवाले रसत-ज्यन्ती मञ्जोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके भाग्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यपरिचय 'कवि-श्री भाषा' की पन्ध्रौं पुस्तकमें हिन्दी-गणानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि हिन्दी भी भाषाके सर्वाधिक काव्य-सर्जकत्व विरुद्ध करण एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सीमाओंके ध्याने रखते हुए गण्यग्रन्थ उन-उन भाषाओंके विद्वान्के रायसे ही चुनवण कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यपरिचय और कवि-दिनेपर परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चुनाव किया गया है उनका चुनाव कथते समय सन् १९०० से पूर्वका साहित्य और १९०० से बादका साहित्य—इस तरहमें एक विभाजन-रेखा ध्याने रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९०० के पूर्वके तथा १९०० के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धारामें एक विशेष प्रत्यक्ष अन्तराल-सा पन्था जाता है।

श्री क. म. त्रिपाठी जी जीने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यके चुनने, कव्याङ्कमें सम्पादित तथा अनुवाद कर सभी सामग्रीमें इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। संपादकी आचार्य डिवाइजमें बनवा देनेमें श्री ली एन. अहलकरजी (डीन, सर जे. के. इन्स्टीट्यूट आफ अन्वर्सेड आर्ट्स, बनारस) का उत्तर सहयोग निम्न है उनके लिए साभित सारीकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त लखौं तथा अन्ध्याख्य दृष्टियोंसे चित्त-चिन्तन प्रयत्न एवं अप्रयत्न सहयोग निम्न है उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

*K. M. Tripathi*

मन्त्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बर्धा

## अनुक्रमणिका

	पृष्ठांक
तमिल-साहित्य-परिचय [ सन् १९२० से आज तक ]	१
कवि-परिचय	२१
वाच्य-सञ्चय	३३

कवि-श्री माला

तमिल



मामवल रामलिगम पिल्ल



# तमिल साहित्य परिचय

[ १९२० से मात्रतक ]





# तमिल भाषा और उसका साहित्य



[ आरम्भमें सन् १९२ तक के तमिल साहित्यका संक्षिप्त परिचय कवि-पी माला तमिल-सुब्रह्मण्य भारती में दिया गया है। ]

बीसवीं सदीके तीसरी दशकके आरम्भके साथ साथ दुनिया भरके इतिहासके एक नया युगका आरम्भ हुआ। सन् १९१४ ई में यूरोपमें एक युद्धका आरम्भ हुआ। अमेरिकाकी इस युद्धमें भाग लेना पड़ा और जापान भी इसमें भाग लिया। इस युद्धका प्रभाव सारे महाद्वार पर पड़ा। इस युद्धके बीचमें ही हममें महान विप्लव हुआ। बार नामक एकाधिकारी राजाका पतन हुआ और संसिनेके मन्त्रालयमें गान्धेबादियोंका शासनका मार उठाया। अमरीके के भीतर नामक प्रबल राजाका पतन हुआ। अन्तही देशोंके नाम पर-भ्युत्पन्न हुए।

इस युद्धका प्रभाव भारतपर भी पड़ा। सन् १९१५ में श्रीमती एनी बेसेण्ट "हीम रक्त" नामको पुस्तक लिखा जा। कृषि उसी समय लोहमास्य पाल गंगाधर तिलक छह वर्षके काठकामके बाद हुए। उनका भी समर्थन पाकर श्रीमती एनी बेसेण्टके आन्दोलन बहुत बड़ा रूप धारण किया। इसी समय दक्षिण आफ्रिकामें गांधीजी भारत वापस आये। सन् १९१८ में उन्होंने हिन्दूक

प्रचारकी एक विस्तृत योजना बनाई। संघसममें एबीएनएन ठाकुरकी कति बहने स्त्री और उनकी रचनाओका प्रचार बहन लगा। इन सारी बातोंका परिणाम यह हुआ कि भारतकी सभी भाषाओके लेखकोंका दृष्टिकोण बदलन लगा।

वैसे ही अँगरेजोंके आगमनके बाद भारतीय भाषाओमें अक्षरों उन्नति बहन स्त्री। इन सभी परिस्थितियोंका परिणाम यह हुआ कि भारतीय लेखकोंका ध्यान राष्ट्रीयता की ओर आकृष्ट हुआ। पुरानी भक्ति-शास्त्रीकी गति मन्व पड़ी और देश-भक्तिकी धारा तेजीसे बहने लगी। यही बात हम तमिल साहित्यमें भी पाते हैं।

तमिल साहित्यकी इस समयकी प्रवृत्तिका परिचय पानके सिद्ध उस प्रवेशकी एक और विद्यपताका परिचय पाना आवश्यक है।

मोट ठौरपर यद्यपि तमिल प्रवेशमें भी चार वर्ष—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—मान्य हैं ता भी अन्य तीन वर्गोंकी अपेक्षा ब्राह्मणका एक विदिष्ट अस्तित्व रहा। बहुधा क्षत्रिय और वैश्य भी शूद्र कहलाए। ब्राह्मणोंके बीचमें सभी वर्गोंमें अधिक उन्नति की थी राजनीतिक क्षेत्रमें ब्राह्मणोंपर इन गिने ही ब। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वराज्यका आन्दोलन जब प्रबल होने लगा तब सरकारकी प्रेरणासे ब्राह्मणोंके अस्तित्व पार्टी" नामसे एक लया बल स्थापित हुआ। यह बल परिस्थिति-बन कुछ समय तक नाम मात्रके त्वि ही बल बन रहा रहा। सन् १९१५ में यह बल विपक्ष-बल हाथ धुँसे लख परास्त हुआ और उसका अस्तित्व अब नाम मात्रके सिद्ध रह गया। पर इस बलके प्रभावसे "इन्डियन" की स्थापना हुई। "कम्युनि" का अर्थ है संघ (सभा)। इन संघका तमिल-साहित्यपर बहुत प्रभाव पड़ा।

दूसरे सन् १९२ तक सार्वजनिक क्षेत्रोंमें तमिल भाषाका प्रयोग बहुत कम होता था। लोग अँगरेजी ही बोलनेमें ही पौरवका अनुभव करते थे। सर्वोच्चकी भाषा भी अक्षरान्तर लेखनी ही थी। अक्षरान्तर भारतमें प्रचलित सर्वोच्चकी वीसी उत्तर भारतीय सर्वोच्चकी वीसीके सिद्ध है। अक्षरान्तर भारतका नवीन नवीनक सर्वोच्च" और उत्तर भारतके सर्वोच्च त्रिभुवनकी सर्वोच्च के नामसे प्रसिद्ध है। नवीनक सर्वोच्चका प्रचार अक्षरान्तर भारतके लेखनी बलके और मन्व्यात्म भाषा-वैश्विकी अपेक्षा तमिल भाषा-क्षेत्र अधिक था कि भी गीत लेखनी भाषाके ही होने थे। प्रसिद्ध गीतकारोंकी रचनाएँ अक्षरान्तर लेखनी और कुछ मन्व्युत्तरमें बहने लगी थी। इन परिस्थितियोंका परिणाम यह हुआ कि तमिल क्षेत्र की भाषा में प्रयोग करने लगे। सर्वोच्च लेखनीकी स्थापनाका परिणाम स्वराज्य "तमिल सर्वोच्च मन्व्युत्तर के क्षेत्रमें स्थापना हुई। यद्यपि इन लक्ष्यका भव मात्र बहन लागेकी बुरा लगा तो भी इनमें कोई मन्वेह नहीं कि इन आन्दोलनोंके कारण तमिल भाषाकी बहन अक्षरान्तर उन्नति हुई।

पश्चिमके सम्पर्कने भारतीय भाषाओंपर गहरा प्रभाव डाला। यह साहित्यकी भाषाका एक नया माग बना। नय तरहके उपन्यास कहानियाँ जीवन चरित्र यात्रा-वर्णन आलोचनात्मक रचनाएँ आदिकी सृष्टि होन लगी। नय ढंगके नाटक रचे जान लगे कविता मुख्य विषय पहले विषय रूपसे प्राथमिक रखा करता था—अब वह नहीं रहा।

पहले हम मद्र-साहित्यको लें। प्राचीन कालमें म लिखनकी सुविधा थी और म लिखित रचना की रसाकी सुविधा थी। यहीं कारण है कि हमारी भाषाओंमें मद्य-साहित्यका आविषय नहीं है। फिर भी यह निश्चित है कि प्राचीन कालमें ही तमिल भाषामें उत्कृष्ट मद्य-रचनाएँ हुईं। इतस्तत् सब कारणाँय मद्य-साहित्यका उत्पन्न पाना जाता है। प्राचीन तमिल प्रार्थनाय बीडों और वीनोंकी तमिल और संस्कृत मिश्रित "मलि प्रवाळ" बीडोंकी मद्य-रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। तमिलकी सबसे पुरानी रचना "तोल वाप्पियम" की रचना थोल राजाओंके कालकी है। आधुनिक बीडोंकी प्रामाणिक मद्य रचनाका आरम्भ १६ वीं सदीमें होना है। तमिल भाषाकी सर्व प्रथम छठी पुस्तक सन् १५५४ में पुतनालकी राजधानी मिसवतमें छपी। सन् १५७७ में कोस्तम (यह आजकल केरल राज्यके अन्तर्गत है) नामक नगर में छपी "तमिलरान वचकम" नामक १६ पृष्ठोंकी पुस्तिका भारतमें मुद्रित सर्व प्रथम तमिल-पुस्तक है।

अठारहवीं सदीमें सिक्कान मुनिवर नामक धर्म सेवक "सिक्कान बोध" नामक काव्यकी टीका रची। उनके समकालीन बस्ती नामक ईसाई धर्म रचारकने "वेरियर ओपुक्कम" नामक रचना की। उनीसवीं सदीमें पारचाय्य ङणकी शिक्षाका आरम्भ हुआ। उसके लिए अनेक प्रकारकी पुस्तकोंकी आवश्यकता हुई। अतः अनेक भाषाओंके साप-साप तमिलमें भूमिस इतिहास विज्ञान सभित आदिकी कई पुस्तके प्रकाशित हुईं। इस सदीमें मुद्रनालपी (छापाखाना) की संस्था भी बनी।

इस सदीके प्रमुख लेखकोंमें रामलिंग स्वामी एक हैं। आप प्रसिद्ध कवि थे और प्राचीन मद्य-वदि परम्पराके अन्तिम कवि मान जात हैं। इनकी "मनु मूई कण्ड वाचकम" और "वीड वाठव्य ओपुक्कम" प्रसिद्ध मद्य-रचनाएँ हैं। शास्त्रय राम मुश्लियार नामक सेवक संस्कृत हिन्दी मराठी कन्नड़ तेलुगु आदि कई भाषाके विद्वान् थे। इनकी कथा-संग्रह नामक कहानियोंका संग्रह एक प्रसिद्ध रचना है। इन्होंने पंचतन्त्र का तमिल भाषामें अनुवाद किया था। "समापति नावकर" व "इविड प्रकाशिता" नामक पुस्तक रचकर साहित्यके इतिहासकी परम्परा बसाई। "वीर्य सार्वी वेट्टियार" की "विमोद-नम-संग्रही" एक प्रसिद्ध रचना है। हममें कन्नड जीवै पुनपन्दि जीवै प्रसिद्ध प्राचीन साहित्य कारकोंका जीवन-वृत्तान्त पाया जाता है।

वेद मायकम पिच्छल आधुनिक ङाके "प्रताप मुखियार बरितिरम" नामक सर्व प्रथम उपन्यास की रचना की। इन्हीका अनुकरण करके राजम अम्पले कमबाम्बाल बरितिरम नामक उपन्यास रचा।

बीसवीं सदीमें गद्य साहित्यकी बहुत अधिक उत्पत्ति हुई। इस सदीमें साहित्यकी गतिमें भारी परिवर्तन ठो हुआ ही साथ साथ देशकी स्थितिमें और सामाजिक सगठनमें भी परिवर्तन हुआ। समाचार-पत्र सिनमा और रेडियोके कारण जनताकी विचार-धारा बदल गई। इस सदीके पूर्व केवल पढ़ लिख लोग ही साहित्यका आस्वादन कर सकते थे। रेडियो और सिनोमाके प्रभावसे अपढ़ लोगोंको भी साहित्यके आस्वादनका अवसर प्राप्त हुआ। इस जनतामें शिक्षाका प्रचार बहुत लगा और परिणाम स्वरूप पढ़े-लिखे लोगोंकी संख्या बहुत बढ़ी। इस लिए साहित्यका लक्ष सीमित न रहकर अब विस्तृत हो गया। विद्येय कपड़े स्वतन्त्रता-मातृके बाद सबसे बरस्क मताधिकार प्राप्त हुआ सबसे सामान्य जनताका ध्यान शिक्षाकी ओर तथा अन्य अनेक प्रकारके विषयोंकी ओर जाने लगा।

साहित्यके पुनरुद्धारका काम कई प्राचीन रचनाओंके प्रकाशनके साथ आरम्भ हुआ। इस क्षेत्रमें स्वर्गीय महामहोपाध्याय ड डे स्वामिनाथ अम्पलेकी सेवाएँ अत्यन्त सराहनीय हैं। आपन तमिल प्रदेश भरमें घूम घूमकर कई उत्कृष्ट प्राचीन रचनाओंका पता लगाया उन रचनाओंका प्रकाशन हुआ और कई लोगोंमें उन प्राचीन रचनाओंकी सरल टीकाएँ लिखी। कई प्रकाशकोंने उन रचनाओंके सम्झे उत्स्करन निकाले। अँग्रेजीकी धिमा प्राप्त कई विडालीन अँग्रेजी तथा अन्य भाषाओंकी उत्कृष्ट रचनाओंका तमिलमें अनुवाद किया। भाषाकी उन्नतिको ही अपना ध्येय मानकर कई संस्कारें लड़ी हुई और मेखकोंके संघ स्थापित हुए।

बीसवीं सदीको तमिल गद्य-साहित्यका स्वर्ण-युग माना जा सकता है। इस समय देशकी परिस्थितिमें समाज-रचनामें और साहित्यके ईतियामें बड़ परिवर्तन हुए। पत्रिकों, शिक्षा विज्ञानकी प्रगति आदिके कारण पुस्तकों, रदियों एवं परम्परागत विरचानोंका नाश होने लगा। पत्रिकाओं आकाशवाणी और तिनमाओंने जनतामें विचारके एतता कानमें मजबूतता पाई। सामनेतिक प्रचार विभिन्न रनाके अपर्यं विधीयन आदिने सामान्य अरद लोगोंको भी उच्च-अभ्यन्त कर दिया। इन बरिस्थितियोंमें विज्ञान-धारा ही बदलने लगी। इस कालमें सामान्य साहित्यकी नवीनता उद्देय ही सामान्य जनहित रहा। रचनाओंमें नरकना स्पष्टता और साधुयका आयनन हुआ।

तमिल प्रदेशका प्राचीन साहित्य ताड़ पर्वीर लिखा गया था। ताड़के पत्तार लौह-कैथरीमें लिखनेका एक तमिल प्रदेशमें बरुपि बहुत कम होने लगा है जो की अर्थात्क पूर्ण तरहमें समाप्त नहीं हुआ है। ताड़-पत्र रिकुं बर्य मुद्रित

रखा या संकटा है। ऐसे ताड़ पत्रोंसे ही स्वर्गीय महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरन प्राचीन तमिल महा-काव्योंका पता लगाकर उन्हें प्रकाशित किया था। उनके भाव जनक विद्वान् अय्याय्य रचनाओंकी खोजमें लगे। फलतः कई प्राचीनतम तमिल-ग्रन्थ प्रकाशित हुए। कई ग्रन्थोंकी माया बटिस होतके कारण उनकी सरल सुबोध शैलीमें व्याख्याएँ एवं भूमिकाएँ लिखी गईं। प्राचीनतम तमिल-काव्योंके अनूठ दृश्योंको गद्यमें बेतर पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया गया।

बैतुचीं सरीके आरम्भमें ही श्री रामोदरम पिस्सैने कई प्राचीन रचनाओंको प्रकाशित किया। उ नें स्वामिनाथ अय्यरकी तरह श्री वैयापुरी पिस्सै नामक विद्वान् जीवनमर प्राचीन ताड़-पत्रोंकी खोज करके अनेक प्राचीन रचनाओंको प्रकाशित किया। प्राचीन काव्योंके टीकाकारोंमें पिन्नलूर नारायण स्वामि अय्यर, मा मु वैकटस्वामि नाट्टार, श्री ईरुस्वामि पिस्सै आदि प्रसिद्ध हैं। मु कविरैसन केट्टियारने "तिरुवाचकम" नामक भक्ति-ग्रन्थकी टीका लिखी। आर. के वण्मुञ्जम केट्टियारन कवीन पीत्तिसे तिरुम्पधिकारम नामक प्राचीन महाकाव्यके पुहार नामक काण्डकी टीका रची।

कई विद्वानोंने प्राचीन सब कालीन रचनाओंका संक्षिप्त सारांश लिखा है। ऐसे केवळोंमें मु बरवराचनार और कि वा जवलायके नाम उल्लेखनीय हैं।

कई विद्वान् केवळोंने उत्कृष्ट प्राचीन रचनाओंके आधारेपर उत्कामीन भक्तिविधियोंका परिचय करया है। डाकर मु बरवराचनारकी तिरुवळ्ळुवर या जीवन प्रकाश टी पी मीनाक्षि सुन्दरनार कृत "वळ्ळुवर-वृष्ट-वैश और काम" ए पि सेतु पिस्सै कृत "अम्म वैशम" (नाम और धाम) तथा वैरिण साभि इरम कृत भार्गव तमिप आदि एसी रचनाएँ हैं।

धमाजीवना-साहित्यकी परम्परा प्रसिद्ध वैशमकत स्वर्गीय व नें मु अय्यरने चलाई थी। अ मुत्तु शिवन व ध ज्ञान सम्बन्ध ए श्री वैशिकन तिरुम्बर रत्ननाथ आचार्य श्रीनिवास पाववन आदि उत्कृष्ट धमाजीवक हैं।

पत्र भक्तियोंमें सर्वोच्च स्थान स्वदेश मित्रन का है। सन् १८८२ ई में श्री मुञ्जुप्पाय्य अय्यर नामक प्रसिद्ध वैश-भक्तन इस पत्रका आरम्भ किया था। इस पत्रकी चकातमें मापकी बसक्य कठिनाइयाँ उठनी पड़ी। इसके बाद इन्दिया नामक साप्ताहिक पत्र निकला। इसके सम्पादक मुञ्जुप्पाय्य भार्गव व। अपन राजनीतिक विचारोंके कारण वह पत्र उत्कामीन अर्थकी दृष्टिकोके अनेकका पात्र बना। इस पत्रके बाद भार्गवने पाण्डिचेरिमें विजया सूर्योदय कर्म-योगि-आदि पत्र निकाले। पर कोई पत्र बीज-कालीन न रहा।

सन् १८९९ में लोकोपकारी नामक साप्ताहिक पत्र निकलने लगा। वृत्तमें इस पत्रम केवल धार्मिक चर्चा रहती थी पर सन् १९२२ में श्री परतिक् मु मेस्सम्प्यर इसके सम्पादक बने तबसे इस पत्रमें राजनीतिक चर्चा भी होने लगी।

श्री नत्सम्यप्पर तमिल प्रदेशके प्रसिद्ध पत्रकार हैं। आप स्वर्गीय कवि मुबद्दुष्य भार्तीके साथ थे। इस घड़ीके दूसरे बसकमें श्री ओ चिदम्बरम पिस्सी नामक प्रसिद्ध देश भक्तन भारत और सिङ्गलके बीच स्वदेशी बहुराज बनाकर देशभरमें स्वदेशी आन्दोलनका बस बढ़ाया जा। इसके परिणाम स्वल्प उन्हें सरकारके क्रोध का पाष बनना पड़ा। इस विमर्शकेमे श्री नत्सम्यप्परको २० सालकी जामुम कारावासका दण्ड भुगतना पड़ा। फिर पचास सालकी जामुमें आप गांधीजीके आन्दोलनमें जल गए। तमिल भाषाके प्रसिद्ध साहित्यकारके नामसे प्रसिद्धि प्राप्त स्वर्गीय रा कृष्णमूर्तिको साहित्य-क्षेत्रमें ज्ञानका भय आप ही को है। आप अत्यन्त नम्र स्वभावके मित्रनसार और हंसमुख हैं।

सन् १९१९ १९१७ में जब श्रीमती एनी बसुष्टका आन्दोलन जोरोंपर था तब देश भक्तन नामक एक दैनिक पत्र निकला। तब श्री के नामसे प्रसिद्ध श्री बी कल्याण मुन्दर मुबद्दुष्यार इस पत्रके सम्पादक ब। श्री मुबद्दुष्यार बहरास के बेशर्मा कालके तमिल भाषाके प्राध्यापक थे। राजनीतिक आन्दोलनमें भाग लेनेके उद्देशसे आपन प्राध्यापकका पद त्याग दिया। कुछ दिन इस पत्रका सम्पादन करनेके बाद आप इस पत्रसे हट गए। तब स्वर्गीय व बी मु अय्यर इस पत्रके सम्पादक हुए। श्री अय्यर इन्हींमें श्रीर साबरकरके साथी थे। सरकार आपको कैद करना चाहती थी पर रूप और नाम बदलकर श्री अय्यर महोदय सरकारके पत्रसे बचकर पाण्डिचेरी जा पहुँचे। वहाँ अर्चिन्दर शाबू और मुबद्दुष्य भार्तीके साथ रहने लगे। १९१९ में जब नया सांसद विधान सभलमें आया तब अँग्रेज सरकारन राजनीतिक क्षेत्रोंकी मुक्त किया। उस समय भारती श्रीर अय्यर पाण्डिचेरीमे मजरास जा पहुँचे। इसी समय गांधीजी सक्रिय राजनीतिक आन्दोलनमें भाग लेने लगे थे। अय्यरपर गांधीजीका बड़ा प्रभाव पड़ा। आपन भारतवर्षको छोड़कर गांधीजीका अहिंसा और तपस्या मार्ग अपनाया।

देश-भक्तन पत्रका एक लेख आद्यप जनक माना गया। परिणामन सरकार पत्रपर कार्रवाई करना सन। लेखके लिखनमें या प्रकाशनाके पत्रमें क्यान दिनमें श्री अय्यरका हाथ नहीं था। फिर श्री आपन घोषित किया कि सम्पादकका मौन मात्र उत्तर दायित्व मैं अपने ऊपर लेना हूँ। उन्होंने उन लेखक सेवकता पत्रा बनानेमें भी हयकार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उन्हें उन लेखकी पत्रमें प्रकाशित करनेके कारण जस जाना पड़ा।

उनके बाद कुछ दिनों तक परलि मु नत्सम्यप्पर इन पत्रका सम्पादन करने रहे। उन सम्पादकी राजनीतिक परिस्थितियोंमें यह पत्र अधिक समय तक नहीं चल गया।

“देश भक्तन” मे अल्प हीनेक बाद श्री कल्याण मुन्दर मुबद्दुष्यार (निर वि क) ने बबर्जलि नामक साप्ताहिक पत्र बनाया। कुछ समय तक बर्जलि नामक रा कृष्णमूर्ति इन पत्रके उप-सम्पादक थे।

गौरीजीके आन्दोलनके समय मद्रासमें स्वराज्य नामक दैनिक पत्र स्वर्गीय आन्ध-केसरी टी। प्रकाशम्के संचालनमें चला रहा था। स्वर्गीय प्रकाशम् उस पत्रका तमिल संस्करण निकालनका निरूपक किया। तमिल स्वराज्य दैनिक पत्रका सम्पादन पहले योगी पुंडानन्द धारणी करते थे। उनके बाद स्वर्गीय एम एस मुबद्दाम्प अम्बर उसके सम्पादन हुए। उल्कासीत राक्षसिक परिस्थितिमें स्वराज्यके दोनों संस्करण अत्यन्तकालीन रहे।

तमिल प्रदेशके डाक्टर पी. बरदरामुल्लु नामक एक प्रसिद्ध वैद्य-भक्त थे। आप एन। बसन्तके होम-बस आन्दोलनके समयमें ही प्रसिद्ध हो गए थे। आप "शासिकारण्य ठिलक" कहलाते थे। आपका तमिल नाम साप्ताहिक पत्र बड़ा लोक-प्रिय था। कुछ समय तक डाक्टर नामुडुन इस पत्रका दैनिक संस्करण मद्रास शहरमें निकाला।

राजाजीने विमोचनम् नामक मासिक पत्र चलाया था। राजाजीने ठिक्केगोडम् एक चौधी-आधम धी स्थापित किया था और वहीपर रचनात्मक कार्यक्रमका प्रबन्ध कर रखा था। उसी सिद्धिधाममें मद्यपान निषेध सम्बन्ध आन्दोलनके लिए यह मासिक पत्र निकाला गया। राजाजी इसके सम्पादनक और कस्कि इन्धमूर्ति सम्पादन काममें उनकी सहायता करते थे।

गौरीजीके आन्दोलनके समय प्रकाशित होनेवाले "सुतंतिरसंगु" (स्वतन्त्र-संघ) नामक पत्रका लोकोपर बहुत अधिक प्रभाव था। जाठ गुठोका यह दैनिक पत्र पीछे-पीछेमें विक्रम था। सरकारण कई बार इसको रोकता। कुछ समय तक यह पत्रक बाद यह संघ फिर मुबलित्ति हा उठता था। इसमें प्रकाशित करनेके लिए बापुर्ब हरिजन या नवजीवन के लक्षके प्रकृ पहले ही भ्रम दिया करते थे और वे लेख तमिलम् अनुरित होकर स्वतन्त्र संघ में प्रकाशित होते थे। कई मौकवान इस पत्रके संचालनमें बड़े उत्साहके साथ सहयोग देते थे। इन नवमुवर्कोंको सरकार बुर सताती थी। इस पत्रके कार्यालयमें एक मोहन-जालका प्रबन्ध था। पत्रका जो कार्यकर्ता सरकारकी सेवा पाकर जल जाता उसके परिवारके खान-पीनका प्रबन्ध उस मोहन-जालामें होता था। अपन अत्यन्तकालके जीवनमें हमन तमिल प्रदेशके लोकोको बहुत अधिक प्रभावित किया था।

मणिकर्कीड़ी नामक पाषाणिक पत्रका तमिल पत्र-साहित्यमें ऊँचा स्थान रहा। यद्यपि यह हीन कालीन नहीं रहा तो भी पानी साहित्यकार इसके सम्पादनक रहे। आन्ध्र बोधिनी प्रबन्ध विक्रम धारि कई वर्षोंमें साहित्यको सेवा करनेवाले पत्र हैं।

तमिल पत्रकारोंमें धी टी एम चोक्क डिगमका बड़ा आदर-पूर्व स्थान है। आप मणिकर्की के सम्पादनक हैं। इसके बाद गौरी नामक साप्ताहिक पत्रके सम्पादनक हैं। इसके बाद दिन गणि नामक प्रसिद्ध दैनिक पत्रके सम्पादनक



वने। कुछ समय बाद इस पत्रकी भी छोड़कर "दिनचरि" नामक दैनिक पत्र निकालन लक्ष्य पर यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला। इस समय तमिल भाषाके आठ दस दैनिक पत्र हैं इन सबमें "सुदेश मित्रिण" (स्वदेश-मित्र) और "दिन मणि" उच्च श्रेणीके हैं।

तमिल भाषाके कई साप्ताहिक पत्र हैं पर सबसे अधिक लोकप्रिय साप्ताहिक आनन्द विवटन कस्कि और वृमुदम हैं। आनन्द विवटन बहुत पुराना पत्र है। करीब पचास वर्ष पूर्व उसका आरम्भ हुआ था। पर करीब तीस वर्ष हुए, श्री एस एस नासमन उसका सारा भार अपने ऊपर किया। सबसे इस साप्ताहिक पत्रकी बहुत उन्नति हुई। उन्हें स्वर्गीय कस्कि कृष्णमूर्तिका सहाय्य मिला। इस पत्रहू वर्ष तक आनन्द विवटनका सम्पादन करणके बाद कस्कि कृष्णमूर्तिने भी टी। सराशिवनका सहयोग पाकर कस्कि नामक साप्ताहिक पत्र चला किया।

यहाँपर कस्कि नामकी कहानी बताना अप्रासंगिक होनेपर भी अनुचित नहीं मानी जाएगी। तमिल वर्षमासाके स्वरोमें 'क' बसात नहीं है। कृष्ण मूर्ति इस 'किरप्पमूर्ति' लिखा जाता है। 'रा' किरप्पमूर्ति बहुधा अपने सेव्योंमें अपना माय "रा कि" लिखा करते थे। आपकी पत्नीका नाम "कस्यामी" है। पत्नीके नामके प्रथमाक्षर कन् और अपने नामका प्रथमाक्षर कि जोड़कर वे अपने सेव्योंमें अपना कस्कि नाम लेन लग। यह नाम स्थाई हो गया और उनके नए पत्रका नाम भी बही हुआ।

कर्ममण्डल उत्तम श्रेणीका मासिक-पत्र है। इसके सम्पादक कि. वा. जगन्नाथन हैं। तमिल भाषाम लक्ष्य जनकों साप्ताहिक पत्रिक और मासिक पत्र निकल रहे हैं। इनका बनसाना अवश्य आवश्यक है कि भारत ही कोई भारतीय भाषा है जिसमें इतनी अधिक संख्यामें इतनी रघताके साथ पत्र प्रकाशित होने हों। विद्यप महत्त्वकी बात यह है कि हर पत्रके पाहकोंके संख्या भी बहुत अधिक है। तमिल पत्रोंके एक और विशेषता यह है कि वे मासिककारों को खूब प्रोत्साहित करते हैं। कर्ममण्डल पत्रकी ओरसे सर्वोत्तम उपयामकारकी प्रति वर्ष १० रुपयता पुरस्कार दिया जाता है। आनन्द विवटन ने अभी कुछ महीनों पहले उत्तम नाटककारी और पत्रकारोंमें करीब पचास हजार रुपए पुरस्कार अपने बाँटे थे। मद्रास-मद्रासपर पत्रकारोंमें लक्ष्मी-नबा उपनाम नाटक बाँटि के सर्वांगे चला करतीं हैं और अर्द्ध, एकनौवा पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

"वमपुर आर्षिणम" नामक दीव बडवा नृप पत्र मासिक "आन मन्मन्मम" तमिल और दीव धर्मकी उन्नतिके उद्देश्यन चलाया जाता है। करन्नी तमिल नयना तमिल बोधिल" मासिक और नरे नरै आदिमण्डल नामके प्रसिद्ध स्वामी वेदाचलवा मासिक पत्र "आन नामन्म" तमिल भाषाकी बड़ी सेवा कर रहे हैं।

कहानीकार तमिलमें जनक हैं। हर एककी अपनी अपनी विशेषता है। यह कहना कठिन है कि कौन सर्व-श्रेष्ठ कहानीकार है।

स्वर्गीय भी व वें में सु अम्बर ही आधुनिक बंगकी कहानियोंके सब प्रथम लेखक हैं। आपकी "कुलत्तवरी अरसमरम (तबड़ा सीरका पीपल) आदि कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। अन्य कहानीकारोंमें कु प राजवोपालम बी एच रामम्मा सोमु इरुल विम्बन जयधियियन की वा जयप्राशन त ना कुमार स्वामी ति क रा, वें एम कल्याण आरमुगम बुइ प्रिया आदि प्रमुख कहानीकार हैं। हास्य उदात्तक कहानियाँ लिखनमें कम्बिक मुकि नाडोवि आदि प्रसिद्ध हैं। एक एक उपामुठमकी उत्सार्थ-पूर्व कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। राजाजीन अपनी ऐरनेतिक कहानियाँसे तमिल-साहित्यको सेवा की है। अखिलनकी कहानियोंका हिन्दी उर् कन्नड़ तेलगु अँगरेज आदि भाषाओंमें अनुबाद हुआ है। 'पुदुमीपित्तन' नामक कहानी-कारण मोपारती नामक फ्रांसीसी कहानीकारकी शैलीपर कहानियाँ लिखी हैं।

तमिल भाषाका सर्व प्रथम उपन्यास वेदनायकम पिळ्ळैना प्रताप मूर्धलियार चरित्तरम है। इसके बाद बी राजम अम्बरम कमलाम्बाळ चरित्तरम और पी माइवम्मान पद्मावती चरित्तरम नामक उपन्यास लिखा। कडवुर पुरै स्वामी अम्बंगार आरजी कृष्णस्वामि मुक्कियार और कोदेनायकि अम्माळन जनक उपन्यास लिखे हैं। पर इन उपन्यासोंमें जीवन-तत्त्व-सम्बन्धी कोई बात नहीं है। इनको अँगरेजीके रीनास्ट्रुके उपन्यासोंकी अपवा हिन्दीके चन्द्रकान्ता मूतनाथ जैसे उपन्यासोंकी अपीके मान सकते हैं। अखिलन वें एम कल्याण लक्ष्मी आदि के उपन्यासोंमें जीवनका सजीव वर्णन है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखनकी परस्पष्ट तमिल साहित्यमें स्वर्गीय कल्पित्त जलामी। छिन्नकामियिन उपनम, पौमियिन अत्थन आदि इसी कोटिके उपन्यास हैं। बंगमा बराटी हिन्द आदि भाषाओंके उत्कृष्ट उपन्यासोंका अनुबाद तमिलमें हुआ है। ऐसे अनुबादकारोंमें का भी पी और तं ना कुमार स्वामि प्रमुख हैं। डाक्टर मु बरबराजनार और कु राजवेक नई शैलीके उपन्यासकार हैं।

## जीवन चरित्र

इस सर्हीमें तमिल भाषामें जीवन-चरित्र सम्बन्धी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डाक्टर महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अम्बरम सरस शैलीमें अपने गुरु मीनासिन्नुवरम् पिळ्ळैकी विस्तृत जीवनी लिखी है। डाक्टर मु बरबराजनारण महाराजा कीकी रवीन्द्रनाथ ठाकुर और बर्नार्ड टा आदिकी जीवनी लिखी है। अन्तुल एरोवने कई विदेशी विद्वानोंकी जीवनियाँ लिखी हैं। चिदम्बर रत्ननाथका "पुदुमी पित्तनकी जीवनी प्रसिद्ध है। अन्तुल नवा म पो पि हृत् अल्पकोट्टिअ तमिप्पुन तथा बीर पाण्डिय कट्ट बोम्बन और न सजीवी इत्त बरिहिरवर

बन। कुछ समय बाद इस पत्रको भी छोड़कर "दिनचरि" नामक दैनिक पत्र निकालने समय पर यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला। इस समय तमिल भाषाके आठ इस दैनिक पत्र हैं। इन सबमें "सुदेश मित्तरल" (स्वदेश-मित्र) और "दिन मणि" उच्च श्रेणीके हैं।

तमिल भाषाके कई साप्ताहिक पत्र हैं पर सबसे अधिक मोफरिय साप्ताहिक ज्ञानत्र विफ्टन कस्कि और कुमुबम हैं। ज्ञानत्र विफ्टन बहुत पुराना पत्र है। करीब पचास वर्ष पूर्व उसका आरम्भ हुआ था। पर करीब तीस वर्ष हुए, भी एस एस वासन्त उसका सारा भार अपने ऊपर लिया। तबसे इस साप्ताहिक पत्रकी बहुत उन्नति हुई। उन्हें स्वर्णीय कस्कि कृष्णमूर्तिना सहयोग मिला। इस कस्कि वर्ष तक ज्ञानत्र विफ्टनका सम्पादन करनेके बाद कस्कि कृष्णमूर्तिने भी टी। सराधिवनका सहयोग पाकर कस्कि नामक साप्ताहिक पत्र शुरू किया।

यहूँपर कस्कि नामकी कहानी बताना अप्रामाणिक होनेपर भी अनुचित नहीं मानी जाती। तमिल वर्णमालाके स्वरोंमें ख अक्षर नहीं है। कृष्ण मूर्ति सर "किष्णमूर्ति" लिखा जाता है। या किष्णमूर्ति बहुधा अपने केबोमें अपना नाम "रा कि" लिखा करते थे। आपकी पत्नीका नाम "कल्याणी" है। पत्नीके नामके प्रथमाक्षर कम् और अपने नामका प्रथमाक्षर कि जोड़कर वे अपने केबोमें अपना कस्कि नाम देने लग। यह नाम स्थाई हो गया और उनके नए पत्रका नाम भी बड़ी हुआ।

कलीमण्डल उत्तम श्रेणीका मासिक-पत्र है। इसके सम्पादक कि. वा. जयसाराज हैं। तमिल भाषामें अन्य जनकी साप्ताहिक पालिक और मासिक पत्र निकल रहे हैं। इतना बतलाना अवश्य आवश्यक है कि शाबर ही कोई भारतीय भाषा है जिसमें इतनी अधिक संख्यामें इतनी बखताके साथ पत्र प्रकाशित होते हों। विश्व महत्त्वकी बात यह है कि हर पत्रके पाठकोंकी संख्या भी बहुत अधिक है। तमिल पत्रोंके एक और विशेषता यह है कि वे साहित्यकारों को खूब प्रोत्साहित करते हैं। कलीमण्डल पत्रके अंदरले सर्वोत्तम उपन्यासकारको प्रति वर्ष १ रुपया पुरस्कार दिया जाता है। ज्ञानत्र विफ्टन ने अभी कुछ महीनों पहले उत्तम नाटककारों और एककी-कारोंमें करीब पचास हजार रुपए पुरस्कार रुपये बाँटे थे। समय-समयपर पत्रिकाओंमें लक्ष्मीका उपनाम नाटक आदि के स्पर्धाएँ चला करती हैं और अच्छे रक्त्योंका पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

"बर्मपुर आधीनम" नामक छेप मठका मुख पत्र मासिक "ज्ञान सम्बन्धम" तमिल और संघ अर्थकी उन्नतिके उद्देशसे चलाया जाता है। करीब तमिल संघका तमिल पोषिक" मासिक और मरे मरी अखिबत नामसे प्रसिद्ध स्वामी वेदाचलका मासिक पत्र "ज्ञान सागरम" तमिल भाषाकी बड़ी सेवा कर रहे हैं।

कहानीकार तमिलमें जनक हैं। हर एककी अपनी अपनी विषयता है।

यह कहना कठिन है कि कौन सर्व-श्रेष्ठ कहानीकार है।

स्वर्गीय श्री व. वें. मु. अय्यर ही आधुनिक इगरी कहानियोंके सभ प्रथम लेखक हैं। आपकी "कृष्णतर्पण मरणमरम" (तपसा तीरथ पीपल) आदि कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। अन्य कहानीकारोंमें कृ. प. राजगोपालन वं. एम. रामय्या सोमू, इरुल चिन्दन जगन्निपियन की वा. जयप्रभाकरन तं ना. कुमार स्वामी ति. व. रा., वं. एम. कल्याण आरमुपम गुह प्रिमा आदि प्रमुख कहानीकार हैं। हास्य-रसात्मक कहानियाँ लिखनमें कस्कि मूर्ति नाडोडि आदि प्रसिद्ध हैं। एक एक रामानुजमकी उत्सार्थ-पूर्व कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। रामायीन जपनी, राजनीतिक कहानियोंके तमिल-साहित्यकी सेवा की है। अखिलनकी कहानियोंका हिन्दी उर्दू कन्नड़ तेलगु बंजरी आदि भाषाओंमें अनुवाद हुआ है। 'पुत्रुनीपित्तल' नामक कहानी-कारन मोयासा नामक अंग्रेजी कहानीकारकी शैलीपर कहानियाँ लिखी हैं।

तमिल भाषाका सर्व प्रथम उपन्यास बरनामयम पिट्टैका प्रयाप मुचिन्धवार चरित्तरम है। इनके बाद वं. राजम अय्यरन कमलाम्बाल चरित्तरम और पी. माधवय्यान च्चम्पवती चरित्तरम नामक उपन्यास लिखा। च्चम्पूर चुरै स्वामी अम्बेपार, आरकी कृष्णस्वामि मुचिन्धवार और कोईनायक वम्मामन जनक उपन्यास लिखे हैं। पर इन उपन्यासोंमें जीवन-तत्त्व-सम्बन्धी कोई बात नहीं है। इनको बंजरीके रेणाम्बुसके उपन्यासोंकी जगहा हिन्दीके चन्द्रकान्ता जूननाथ जैसे उपन्यासोंकी जगहके मान सकते हैं। अखिलन वं. एम. कल्याण लक्ष्मी आदि के उपन्यासोंमें जीवनका सजीव चर्चन है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखनकी परम्परा तमिल साहित्यमें स्वर्गीय कन्किन चत्तारी। मिक्कामिपिन रापवम पीमिपिन दास्वन आदि इनो शैलिके उपन्यास हैं। बयला जयटी हिन्द आदि भाषाओंके उत्कृष्ट उपन्यासोंका अनुबाध तमिलमें हुआ है। एसे अनुबाधकारोंमें का थी. श्री और तं ना. कुमार स्वामि प्रमुख हैं। डाक्टर मु. चरवराजनार और कृ. राजवेन्दु नई शैलीके उपन्यासकार हैं।

### जीवन-चरित्र

इन सर्वोंमें तमिल भाषामें जीवन-चरित्र सम्बन्धी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डाक्टर महाशय्याय्याय स्वामिनाथ अम्मल मरम शैलीमें अपन मुह मंजाजिर्मुवर्म् पिन्नीकी चिस्तुत जीवनी लिखी है। डाक्टर मु. चरवराजनारन महारमा काथी रवीशनाथ ट्यरुट और चर्नाडि शा आदिकी जीवनी लिखी है। अशुक्त रक्षीमन कई विदेशी विज्ञानोंकी जीवनियाँ लिखी हैं। पिहम्बर च्चूनायका "पुत्रुनी पित्तलकी जीवनी प्रसिद्ध ईशानकन मत्ता म मो वि कृत कल्पलोष्टिय तमिपुन तथा और पाण्डिय च्चट्ट वीम्मन और न. संजीर्थ इन महारिचर

कई जीवनी प्रसिद्ध हैं। अनवरत विभायकम पिच्छै और सोमगुंदर वैशिकरत कई तमिल विद्वानोंकी जीवनियां लिखीं हैं।

आरम्भचरित सम्बन्धी भी कई पुस्तकें तमिलन लिखीं गई हैं। डाक्टर महा महोपाध्याय स्वामिनाथ भम्परका एन चरितं (मेरा चरित) नामकक राम विगम पिस्वीका एन कई (मेरी बच्चा) स्वर्गीय टी एम एल राजनका मिनीबु मर्लीयळ (स्मृति की कहरी) और तिल वि क का "बापकी बुद्धिपु-पुळ (बं बर्नक बटभारें) प्रसिद्ध हैं। अन्य भाषाभोक्त प्रमुख आरम्भ चरितोंका अनुवाद भी तमिलम हुआ है।

रेडियोत तमिल भाषाक कई सेवा कें हैं। समय समयपर रेडियोपर नाटक बजे जाते हैं। य नाटक रेडियोपर कथ्य-काव्य न रङ्गकर कथ्य मान हो जाते हैं। कई विद्वानोंके आलोचनात्मक भाषन हुआ करते हैं।

### नाटक-साहित्य

प्राचीन तमिल-साहित्यमें काव्यके तीन भेद माने गए हैं "इयल" इयौ" और "माङ्गम"। इनको मोटे तौरपर हम छन्द गीत और नाटक मान सकते हैं। प्राचीन तमिल साहित्यमें नाटक सम्बन्धी कई विस्तृत रचनाएँ पाई जाती हैं। आज केरलकी प्रसिद्ध "कवचद्विळ" का वर्णन प्राचीन तमिल साहित्यमें पाया जाता है। बक्षिणकी कप्रङ्ग ठेम्मु तमिल और मल्लनात्म चारों भाषाओंका मूल स्रोत एक ही है। इनमें तमिलको छोड़कर अन्य तमो भाषाओंमें संस्कृतको अधिक उधारदाके साथ अपनाया। मल्लनात्म और तमिल करिब एक हजार वर्ष पूर्व तक अभिन्न मार्ग जाते थे।

पल्लवकालके बाद महाराजाओंके चरितके आधारपर रचित कई काव्य-मय नाटक बजे गए। "राज राज विजयम एक एसा नाटक है जो संजीरके प्रसिद्ध मन्थिरम बन्ना बया। कुलोत्तुंबचोळ नाङ्गम" एक एसा ही और नाटक है। सन् १११९ ई म कमलाज मट्टरल पुम्बुलिमूर नाङ्गम" नामक नाटक रचा। अन्य अनक नाटकोंका उल्लेख पाया जाता है। पर वे नाटक उपलब्ध नहीं हैं। इनका निश्चित है कि उसके मीम्य नाटकोंकी रचनाएँ इसकी सभके पहले ही होने लगी थी।

प्राचीन कालमें नृत्य भी एक प्रकारका नाटक ही माना गया था। केरल प्रान्तीय कवचद्विळ सचमुच मूल नाटक है। महास सूरके अङ्गार नामक मोडुसेमी श्रीमती रविगंधी अङ्गदरुन कलमस्रन स्थापित किया है जहाँ नृत्य और सर्गिकी शिक्षा भी जाती है। नृत्यमें "कुट्टाळ कुरवन्नि" नामक विधाय प्रकार का नृत्य बड़ी सिखाया जाता है। इस कुट्टाळ कुरवन्नीकी रचना विकट राजय कविउदरने सचत्तों सभमें की थी। इसकी गिनती तमिलके नाटक साहित्यमें होती है। ऐसे ही

मोक्षिनाटक और मुक्कुडर फळ्ळु नामक नृत्य-विद्युप नाटक साहित्यम के अन्तर्गत है। इन नाटकोंमें सामान्य जनताका जीवन बड़ी बुरीके साथ चित्रित हुआ है।

मस्नापन कवियर इठ राम नाटक रामभंड कवियर इठ भारत बिलासम और सकुन्तला बिलासम तथा गोपालकृष्ण मारुटीयार इठ इयर्क नायनार" अठारवी सरीके प्रसिद्ध नाटक है। इन नाटकोंकी सभी रंग-रंगि काव्य रंगी है।

उत्तरीसरी सरीम करीब ५ नाटक रहे गए जिनमें सी छमे हुए हैं। इन नाटकोंके चार विभाग मान जा सकते हैं। १ काल्पनिक मदुरी और बिलासम "धारवस्मी शूरवस्मी नाटक" "नरकतगा नाटक" कातव रायन नाटक" पवळनकोडि नाटक" सावित्री नाटक" मीनार्थी नाटक 'बळ्ळी नाटक" आदि इस सभीके नाटक हैं। इन नाटकोंकी कथा-वस्तु कल्पित है। अन्तिम तीन नाटकोंमें स्त्रीकी महिमाका वर्णन हुआ है।

२ पौराणिक नाटक इस सभीके नाटक भी महाभारत बिलासम "हरिकेश बिलासम" "सकुन्तला बिलासम" लक्ष्मणमर्त्य नाटकम डीपरी वस्नापहरण" प्रस्ताद भरिज आदि हैं। तमिलके "पेरिम पुराणम तिरुविळ्ळैवाड पुराणम आदि पुराणके आधारपर भी नाटक रहे गए हैं।

३ ऐतिहासिक नाटक—ऐतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों या घटनाओं पर आधारित नाटक छोट बिलासम "वैसिंग राज नाटकम आदि हैं। श्री टी कम्मम पिल्लैका "रवि वर्मन" नामक नाटक भी इसी सभीका है।

४ सामाजिक नाटक इन नाटकोंमें समाजम प्रचलित बुरी प्रथाओं पर प्रकाश डालकर समाज सुधारकी आवश्यकता बताई गई है। काशी विश्वनाथ मुराळियार इठ नाटक ब्रह्म समाजके सिद्धान्तोंके प्रचार की दृष्टिसे रहे गए हैं। इनका रचा हुआ "अम्बाथारी बिलासम" नामक एक नाटक है जिसमें वेष्माजाके पाषाणमें पड़कर बरबाद होनेवाले धनिकोंका सुन्दर चित्रण हुआ है। यही सर्व प्रथम सामाजिक नाटक माना जाता है।

मैसिरी शास्त्रके प्रचारके साथ साथ तमिल लोगोंका ध्यान मैसिरी नाटकोंकी ओर गया। इनमें सक्कपियर के कई नाटकोंका तमिलमें अनुबाद हुआ। मालूम पड़ता है कि उस प्रसिद्ध नाटककारका सिम्बलीन नामक नाटक तमिल विद्वानोंकी बहुत पसन्द आया। जलज लोचन वेदित्तमारन इन नाटकका सर सारी" नामसे और कम्मम पिल्लैन सत्यवती नामसे अनुबाद किया है। एकर बाध स्वामीन भी इस नाटक का अनुबाद किया है।

आचार्य सुंदरम् पिल्लैन लार्ड मिट्टन इठ "गुप्त मार्ग" (The Secret way) नामक कथा पर आधारित मनोनमधीयम" नामक नाटक रचा। यह कल्पके उद्भवसे गहरी शिक्षा देता इसमें काव्यकी छायी बिलपठार्थ पाई जाती है।

तमिलमें कई संगठित नाटकोंका भी अनुवाद हुआ है। बं. के पूर्व-  
नाट्यमण्डल संस्था ने एम. कई नाटकोंका अनुवाद किया है। उन्हीना नाटक शास्त्रपर  
एक पुस्तक लिखी है। उनके कथावर्त और कलावर्त नामक दो स्वतंत्र  
नाटक भी हैं। इनमें रचनाओंकी भाषा स्वाभाविक और सरल नहीं है। उसमें कुछ  
कृत्रिमता है।

शंकर राम स्वामी उर्ध्वसूत्री सर्वोके प्रसिद्ध नाटककार थे। उन्होंने कई  
प्राचीन नाटकोंका सम्पादन किया। कई स्वतंत्र नाटक लिखे कई नाटक—  
मञ्चलिपियोंके मार्ग-दर्शक रहे और स्वयं नाटकोप भाग लिया करते थे।

पद्मनाभ सम्बन्ध मुहूर्तिमार तमिल भाषाके बहुत प्रसिद्ध नाटककार हैं।  
अभी हालमें सरकारण तथा तमिल भाषा-भाषी जनताने इस अस्सी वर्षसे अधिक  
आयुके नाटककार का अभिनन्दन किया था। पिछले पैंसठ वर्षोंसे आप नाटकोंकी  
रचनाएं कर रहे हैं। इन्हींकी प्रेरणासे सर. सी. पी. रामस्वामी अम्बर, बी. सी. गोपाळ  
रत्नम स्वर्णीय आर. के. पम्पुल्लम चेर्टी, स्वर्णीय सत्यमूर्ति जैसे सज्जन  
नाटककार और आहुष्ण हुए और नाटक कलात्मक दृष्टिकोण कलाकार हुए। इन्हींके  
प्रयत्नोसे महात्म नाटक-कला-समर्पक सुगुण विकास सभा नामक प्रसिद्ध संस्था  
स्थापित हुई।

आधुनिक तमिल नाटक-साहित्यकी चार अवस्थाएँ मानी गई हैं  
१ पश्चिमका अनुकरणकर यथालोक नाटक रचना २ उत्कृष्ट काव्यात्मक नाटक  
रचना (जैसे मनोरमनाथ नाटक) ३ नाटक शास्त्रपर आधारित नाटकोंकी  
रचना और ४ नाटक लिखनेके बाद स्वयं उनका अभिनय करने के जर्नमें नाटक  
रचना।

इस रचनात्मक आन्दोलनके समर्पणमें कई नाटक रचे गए। कर्त्तव्य  
वेदि (आरकी जीत) वैश्याय कोड़ी (राष्ट्रीय झंडा) बम्बई मैक आदि ऐसे  
नाटक हैं।

मुद्रर वसिष्ठके तिरुनेल्वेची जिसेमे अठारहवीं सदीमें कर्ट्ट बोम्मन नामक  
एक और वेद-मन्त्र हुआ जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनीका विरोध कर मृत्यु रणकी  
सजा पाई। उसके चरित्रपर आधारित "वीर पाण्डिय कर्ट्ट बोम्मन" नामक नाटक  
आज तक बड़ा लोकप्रिय बना हुआ है।

सामाजिक सुधारोंकी और ध्यान आहुष्ण करनेवाले कई नाटक रचे  
गए हैं।

एकाकी नाटकोंकी भी तमिल भाषामें बहुत अच्छी उन्नति हुई है। अभी  
पिछले तिष्ठम्बर (१९११ ई.) में महासके प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र आनन्द विजय न  
नाटक साहित्यपर २५० रुपएका पुरस्कार वितरण किया। नाटकपर ४, १२,  
५० और ५० ) तथा २५० ) के तीन पुरस्कार और एकाकी नाटकपर ४

२५०० व १५०० और व १०० के तन पुरस्कार बिये गए। प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रोंमें कई प्रदर्शनियां होती हैं और हर प्रदर्शनीमें नाटकका कार्यक्रम अवश्य रहता है।

## कविताएँ

महाकाव्य और अष्टकाव्यके समान तमिल काव्यके वेदङ्गाप्पियम और सिद्ध काप्पियम नामक दो भेद माने गए हैं। वेदङ्गाप्पियममें धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंका प्रतिपादन रहता है। ईसा बन्धता नश्यता-मर्त्यता या जादके विषयका परिचय इन तीनमेंसे एकके साथ काव्यका आरम्भ होता है। इसमें पहाड़ समुद्र देस और नगरका वर्णन रहता है। इसका नायक उत्तम श्रेणीका होता है और उसके महान् कार्योंका काव्यमें विस्तृत वर्णन रहता है। पिलप्पधिकारम कम्ब रामायण आदि वेदङ्गाप्पियम हैं।

अपर्युक्त चार पुरुषार्थोंमें जहाँ एक या अधिकका जोष हो वह शिक्काप्पियम है।

शिक्काप्पियम अनेक प्रकारके हैं। जैसे वाट्टुप्पई कलम्बकम उसा परणि पिळ्ळै तमिल पळ्ळुप्पाट्टु और कुरवन्निज।

वाट्टुप्पई काव्यका विषय यह रहता है कि संकटमें पड़ दानीसे दान प्राप्त करनेवाला कैसे बर्षाकाधीको समझाता है कि कहीं कैसे जाकर किससे क्या पाया और उसको भी कैसे हँस दान प्राप्त करनेका मार्ग दिखाता है।

कलम्बकम शब्दसे भिलावटका बोध जाता है। इसमें अनेक प्रकारके छन्दोंमें अनेक प्रकारके विषयोंका प्रतिपादन होता है।

उसा नामक काव्यमें यह बताया जाता है कि विद्वता धन पीक्ष्य प्रेम दान आदि गुणोंसे युक्त नायकके टहलन निकलन पर कैसे अनेक मुबतियाँ उससे प्रेम करने लगती हैं।

परणि नामक काव्य करीब करीब हिन्दीके रासोके समान है। कहा गया है कि मुञ्जवने एक हजार हाथियोंको मारकर विजय पानवासे बीरका मठ गान वाला शबु-काव्य परणि है।

पिळ्ळै तमिप में सिन्नुओंका वर्णन रहता है। इसमें नायकके बचपनका वर्णन रहता है। इस काव्यको "पिळ्ळै पाट्टु" या "पिळ्ळै कवि" भी कहते हैं। प्रसिद्ध वैष्णव भक्त-कवि वेरियास्वारकी रचनाओंमें धिमु कीलाका बहुत सुन्दर वर्णन पाया जाता है। कही नहीं तो श्री कृष्णके बचपनके वर्णनमें मूरदासके और वेरि यास्वारके पर एक बुरेके भाषास्वरसे प्रतीत होते हैं।

पळ्ळुप्पाट्टु किसान-गीत है। इसमें किसान और उसकी दो पत्नियोंके बीचमें पैदा होनेवाले संघर्षोंका वर्णन रहता है।



उत्तर भारतके जनजातों के समान इतिहास तमिल प्रदेशका सुरजन होता है। "सुरजति" नाम्य में "सुरजित" (जनजाति) व विद्योपिनी (विवाहके पूर्व सायनका सुमगान सुनकर उर्मिको प्रति ब्रह्मानका निश्चय करने उमक विद्योगमें सुरी रहनवासी) की हपयी देखकर उमे आरबामन रचना बनन रहता है।

साधुनिक नाम्य धारामे यद्यपि ऊपर बगिन कलियाका अभावमा पाया गया है तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि य दीर्घिया एकरम उड पर है। कहा जा सकता है कि कम्बके बाद तमिल भाषामे कोई मन्त्रात्म्य रचा नहीं गया। पर कवियोंकी कोई कर्मा नहीं रही। उन लोकोका वर्तनीय विषय या तो ईश्वर या कोई राजा महापरा होता था। अधिनतर कवियोंका उद्गम अनाजन था। बीसवीं सदीके पूर्वके इन कवियोंकी परम्पराओंके आधारपर दो श्रियाँ भी प्राचीन परम्पराके अनुसारी और वर्तन मार्गके अनुसारी।

अठारहवीं सदीके तायुमान स्वामी धिबजाल मुनिवर, कन्धिगप्पर आदि प्राचीन परम्पराके कवि व। तायुमान केवल अपना उदार नहीं जीव मात्रका उदार चाहते व। ईश्वरसे उनकी प्रार्थना थी कि ईश्वर सर्व जीवोंको भेरे ही जाय उस मानकर उन सब पर दया करे। भयवानकी पूजा करन फूल तोड़न जाते है तो उन्हें मामूम पड़ता है कि ईश्वर की ही बनाई जोसकें बुँदसे अलहूठ सुनकर पुण्य की ईश्वरका बनाया जीव ही है और फूल तोड़ बिना ही वापस चले जाते है। जब वे अपना ही फूल रचते है —

मेञ्जमें कोइल, निर्नके मुपवम अग्ने।

अञ्जन नीर पूजे कोइल्लु वाराय वरावरमे॥

"हे ईश्वर, मत ही मरिह है चेतना ही मुपव है, प्रभ ही पवित्र जल है पूजा प्रहम करन आओ।"

उसीसर्व सर्वके मीनासि लुंदरम पिळ्ळै, रामलिय अडिगळ, आदि भी प्राचीन परम्पराके कवि है।

यद्यपि बीसवीं सदीके कविताका एक नया है। बुद्धिकोय देखनमें आता है तो भी प्राचीन परम्परा अचरर चली ही जाती है। रामनाथपुरमके स्वर्गीय रा रावव अय्यवार ऐसे ही एक कवि है। उनकी "पारिकथा" "शाकुन्तलम" आदि प्रसिद्ध रचनाएँ है। उनका अन्वर्णितकम पद्यात्मक अनुवाद किया था।

बी. पी. सुब्रह्म्य मुदलिनार, सोमसुन्दर भाठो आदि इस सदीके प्राचीन परम्पराके कवि है।

प्राचीन परम्पराके कवियोंका उद्गम अपना पाश्चित्य प्ररधन मात्र था। उनकी कविताओंका रसास्वादन पढ़नीत्य कोव ही कर सकते व। जब से पारचात्य कोनोंका सम्पर्क बढ़ा तबसे कोनोंका ध्यान सामान्य जनताके और जान गया।

जनताकी भाषामें जनताके ही विषयको लेकर रचनाएँ होन लगी। इसीका परिणाम यह हुआ कि पद्य, कुरुचि आदि साहित्यकी रचना होन लगी। यह परम्परा सत्रहवीं शताब्दी तक चली। अठारहवीं शताब्दीके बेरनामकम पिस्वी इस परम्पराके प्रमुख कवि हैं। आधुनिक शैलीके सर्व प्रथम उपन्यास प्रताप मुदलियार 'चरितराम' की रचना आपन हैं की हैं। वे इसी हैं। उनके विचारोंपर अन्य उल्लेख कवियोंका प्रभाव पड़ा था।

कविसे नाम पिडिप्यु बप माले ।  
 पनकासिल कियुबो कम्मकोसे ॥  
 मेप्यापतितम पडिप्यु बर्म नूले ।  
 मैकुम मैकुम नम्मकु बुम्माकविल ॥१॥  
 ओर पेन वेण्णम एमु कौळबोम सप्पियातम ।  
 उरिल उळ्ळ वेण्णम मोवेस्साम नेसम ॥  
 पण्णप्पति इस्साव पोडुपवासम ।  
 पडित्ताल ओर पाने पण्णकुकु नासम ॥२॥  
 उळ्ळसित्त बज्जुक्के एसाळ्ळुम ककुबोम ।  
 उळ्ळसे बज्जु व नैरिल अडिक्कडि विपुबोम ॥  
 कम्मत्ततम माणक्कविविमुम अपुबोम ।  
 कादुक्कु नापेयम के कट्टि तोडुबोम ॥३॥

[ हाथमें तो हम बप-नाका ग्रहण करते हैं पर बगलमें रखते हैं सत्रह जनताके बीजार । यद्यपि धर्मग्रन्थोंको पढ़ते हैं फिर भी हमारी कुमार्गी प्रवृत्ति दिन प्रति दिन बढ़ती ही जाती है ॥१॥

एक स्त्री पसन्द नहीं आई तो सन्यास ग्रहण कर लिया पर प्यार करने का मर मरकी स्थितिसे। जब भूख नहीं लगती तब तो उपवास कर लेते हैं और जब भूख लगती है तब खूब खा लेते हैं ॥२॥

मनका मील कभी दूर नहीं करते पर मनका मील दूर करनेके लिए बार-बार पानीमें डुबकियां लगाते हैं। बिनाहक सामन तो फूट फूटकर रोते हैं पर एक-एक पादिकि लिय गए बैठेके सामन ही हाथ जोड़कर मुसामी करते हैं ॥३॥ ]

इस बीसवीं शताब्दीके चार महान् कवि मुञ्जहास्यम भारती भारतीयका कवि मणि वेदिक विनायकम् पिस्वी और नामककल रामलियम पिस्वी हैं। इनमें भारत की चर्चा अत्यन्त ही सूक्ष्म है। नामककल रामलियम पिस्वीकी चर्चा इस पुस्तकमें आन होनी। इनके अतिरिक्त भारतीकास अन्तिकारी कवि हैं। इनकी एक उल्लेख रचना है "पुराणिक कवि जिसका अर्थ है "अन्तिकारी कवि"। इस रचनाके आधारेपर इनका नाम ही अन्तिकारी कवि पड़ गया। इनकी रचनाएँ हैं— "संजीवि क समिक रा—२

पर्यवसित सारल" (सत्रीय पर्यवसिता साधु) सुतगतिरम (स्वतन्त्रता) सहोदरत्व आदि साम्यवादी कविताएँ और "एदिरपारा मुत्तम" (अप्रत्यास्थि बुम्बन) इरम्बुवीट्टु (श्री मर) कुटुम्ब किट्टुवु (कुटुम्बवा दीपक) अपगिन शिरिणु (श्रीपर्यवका ह्यस्य) तमिपन्निथिन कति (तमिल-सत्रीकी तत्तवार) आदि खण्ड काव्य।

कुचुम्बुय्य भारतीयों के प्रेरणापर इन्होंने "एवेगु काभिनुम धक्तिवडा" (विधर देवा उधर धक्ति है रे) नामक कविता रची—उन्हींसे इनका भारतीय-वास नाम पड़ा।

कविमयि वैदिक विनायकम पिस्तीका तमिल काव्य-जनममें महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाओंसे उनके सरल एवं कोमल हृदयका परिचय प्राप्त होता है। उनकी कई प्रकारकी रचनाएँ हैं। पर उनके बाल गीत अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं। वे नीचे बड़े सरल मधुर और कोमल होते हैं।

बाह्येषु बन्धोर्त्तं तन्नीर अस्मिन्मासल  
 माहूर्त्तगळ मोरि निद्रुळ अयवामो ? अरमामो ?  
 धाविदिट्ट कुट्ट मिद्रु अस्मिन्निमिल कावलि इद्रु  
 वेर्त्त इवत्तुम कोदलै नीर सिरेचालै पावळ्ळामो ?

[प्यासकी पानी तो नहीं है पर बेबीका पटन करता रहे, यह क्या शोषार्थी बात है ? क्या यहाँ धर्म है ? चामी बनाकर टाला बनकर दे और पहरेदार नियुक्त करे और जो बेबीके बात-सबल मग्गिरको कापमार बना है क्या यह ठीक है ?]

इनकी एक और रचना "आभिय ज्योति" (Light of Asia) है। यह अँग्रेजी काव्यके आधारपर रची गई है। इन्होंने उमर कव्यामके (अँग्रेजी अनुबाध) काव्यका अनुबाध किया है।

वेय्यिर किद्रु निपुत्तु  
 बोधुम तैयर काद्रु वुद्रु।  
 कीयिर कम्मल कवि पुण्ड  
 कल्लम निरेय मद्रुमुण्डु।  
 ईवात्तम पा उण्डु  
 तैरिणु पाडा नी पुण्ड।  
 वीयम तनि सिम्बल सिधि  
 बाल् म स्वर्त्तम वेळ्ळो ?

[भूपके अनुकूल छाया है मलय-माधुका बहाव है हाथमें कम्मल (प्रसिद्ध तमिल कवि) का काव्य है कल्लम मर मद्रु है मद्रर राय मुक्त हैबी पीत है और सम्भ कर मानवाली तू है इन सबसे बड़े संसारमें क्या कोई स्वयं है ?]

कविमयिकी कविताएँ सनीत मय हैं।

इस सदीके कुछ अन्य कवियोंका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है।

**कम्बदासन** इनकी कविताओंमें अतिपुक्त भाव परा हुआ है। हरिश्चन्द्र नाम चट्टोपाध्याय और कवि मणि वैशिक दिनायकम पिस्सैने इस कविकी बड़ी प्रशंसा की है। इनकी सौकी भाण्डीदासकी अनुवर्तिनी है।

**शानिदासन** य भी भाण्डीदासकी सेनापर लिखने वाले कवि है। तमिपण्णि कोट्टिमुत्तै तोडुवानम एण्णोविमम आदि इनकी रचनायें हैं।

**अपारासन** भी भाण्डीदासकी परम्पराके कवि है। आकर्षक शब्द-सञ्चय और उत्साहपूर्ण कल्पनाएँ इनकी कविताओंकी निम्नपताएँ हैं।

योमी सुब्रह्मण्य भाण्डीका स्थान आधुनिक तमिल कवियोंमें ठीका है। आप सन् १९२६-१९२७ में "स्वराज्य" नामक तमिल दैनिक पत्रके सम्पादक ब। इनपर भी रमन श्रुपि और योमी अरविन्दका बड़ा प्रभाव पड़ा है। इनके मञ्जूर गीत बड़ लोकप्रिय हैं।

सिनेमाकी उन्नतिके साथ उसके योग्य गीतोंकी रचना बहुत कमों। कई उत्कृष्ट कवियोंके द्वारा उत्तम गीत रचै गए जो अर्थ-गुण्डि और पद-आकृतिके कारण लोकप्रिय बत। ऐसे कवियोंमें पाप नाथम विवम उडुमलै नारायण कवि कम्बदास आदि प्रमुख हैं।

तमिल साहित्यकी उन्नतिको ही अपना उच्च बनाकर चम्पनवासी अनेक संस्थाएँ हैं। प्राचीन कालका 'तमिल संघ' प्रसिद्ध ही है। प्रथम और द्वितीय संघके समुहमें बिलीन हो जानेपर तृतीय संघकी स्थापना मद्रुत नगरमें हुई। पाण्ड्य राजाओंके पतनके बाद इस संघका भी अस्तित्व नहीं रहा। जर्मिसबी सुवीके उत्तरार्द्धमें पाण्डित्युरै ठेवरने मद्रुत नगरमें तमिल संघकी स्थापना की। तमिल भाषाकी यह एही ही संस्था है वैसे ही हिन्दीकी नागरी-सञ्चारिणी सभा अथवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन है। इस संघकी ओरसे तमिल भाषाकी परीक्षाएँ भी जाती हैं। इस संघका मुखपत्र "सुन्दामिय" (ठठ तमिल या सुठ तमिल) है। इस पत्रका तमिल साहित्य क्षेत्रमें बड़ा आदरपूर्ण स्थान है।

संजाऊर त्रिलेके धर्मपुरम आधीनम" "तिरुवाडुतुरै आधीनम" "तिरुप्पलैन्दाक काधीवासी मडम" और अन्य कई प्राचीन संघ और वैय्यन धर्म प्रचारक मठोंकी भाषा सम्बन्धी सेवाएँ बड़ी महत्वपूर्ण हैं। राजा महाराजा और जमीनदारोंके न रह जानेपर सरकारन साहित्यकारोंको प्रोत्साहित करनेका भार अपने ऊपर लिया है। पर साहित्यकारोंको इन प्राचीन मठोंका प्रोत्साहन अब भी निरुत्था है।

मद्रासके करैवड बड़ श्री मीळ वयिणकी और "विदम्बरम" नामक प्रसिद्ध संघ हैं। यही मगवान शिबबी "नटराज" के रूपमें विराजमान है। प्रसिद्ध गन्द

पार करनेके बाद सफल हुए। इस मगरमें श्री अण्णामसै चिट्टियार नामक छत्र वैश्य  
 शास्त्रके प्रसिद्ध दानीग आने ही प्रयत्नसे "अण्णामसै चिट्ट विद्यालय" की स्थापना  
 की। यह चिट्टविद्यालय तमिल भाषाकी उन्नतिके लिए प्रयत्नशील है।

मद्रास राज्यसे जब आन्ध्र और केरल राज्य मलग हुए तबसे यह तमिल  
 भाषा-भाषी राज्य बन गया। अब राज्यकी औरसे सासन सम्बन्धी कार्य और  
 कालेजोकी उच्च पढ़ाईके माध्यम तमिल भाषाकी ही बनावत प्रबन्ध किया जा  
 रहा है। यदि सभी राज्योंके सारे कार्य अपनी ही भाषाके माध्यमसे चलन लग  
 तो हिन्दीकी राज्य-भाषा बनानेके लिए विघ्न परिश्रम करनेकी आवश्यकता  
 नहीं रहेगी। जबतक राज्योंमें अंग्रेजीका महत्त्व रहेगा तभीतक केन्द्रकी भाषा भी  
 अंग्रेजी रहेगी। तमिल प्रदेशमें ही हिन्दीका विरोध कुछ अधिक सबल है। इसका  
 कारण यह है कि वहाँ अन्य राज्योंकी अपेक्षा अंग्रेजी भाषाका प्रचार अधिक है।  
 यदि राज्यके अन्दर तमिल भाषाको उसके योग्य मौरवका स्थान प्राप्त हो जाय तो  
 अंग्रेजीका मोह आप ही छूट जायगा और हिन्दीकी उपयोगिता मालूम हो जाएगी।  
 हर्षकी बात है कि तमिलको राज्य भाषा बनानेका प्रयत्न मद्रास राज्यमें शुरू हो  
 गया है। अब तमिलका मविष्य राष्ट्र तथा राष्ट्रभाषाकी उन्नति सुनिश्चित है।

• • •

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

[कवि-परिचय]



## नामधकल रामलिंगम पिल्लै

• • •

तमिल भाषाके राजकलके कवियोंमें भी रामलिंगम पिल्लैका स्थान बहुत ऊँचा है। मराठ राज्य सरकारने उन्हें राज-कवि नियुक्त किया था। इस महान् कविका परिषद स्वर्गीय कस्कि न एक बार यों दिया था "भी राम लिंगम पिल्लै उत्तम कवि है, सच्चे देशभक्त है। देशके लिए उन्होंने महान् त्याग किया और कायबाधकी सजा मगती। आपका चरित्र अति उम्बल है। आप मित्रोंके प्रेम-भाव है और छल प्रपञ्चसे अपरिचित है। आप धन या कीर्तिके लोभी नहीं है और आदम्बरसे भ्रूषा करते है।"

इस कविकारका जीवन-चरित बहुत ही रोचक है। काव्यकाममें तो इस कविकरन बहुत ही अच्छा नाम पाया है किन्तु काममें भी य सिद्ध हस्त है। इनके कल्पक कथा हैं अकापूर्व है।

इनके पिताका नाम वैङ्कटराम पिल्लै था। वे दक्षिण भाकटि नामके जिले के निवासी थे। केवल छीसठि खेमी तककी शिक्षा पाकर बड़ी कठिनाईसे अपना जीवन-यापन करते थे। जब जिलेमें अकाल पड़ा तो उन्हें अपना सब छोड़कर सेलम नगर चला जाना पड़ा। वहाँ उन्हें सिपाईका काम मिला। कुछ ही दिनोंमें हेड कास्टबल बन गए। कुछ समय तक बुकिम इनस्पेक्टरका काम भी किया था।

ईसवी सन् १८८६ के अक्टूबर की १९ तारीख को कविकरका जन्म हुआ। कहा जाता है कि रामेश्वरम् स्थित भगवान चंकरकी प्रतापीके कनकचरण



भाषका 'उपनिषद्' नामकरण हुआ। नामकरण कविवरके निवास स्वामिका नाम है। आप "नामकरण कवि" नामसे ही प्रसिद्ध हैं। "पिस्ती" चाँहि सूचक शब्द है।

कविवरकीं माताएँ अपने पुत्रका बड़े प्रेमसे साथ पालन किया और बच्चीं जादते सिखाईं। अपने साथ पुत्रको मस्जिदमें ले जाती और उससे बहूमाठी बी 'हे मजबन्! [हमें उद्बुद्धि दो हमारी रक्षा करो।" प्रतिदिन कमसे कम तीन बार उससे कहलातीं बी "मै झूठ नहीं बोर्नुना दुष्ट नहीं बर्नुना।" मातासे प्राप्त इस शिक्षाके सुसंस्कारका प्रभाव कविपर पड़ना स्वाभाविक ही था। इस शिक्षाको कवि आज तक नहीं भूले। नामीं जीने तय और अहिंसा नामक दो महान् तत्त्वोंकी भूमिका अपड माताएँ कविवरके बचपनमें ही ठीमार कर ई बी।

### मध्य विद्यासका उम्भसन

द्विज समय कविवरका बच हुआ रीज घरमें—विद्यप रूपसे उचित प्रवेद्यमें—अज्ञानका अन्धकार व्याप्त था। भूत प्रत पिशाच आदिपर लोपाका विद्यास था। उन भूत आदिको धुंध करणके लिए न जान कितनी बकरियाँ भैंसें मूँदियाँ और अन्य जीवोंकी बलि चढ़ाई बात थी। कविकीं माँ इन बातोंका अन्धन करतीं थीं। एक गाँवमें बैकटराम पिस्तीके निवास स्वामके पास बना बांगक था जिसमें महुएके पेड़ अधिक था। एसा माता बाता था कि उस वनमें एक बहुत बड़ महुएके पेड़पर पिशाचका निवास था। उसको प्रसन्न रखनके लिए बार-बार बलिदान-पुस्त पूजाएँ हुआ करते थीं। कविकीं माँ अम्मकीं अम्माके बहूगठे पूजाका बहू कर बन कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पिशाचन पहले एक मजबूती पर आक्रमण किया। बहू मुवतीं इतनी डर-पई कि उसे तेज बुझार जा गया। कुछ दिनोंके बाद बहुत बर्तीसे पूजापाठका प्रबन्ध हुआ तब बही बहू स्वस्थ हुई। इससे लोगोंका फिर पिशाचपर विस्वास बढ़न गया। कुछ दिन बाद पिशाचन अम्मकीं अम्मापर ही आक्रमण किया। अम्मकीं अम्माके हाथमें एक लोहेका झूठ था—उसने पिशाचके सिरपर जोरसे मारा। पिशाच कितनी तड़ह झूटकर भाग गया। मुकिस बईं तत्परतासे बोजन लर्नी लो एक चोरोके बकका पना गया पर पिशाचके आकारका कोई अन्ति नहीं मिला। समय भय कुछ दिन बाद अम्मकीं अम्मा पड़ोसके पाँवकीं हाटमें गईं बी बही पिशाचके आकारका एक व्यक्ति लर्नुँ दिखाई पड़ा। बहू अपने सिरपरका बाज छिपानका बहुत प्रयत्नकर रहा था। बहू बात उम्होंन अपने पतिसे कही। बहू आदमी पकड़ा गया। मालूम हुआ कि-स्थानीय ओझाकी प्रेरणासे बही लोर्नीकी उद्योग करणा था जिससे लोम पिशाचको प्रसन्न करनके लिए पूजा बलि आदिका बचपर प्रबन्ध करते रहे।

## सङ्कल्पम

दक्षिण भारतका विद्यपति—बालाजी-शिव बड़ा प्रसिद्ध हैं। तमिल प्रदेशके प्राम- सभी परिवारोंमें इस जन्मके प्रति बड़ी मजा रहती है।

तमिल और केरल प्रदेशोंमें सौरमान वर्ष चल्ता है। जब सूर्य कन्या राशिमें रहता है तब यह मास तमिलमें पुर्णमासी कहलाता है। यह करीब-करीब भाद्रपद-भाद्रिपत्तनके महीनोंमें पड़ता है। इस महीनेके प्रत्येक घनिवारके दिन तिरुपति के मयवानकी विद्यप पूजा होती है। पूजाका एक ऋम यह है कि प्रति घनिवारकी परके बालक बर बर काकर मिला आंगते हैं। उस मासके अन्तिम घनिवारके दिन मित्रामें प्राप्त सामग्रीसे बाह्यम-मोज बनवा जाता है।

तमिल प्रदेशमें दीव और बैण्णव म बा छायाएँ हैं। दीव लोग माघपर विभूति लगाते हैं। बैण्णव सोम तिलक (मिसमें दो खड़ी सडर लकीरोंके बीचमें एक साल लकीर रहती है) लगाते हैं। यह तिलक "नामम" कहलाता है। प्रति घनिवारकी मित्राके लिए तिरुमनेवासे दीव बाळक भी "नामम" धारण करते हैं।

जब कवि रामलिंगम पिस्सी पोव छह वर्षके बालक बतब वे भी उस मासके घनिवारके दिनमें मित्रा मीपने "नामम" धारण करके जाया करते थे। एक घनिवारके दिन उनका पिता किसीसे कुछ बातें कर रहे थे बालक रामलिंगम मित्राटनके बाह्य अपन बर जाया। पिताको देखकर उसके मनमें आया कि कुछ तमाया दिखाया जाय। यह आइने खड़ा होकर "वोपाल मोकिन्द" का नाय कमाने-लगा। (उस नारेसे बृहस्पतिजी तमम कर्त हैं कि मामुकी मित्राटी नहीं किसी मूले बरका ही व्यक्ति मित्राके लिए जाया है।) दो तीन बार बाळकन आबाम ही तो पिताग कहा "बाबो बटा! बरमें सब काममें लगे हैं।" उन्हें पता नहीं था कि अपने ही पुत्रको बटा करके लम्बीवन कर रहे थे। इसी बीचमें रामलिंगमकी बहुत एक पात्रमें बाळक किम भा-पहुँची। अपने भाईको देखकर यह भी बाळकमें पड़ गई। उसन पिताका ध्यान उस ओर बाळकविन किया। अपने पुत्रके मजाकसे वे बहुत प्रसन्न हुए। वे स्वयं दीव म—पुत्रको लेकर बरके अन्दर गए। अपनी पलासे कहा "नामम धारण करनेकी श्रातो तुम्हारे बरके हैं। यह बया है रामलिंगमके माघपर भी तुमग नामम तथा दिया।" पलनन जबाब दिया "मैं क्यों लपान लर्मा। यह तो खूब जापके पुत्रको कपामाग है।" यह सुनकर बैकटराम पिस्सीन अपने पुत्रके माघका यह तिलक मित्राकर उसके स्वातपर भस्म तथा ही। पर बाळक रामलिंगम इस पर बहुत रोस तथा। अगमें पिस्सीजीन बाळकको बही तिलक तथा मेजकी अनुमति थी।

## प्राथमिक-शिक्षा

— कविकी शिक्षाका आरम्भ नामकक नामक नगरकी एक प्राथमिक पाठशालामें हुआ। बचपनसे ही उनका चित्तकासे बड़ा ब्रम था। प्राथमिक बर्षोंमें एक बार अध्यापक गणित सिखा रहे थे। कविकर बचपनमें कन्धे थे। उस

विषयमें उनकी अभिरुचि नहीं थी। इसलिए वे अध्यापक की पढ़ाई पर ध्यान न देकर अपनी पढ़ती पर किसी नाटक कम्पनीके विज्ञापनकी नकल कर रहे थे। कुछ दिनों बाद जब अध्यापक छात्रोंकी पट्टियाँ जाँचन कर उस रामलिंगमन लिखित संकीर्णके साथ अपनी चित्र वाली पढ़ती दिखाई। जब अध्यापकने जोर का तमाशा लगाया तभी उसको अपनी भूलका बोझ हुआ। यद्यपि पढ़ाईपर ध्यान न देनेके कारण अध्यापकन अपने छात्रको दण्ड दिया तो भी छात्रको चित्र बनानकी बुझभूझसे वे प्रसन्न भी हुए। वे अपने छात्रको चित्र बनानके लिए प्रोत्साहन देने लगे।

सर्वप्रथम चित्र बनानकी कविकी यह भारत बहुत दिनों तक नहीं रही। जब आप हार्डिस्करने पढ़ते थे उस स्कुलके प्रधानाध्यापक ही यन्त्रित पढ़ाते थे। गणितकी जोर सदा ही रामलिंगमकी अभिरुचि बहुत कम रही। एक बार अध्यापक बोर्डपर यन्त्रित लमसा रहे थे और इधर रामलिंगम अपनी कापीमें अध्यापकका व्यंग्य चित्र बना रहे थे। अध्यापकका ध्यान उस ओर गया तो वे बहुत रष्ट हुए। उन्होंने रामलिंगम को फड़ी सजा दी। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिए कवि की यह प्रवृत्ति दब-सी गयी। पर कालेजमें सम्मिलित होनेके बाद यह प्रवृत्ति फिर जागृत हुई। एक बार प्रिंसिपलने छात्रोंको एक लेख लिखनकी कहा। रामलिंगम अपने लेखको पीछे ही धुप करके चित्र बन न लग गया। अन्य सभी छात्र लेख लिखनमें ही व्यय हुए थे। इन ओर जब प्रिंसिपलका ध्यान गया तो रामलिंगमके लेख और चित्र दोनोंसे वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रामलिंगमको चित्रकला सम्बन्धी पुस्तक पुरस्कारके रूपमें दी।

### कालाप्रेमका बुल्लरिचाम

इस चित्र सम्बन्धी भारतका एक सर्वप्रकार परिणाम भी निकला। कविकी वेङ्कटरत्न नामक एक छात्री था। उसके पिताका देहान्त हो गया था इसलिए वह कोयम्बतूरमें अपने मामाके यहाँ रहता था। कविकरकी पढ़ाई भी कोयम्बतूरमें ही हुई। दोनों एक ही विद्यालयमें पढ़ते थे दोनोंमें बनी मित्रता ही पई। दोनों एक दूसरेके घर आया आया करते थे। कविकर तो अपने मित्रके यहाँ प्रति दिन बसते रह जाते थे। वेङ्कटरत्नकी मनेरी बहुत सीठा नामकी लड़की बार बार कविकरसे विद्या करती थी। तमिल प्रदेशकी लड़कियोंको कमीनपर जाटसे चित्र बनानका बड़ा शौक है। इसके लिए बिसय जबसरोपर जावलाका बाटा है। लिया बाटा है पर प्रति-दिनके उपबोधमें चुनेकी बुझनी काम आती है। कविकरका चित्रकलासे विषय प्रसन्न था। इसलिए सीठा कविकरसे अनेक चित्र बनानेका अध्यास करने लगी। इस कारणसे उन दोनोंमें बनिष्ठता बढ़ गई। एक दिन कविकर बसती मजिलपर बैठ अपने मित्रकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह लड़की ऊपर गई और रामलिंगमको अकेला देखकर चुपकेसे इनकी दोनों बाँधे लहने अपने हाथोंसे डीक दी। इनमें संघर्षसे उन लड़कीकी माँ भी बहाँ जा पड़ी। अपनी लड़कीकी यह करतूत उसे बहुत बुरी लगी। उसने अपना

शाप गुम्हा इतिहासपर उठाप और उनकी सारी पुस्तकें उठाकर बाहर फेंक दी और उन्हें घरमें आगसे जला कर दिया। बेंगल बरतने बहुत समझाया। पर उस बेबीका कोय साध नहीं हुआ।

उस बटनाके बाद रामस्वियमको सीतास मिलनेका कोई अवसर नहीं मिला। करीब पन्द्रह साल बीते। रामस्वियम प्रसिद्ध बरिब बन गए। एक दिन त्रिचिनापस्ति प्रबन्धनपर वे किसी माड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक उन्हें किसीन "राम स्वियम मामा" कहकर पुकारा। (तमिल प्रदेशमें अपरिचित बड़ोंको "मामा" कहकर पुकारनेकी रीति है।) रामस्वियम पहचान नहीं सके कि पुकारन वाली विधवा कौन है। विधवा ने अपना परिचय दिया कि बही सीता है। उसके हो बन्धे थे। उसके अनुरोधपर करि उसके घर गए, और दो बिन वहाँ रहकर अपन घर लौटे।

**आजीबिकाका प्रश्न**

सन् १९०७ ई में कविर मेट्रिक परीक्षामें उत्तीर्ण हुए और १९०८-१९०९ में त्रिचिनापस्ति शहरके एस पी जी कालेजमें एक ए की पढ़ाई पूरी की। सन् १९०९ में उनके कानमें बरें होन गया। चिकित्साके लिए वे मद्रास गए। इस चिकित्सामें उनके कानका रस तो बुर हुआ पर सुननेकी शक्ति लीन ही गई। इस कारणसे उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अब रामस्वियम लीजवान हो गए थे और घरपर बकार बैठ रहना उनके लिए उचित नहीं था। उनके पिताकी बड़ी इच्छा थी कि उन्हें पुस्तक विभागमें नौकरी मिले। इसके लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। पर रामस्वियमको वह काम पसन्द नहीं आया। वे चुपचाप घर छोड़कर चल गए। बड़ी कठिनाईके साथ उनके पितामह उनका पता लगाया। घर आनेके बाद पित के अनुरोधमें उन्होंने स्वामीय छापीलधारके कार्यालयमें बुनास्थाके परपर काम करना शुरू किया। पर स्वतंत्र प्रभुतिके इन नवप्रबुधके लिए सरकारी कार्यालयका बन्धनमय जीवन सहा नहीं हुआ। कुछ ही दिनोंमें उन्होंने वह काम भी छोड़ दिया। कुछ दिनों तक वे स्वामीय प्राथमिक पाठशाळाके अध्यापक बन रहे, पर वहाँ भी उनका मन प्रसन्न नहीं रहा।

बचिब चित्र बनानका अभ्यास जारी रखा। उसमें उन्होंने अच्छी उन्नति की। जब वे सरकारी कार्यालयमें काम करते थे तब भी अपना काम बीच पुरा करके कल साबिसीके ध्यय चित्र बनाया करते थे। उनके मूलपूर्व एक अध्यापक जब अपनी सेवाबिसि अवकास प्राप्तकर अलग लख तब उनके प्रार्थन छानेन उनका सम्मान करनेका निरन्धन किया। उनका चित्र बनानका काम कविररकी मीया गया। उन्होंने चित्र बनाया और उनका बनाया हुआ वह चित्र स्थानीय म्युनिसिपल मण्डपमें लक्ष्या बना।

एक बार एक अज्ञेय मजिदारी उस मण्डपमें वह चित्र देखकर बहुत प्रभावित हुआ। चित्रकारका पता लगाकर उनने उसे अपन वास बुलाया और उनसे एक चित्र

कमानेका अनुरोध किया। उस अधिकांशका एक बच्चा था जिसका करीब चार महीन पूर्व देहान्त हो गया था। उस मृत बच्चेका एक छोटा भा। अधिकांशकी हल्का भी कि कबिलर उस फोटोके आधारपर एक चित्र बनाये जिसमें वह बच्चा सर्वत्र-ता दिखाई पड़े। उन्होंने पचास रुपयेका पारिधायिक देनेका वादा किया। कबिलरन चित्र बनाया। चित्रको देखकर अधिकांश बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी बेटी खोल कर उसमें मित्रन रुपय व के सब सम्पत्तिगमको दे दिया।

इस घटनाके बाद कबिलरन चित्रकलाकी ही अपनी आर्थिकिकाका साधन बनाया।

### उत्तर भारतीय यात्रा

श्री पा के माचिकक नामकर नामक उच्च सरकारी पराधिकारी कबिलरके मित्र थे। सन् १९११ ई में पंचम जार्ज महाराजके राज्याभिषेक महोत्सव दिल्लीमें मनाया गया था। अपने मित्र माचिकक बायकरकी प्रेरणापर कबिलरन प्रार्थनमें अपने चित्र बना और स्वयं भी उस चित्रके साथ बरगारमें गए। कबिलरके चित्रोंमें एक चित्र था जिसमें यह दिखाया गया था कि बाघघाट पंचम जार्ज बम्बीर मुद्राम बैठ हुए थे और उनके तिरपर माछ-माछा मुकुट रख रही थी। वह चित्र बहुत उत्तम माना गया। स्वयं बाघमाहल उसकी बड़ी तारीफ की थी। इसपर कबिलरको पुरस्कार तो मिला ही। साथ साथ उनकी कीर्ति भी हुई और फलतः उनके चित्रोंकी मांग बहुत बढ़ी।

दिल्लीके समारोहके बाद श्री पिल्लीजीने अपने मित्रके साथ उत्तर-भारत भरका भ्रमण किया। सीमा प्रान्तमें फठानके ज्ञान उन्हें कुछ कष्ट भी उठाना पड़ा। अहाँ प्रभाव गया काचि त्तनोंमें जाकर उन्होंने विविधत पूजा काचि कार्य किए।

### गीत-रचना

तमिक प्रदेशमें सदा ही नाटकको प्रोत्साहन मिलता गया है। नगरोंमें रङ्ग-मञ्चपर बने जागवाने नाटक हो ही हैं। अतएव धार्मिक भी बड़ी तीव्रताके बाद नाटक बना करते हैं। यह बात करीब करीब राठभर हुआ करता है। यह अन्तर पैदानमें बना जाता है। केवल पाथोका रूपमें रहता है, पर न रङ्ग-मञ्च रहता है और न परदा। मूल एक नाटक देखा जिसमें धीम और अराधनकी लड़ाई थी। कभी धीम अराधनका पीछा करता करता करीब ही ही मज जान मज जाता और सारा बसक-बसक उसके-साथ-साथ जान झड़ता। उधनी दूर जानके बाद बन अराधन कुछ प्रकट होता तब वह धीमका पीछा करने लगता और बसक बसक फिर उसके साथ-साथ चलते। यथा स्वान पञ्चनपर फिर नाटककी कथा जान पड़ती।

सीपानकबिलर दिल्ली घास-सम्बत नाटकके बड़े प्रती थे। तमिक प्रदेशमें अनेक कुछ नाटक अविद्यता ही गए हैं। उनमें किट्टिया नामक एक अविद्यता बहुत

ही प्रसिद्ध हुआ। वह उच्च मान अपनी कल्प आयुमें ही नाटक लिखन मया। उनका कल्प अत्यन्त मधुर था और उनके संगीतकी सब शोभ प्रशंसा करते थे। वह अपने मातृ-मण्डलक माय नामकक (कवि रामकियम पिम्पे तिम मयके निबानी य) का पदुषा। उनके नाटकके लिए उपयुक्त गीत भी पिम्पेजी रचा करते थे और किट्टप्पा उन्हें गाया करता था। खरकी वात है कि कविबरक इन संगीतका सकल्पन नहीं हुआ। कविबरका ध्यान नाटक रचनाकी ओर नहीं गया।

## विवाह

श्री पिम्पे अब तिरुचिरापल्ली मयमें बालेड्ड क इण्डर्नरिडिट वममें पढ़ने थे तब उनका विवाह हुआ। उनके पिताकी बहुत विनमि बई इच्छा थी कि अपने पुत्रका विवाह शीघ्र सम्पन्न कर में। उन्होंने अपने पुत्रके योग्य एक कन्या भी देख रखी थी। पर कवि विवाह करना नहीं चाहत था। एक बार इस बातपर वे घर भी छोड़कर चम गए। पर अन्तमें उन्हें विवश होकर अपने पिताका बात माननी पड़ी और उनी कन्यास उनका विवाह हुआ। विवाहक कुछ समय तक अपनी पत्नीक प्रति कविका कत्ता बर्ताव था। पर उन साध्वीकी महानर्मनान उनपर इतना प्रभाव डाला कि कवि अपने स्वयंपनप पड़नासे लग और अपने पत्नीसे प्रसक्त व्यवहार करना लग।

विवाहके कई वर्ष बाद तक उनके कोई संतान नहीं हुई। शीघ्रमें उन्हें बहुत लजभाया कि वे दूसरा विवाह कर में। स्वयं उनके पत्नी उनमें इस आशयकी प्रार्थना की। उस समय कविकी सारी विवाह योग्य हो गई कविके पत्नीका आग्रह था कि वे उस सुवर्तिनि विवाह कर में। कवि इस बातके लिए तैयार नहीं हुए। ईदेष्या प्रवक्त है। कुछ समय बाद अचानक कविकी पत्नीका बेहान्त हो गया। इस घटनासे कवि बहुत व्याकुल हुए। शोक डरत लग कि नहीं इस बातका कविके मनपर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

कुछ समय बाद कविका मन स्वल्प हुआ। उन्होंने पत्नीकी इच्छा पूर्ण करनेका निश्चय किया। अपनी सारीस उन्होंने विवाह कर लिया। पहली पत्नीका नाम "मुत्तम्मा" था और दूसरीका "श्रीमरम" पर अपनी पहली पत्नीकी स्मृतिमें उन्होंने दूसरीका "मुत्तु श्रीमरम्" नामकरण किया। कविके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। बड़ी पुत्रिका नाम मुत्तु रखा।

## राजनैतिक क्षेत्रमें

सन् १९०९-१० में श्री पिम्पेजी राजनीतिकी ओर आकृष्ट हुए। शेष-संगण शेष धरकी विमुख्य कर दिया था। श्री पिम्पेजी भी इस घटनासे प्रभावित हुए। तिनका महाराज साखणयय आधिके पक्ष बन गए। सन् १९१९-२० में वे श्रीमती एनी वणकके आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेन लग। अपने एक बनी निवके महोदये

उन्होंने विविधापत्नीयों में एक राजनीतिक सम्मेलन करवाया जिसमें श्रीमती बसन्तका प्रभावोत्पादक भाषण हुआ। उस सम्मेलनमें एक प्रदर्शनीका भी प्रबन्ध किया गया था। उसमें कविवरक चित्र प्रदर्शित हुए। इन चित्रोंकी बड़ी प्रशंसा हुई। स्वयं श्रीमती बसन्त कुछ चित्र खरीद लिए।

### गान्धी-भक्ति

काशी विश्वविद्यालयके प्रारम्भिक समारोहके अनन्तरपर गान्धीजीने राजा महापद्मजीके किमूलकजीका सम्मन करते हुए एक भाषण किया था। इसका प्रभाव कवि भी उपलब्धमान पर पड़ा। समका बड़ा विस्वास हो गया कि यह स्वयं बसन्त ही भारतका उद्धार कर सकता है। सबसे आप गान्धीजीके भक्त बन गए। गान्धीजीके विचारोंका प्रचार करने लगे। अत्यायुक्त गान्धीजनमें आपने एक बर्षका कारावास भी सोपा है।

### राजकवि

स्वतन्त्रताके पूर्व हमारे देशमें अनेक छठी वर्गोधार, राजा और महापद्मजी की कलाकारोंका आदर करते थे। इन राजा-महापद्मजीका समर्पण समीप साहित्य आदि कलाओंकी उपलब्धि साधन बना हुआ था। पर स्वतन्त्रताके बाद इन राजा महापद्मजीका अस्तित्व ही अब नहीं रह गया तब सरकारने ही कला और कलाकारों को प्रोत्साहन देनेका भार अपने ऊपर ले लिया। महापद्मजी सरकारने राज-कवि नियुक्त करनेका निश्चय किया। उन दिनों महापद्मजीके अत्यन्त ठमिक सेतुबु कपड़ और मत्स्यकर्म भाषा-भाषी बंधन थे। सरकारने चारों भाषाओंके राज-कवि नियुक्त किए। श्री उपलब्धमान पिल्लै ठमिक भाषाके राज-कवि नियुक्त किए गए।

इस समय कविजी महापद्मजी लेजिस्लेटिव कौंसिलके सदस्य हैं।

### राज्याजीकी सम्मति

कवि उपलब्धमान पिल्लैजी कविताओंकी विषयता यह है कि वे अत्यन्त सरल और साध साध जलजिक प्रभावोत्पादक हैं। इनकी कविताओंको सुनकर 'ममक सत्पापह' के दिनोंमें राज्याजीन कहा था "मूक बड़ी चिन्ता थी कि इस समय कवि भाष्यी नहीं रहे। पर वह कमी आपन (कवि पिल्लैने) दूर कर दी।"

### भारतीयकी सम्मति

श्री पिल्लै एक बार कवि मुबद्दाम्य भारतीयसे मिलने गए। उन दिनों श्री पिल्लैजी कौटि बड़ी नहीं थी। भारतीयन कहा कि वे कौटि वीर युवायें। श्री पिल्लैने एक छत्र मुनाया। यह बातकीय संज्जपर नामके लिए रखा गया था। इसने श्री राज्याजीके मनवापके समझका वर्णन था। छत्रका पहला चरण यह है

तम्बरसें पिरर आझा बिदु बिदु

ताम बर्बाय के कदित गिय बैरम।

[अर्थात् 'अपना राज्य अर्थोकी बे कर स्वयं तम होकर रहनेकी घोषा।']

यह पहला चरण सुनते हैं भारती बोल उठ "क्या कहा 'अपना राज्य अर्थोकी बेकर स्वयं तम होकर रहनेकी घोषा' बाह! बाह! हमारे बेसर्क अयकी स्वितिका कितना सुन्दर चित्रण है। तुम निस्संदेह प्रतिमा शासी हो। तुम्हारी कविताएँ अक्षय्य काष्ठप्रिय बनेयी।

### कविका व्यक्तित्व

श्री रामानुजम पिस्से अत्यन्त तम स्वभावके हैं। अर्हभाव तो उनमें नाम मात्रके लिए भी नहीं है। उनकी दृष्टिमें सब मनुष्य समान हैं। न कोई किसीसे बड़ा है न कोई छोटा। इस समभावका बीजारोपण उनके बचपनमें ही हुआ था। कविधरकी माता बैरम परिवारकी थी और पिता शैव परिवारके थे। इस कारणसे कविके मनमें दोनोंई समताका भाव जागृत हुआ।

### मुस्लिम परिवारसे भेद

कवि तिस समय तीन बार सासके बच्चे व तक उनकी माता सकिन् इन्विकटर (दारोपा) के घर आया करते थी। दारोपा मुस्लिम व और उनकी पत्नीसे कविकीं मां बार-बार मिठा करते थी। तब अपने बच्चेको भी साथ ले आया करते थी। उस मुस्लिम महिलाका उस बच्चेसे बड़ा प्रेम हो गया। वह उसको बपन ही मही खिलाया-पिलाया और सुलाया करती थी। यही तक कि जब वह बच्चा बढाछ वर्षका बीसबान बन गया तब भी बिना किसी रोक-टोकके उस परिवारमें आया करता था—तो मानो उस परिवारका ही अंग बन गया। आजकल भी दक्षिण भारतके मुस्लिम परिवारमें यही प्रचलित है। उन दिनों तो कड़ाईसे पर्दा प्रथाका पालन होता था। इस अनुभवका ही परिणाम है कि कविको सर्व वर्ग समानत्वका सिद्धांश प्राप्त हुआ।

कविका "एन कन्नी" (मेरी कथा) नामक आरम-चरित्र उनकी एक उत्कृष्ट रचना है। इनकी गद्य रचनाएँ भी कम नहीं हैं। "मल्लिकार्जुन (पहाड़ी डाकू) और "अन्नुशय्य अर्पुदम" (प्रमकी नटमाठ) इनके उपन्यास हैं। "अन्नुम अन्नुम यह (पुष्प) और यह (रत्न) नामक कविता की कथा वस्तु आकर्षक है। इनकी "तिरुवट्टुरळ पुडु रै" नामक तिरुवट्टुरळकी टीका अत्यन्त धीरु प्रिय है। "तमिपन इवम" (तमिल-बाकेका हृदय) "सगोळि (धंख ध्वनि) "कवितार्जलि" गार्धि अंजल" तमिप ठेन" (तमिल-मधु) आदि कविताएँ अम्युल्यम अर्थोकी हैं।



इनकी बचिनामी स्वभावतः ही रागात्मक है। इसी कारण जगता इनको भाषासमीसे अपनार्थी है। सर्गात्मके कारण नाहित्यिक महत्त्वका—सर्व पुष्टिका कोई लोप नहीं होता।

तमिषम एतरोक इतमुच्यु

तन्निम अबकीं द मुचमुच्यु ।

अमिप्रम अबमुई बधिपामुम

मन्ने अबमुई मोविषायुम ॥

“तमिल बाला नामक एक समूह है—उमका एक विविष्ट गुण है। उचका मान अमृतमम है। प्रम ही उचर्ष बार्थी है।

उममे उत्साह पीदा करनेकी अपार क्षमिता है —

तमिषनेम घोस्तडा

तले तिमिर्दु निस्तडा

[कहो मैं तमिलियन हूँ। अपना सिर डेखा किए बाड़ रही।”]

इसमें मन्नेहू नहीं कि बचिर्षी कृत्तियोल तमिल प्रदेशक लोकाको—विद्यप्यप्यसे छाषीको—बहुत प्रभावित किया है।

कविके मनोभावको समझनेके लिये उनका एक पद्य महीं उद्युत करना अनुचित नहीं होगा।

इसमें बौध्दीकी विषयम कवि सबसे कहता है—

कुर्त्तदित ओव पुरतिल कुत्तयेम्पुम

कोडारि ओव पुरती पिम्पनक्केरुम ।

रत्तम वरत्तजियाल रत्त मुष्याकि

नाल पुरमुम वलर उदैत्तु तन्निम तिट्ट ॥

अत्तनीपुम नाड बोवत्ते अहिसे कात्तुम

अर्नवैपुम अदैप्योल तडक्कळ्ळोक्किल ।

ओत्तु मुहम मत्तर्नुददित्तक किट्टिपिपोडुम

उमिर पुरन्नाल अडुवे एल उयर्न्ये मायी ॥

[एक ओर तो मुझपर माना जोड़ पहुँचाता रहे, दूसरी ओर मेरे दरिद्रको कुत्ताकी लोकर्थ रहे चारों ओरसे गाँवियाँ सुगाते हुए लोप इतनी जाट मारें और काठीका एसा प्रयोग करें कि मेरे घटीरसे जून निकल पड़े। इन सबको सहकर मैं हँसता हुआ अहिष्णका पाञ्च कक और सबको एसे ही करनेका उपदेश देकर मुख प्रसन्न रहूँ। बीठोंपर हँसी काढें और मृत्युको प्राप्त करें—मैं मेरी सबसे बड़ी इच्छा है।]

# नामवक्त्र रामलिंगम पिल्लै

[काव्य-सङ्घम]

## १ सूरियन परुववु याराले ?

सूरियन परुववु याराले ?  
 चम्बिरन तिरिववुम याराले ?  
 कारियळ बानिस मिन्मिनि पोल  
 कण्णिर पडुवना भव एसा ?  
 पेरिडि मिन्नस एबानाले ?  
 परु मय पेयववु एवराले ?  
 यारिवकॅस्साम अबिकारी ?  
 अब नाम एण्णिड बेण्णायो ? ॥१॥

तण्णिर विपुम्बुम बिरे विधी  
 तरैयिस मुळत्तिवुम पुस एडु ?  
 मण्णिस वोट्टु विर्व योम्ह  
 मरम्बेडि यावु याराले ?  
 कण्णिस तेरिया शिशुर्ब एस्साम  
 कडबिस बळपेण्णु पार बेसे ?  
 एण्णि पात्तल इवकॅस्साम  
 एदो मोरु बिर्न इरुक्कुमरु ? ॥२॥

एस्तने मिदगम ! एस्तने मीन !  
 एस्तने ऊवमा परप्पना पार !  
 एस्तने पुच्चिगळ पुपु बगीयळ !  
 एण्ण्यत्तोल्म्या चेडि कोडिगळ !  
 एस्तने निरगळ उरुबंगळ !  
 एस्सा बट्टेमुम एण्णुगाल  
 अस्तनयुम तर मोरु कर्त्तन  
 पारो एण्णो इरुक्कु मेय ॥३॥

## १ सूर्य आता किससे है ?

सूर्य किससे (प्रेरित होकर) आता है? चन्द्र किससे आता है? और अन्धकार पूर्ण आकाशमें जुगुनू जैसे दिवाई पड़नेवाले क्या हैं? भयंकर विजलीका जमकना और गरजना किसके कारण होते हैं? सर्पा किसके कारण होती है? इन सबका मूल कर्ता कौन है? क्या इस बातपर हमें सोचना नहीं है? ॥१॥

ज्यों ही पानी पड़ता है त्यों ही जमीनसे बिना बीजके भी वास उगम लगती है—यह किसके कारण होता है? मिट्टीमें जो एक बीज बोएँ तो वह पेड़ या पौधेके रूपमें किसके कारण परिणत होता है? दृष्टिगोचर न होनेवाले दिग्बुद्धोंका गर्भमें पावन करनेवाला कौन है? अगर सोचो तो क्या यह नहीं विदित होता कि इन सबका एक मूल कारण है? ॥२॥

कितन जामवर हैं! कितनी मछलियाँ हैं? कितन रंगनेवाले जीव और कितन उड़नेवाले जीव हैं? कितन कीड़-मकोड़े हैं? असंख्य पेड़-पौधे और सत्ताएँ हैं। कितने रंग और कितने रूप हैं? इन सब पर विचार करो तो विदित हो जाएगा कि इन सबका जन्मदाता एक कर्ता अवश्य कोई होगा ॥३॥

अस्ता बेम्बार शिला पेरगळ  
 भरन भरि एम्बार शिला पेरगळ  
 घत्तान अवन परा मण्डसतिल  
 बापुम् तम्ब एम्बारयळ !  
 दोस्सास विळगा, 'निर्बाणम्'  
 एम्बम शिला पेर दोस्बारगळ  
 एस्तामिप्यडि पल पेशुम  
 एदो भोद पोळ्ळ इदधिकराबे ॥१४॥

अम्बप्पोळ्ळै नाम निनैसे ।  
 अनबदम अम्बायकुसाविडुबोम  
 एम्बप्पडियाय एवर अवन  
 एप्पडि लौपुदास नमक्कोप्पा ?  
 निम्बे पिररै पेशामस  
 निनबिलुम केडुवस शोम्पामल  
 बन्निप्पोम अर्बे बर्णमिडुबोम  
 बायबोम सुपमाय बाय्न्बिडुबोम ॥१५॥

कुछ लोग उसको 'भस्त्रा' कहते हैं कुछ लोग हर या हरि कहते हैं। कुछ लोग उसको परम भण्डल बासी समर्थ पिता कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह अकमनीय निर्वाण है। अनेक लोग इन रीतियोंसे जिसका वर्णन करते हैं वह कोई तो अवश्य ही है ॥४॥

उस परम तत्त्वका स्मरण कर हम सब प्रेम-पूर्वक रहें। कोई उसे चाहे जैसे माने—हमें इसका क्या मतलब? बिना पर-निन्दा किए, मनसे भी अन्योकी बुराई किए बिना हम उसकी वन्दना करें और सुख-पूर्वक रहें ॥५॥

---

## २ तामिपारिन पेरुमै

तमिया उन्निकनु तरुणम धापुत्तु  
 इरणिक्केस्ताम वयि काट्टा ।  
 ममुबाम एन मोयि , अर मे एन वयि  
 अन्ने उयर निरै ' एण दोस्तुम् ॥१॥

अवमुम वणमुम शमणमुम बौद्धमुम  
 तपत्तु शेयित्तु तमिय नाट्टिरु ।  
 वैयग मुयुवुम वरुगिडुम गुणगळै  
 बाप्पुववर उप्पुड मुन्नोर्गळ ॥२॥

एगो पिरम्बवर बुहर पेदुमैये  
 एत्तिप्पणिन्दवर तमिय नाट्टार ।  
 इमे अगे एण कुरवुगळै  
 एम्पुम पिरित्तिरु तमिय नाट्टार ॥३॥

एशु तमिपारलर एण कारणत्ताल  
 इयप्पु बिडुवदिल्लै तमिय नाट्टार ।  
 पेशुम तमिपुळु किरुत्तुर्ब पोडु म  
 पेदुमैमुडैय वरुगळ पत्ता वेरुगळ ॥४॥

महमबु पिरम्बु म्पुोव बेशम अवर  
 महिमै किल्लैमुमिम्ब तमिय नाट्टिरु ।  
 अहमगियम्बु विनम मागूर आप्पुवन्नै  
 आरार तोवुगिरार अरियायो ? ॥५॥

## २. तमिल भाषा-भाषीकी महिमा

हे तमिल भाई ! 'अमृत मरी भाषा है धर्म मरा मार्ग है और प्रेम मेरा जीवन लक्ष्य है' कहकर सार ससारको मार्ग दिवानेका तुम्हें यह अवसर मिला है ॥१॥

दीव और बैष्णव धमण (जन) और बौद्ध धर्म तमिल प्रदेशमें पमये । तुम्हारे पूर्वज उन उत्तम गुणोंसे युक्त जीवन बिताते थे जिनका साथ संसार कष्ट करता है ॥२॥

जो बुद्ध न जाने कहीं पैदा हुए उनको आदरके साथ तमिल प्रदेशमें माना । तमिल धर्मबालोंन कभी यहाँ-वहाँका अन्तर नहीं माना ॥३॥

ईसा मसीह तमिल प्रदेशके मही इस कारणसे तमिल लोगान उनकी उषेक्षा नहीं की । तमिल भाषा भाषियोंमें ईसाको माननवाले अनेक हैं ॥४॥

मुहम्मद साहबका जन्म ता किसी अन्य देशमें हुआ उनकी बड़ाई होती है तमिल प्रदेशमें । क्या तुम नहीं जानत कि नागूरके भगवानकी प्रकृष्ट मन होकर प्रतिदिन कौन आराधना करत हैं ?\* ॥५॥

—————।

\* तमिल प्रदेशके तमिल जिल्लेमें नागूर नामक नगरमें एक मछलिक है जहाँ हिन्दू और कुछ ईसाई लोग भी बड़ी भडाके साथ आया करते हैं ।



उसगिन मद्र मेसाम ओम्बोद कालतिस  
 ओडि पुगुन्बदिन्द तमिय नाट्टिस ।  
 कसहम शिरुमुमिन्नि कट्टि यणत्तवट्टे  
 कात्तु बळत्तवगळ तमिय नाट्टार ॥१॥

तन्नुयिर नोप्पिनुम विरर कोल्ले अञ्जिञ्जुम  
 बहमम वळत्तपगळ तमिय नाट्टार ।  
 मन्नुयिर यावयुम तन्नुयिर एण्डिल  
 मण्डि किडप्पुत्तु तमिय मोपिये ॥७॥

कोस्ला विरवमे मस्सार बपिये-द  
 कूरि नडम्ब कुयम कुसामुन्नोर ।  
 एस्ला विरत्तिसुम एबवम मबित्तिडुम  
 एट्ट मुडपुत्तु इस्सरा माम ॥८॥

उसमम मुपुबडुम कसहम उड्डु पार  
 उन पेवम कडमैगळ पल उण्डु ।  
 बिलगुम पडि शोपुम बेरि कोण्ड पेण्बेस्साम  
 बिलक्क बियित्तेपुवाम् तमिया ॥९॥

इम्बिय साय ममम मोन्नु किडवकैयिल  
 इन मुरे पेशुगिग्यार ! इविवागुम ।  
 अम्बपेरियबळिन अडिमै बिलगारत्तुम  
 अम्ब मिलै निरत्तकिरुमत्तम ॥१०॥

तमियगम बायग मल तमिय मोपि बळम्बेम्मे  
 तांगिडुम इम्बियसाय तबमपसिक्क  
 कुमिपुम नुरेपुमेन्नक्कडि मनिबरेसाम  
 कोञ्जिञ्जुत्तु बिडुवोम कुबसयत्तिस ॥११॥

संसारके सब धर्म समय समयपर आकर तमिल प्रवेशमें समा गए। तमिल भाषा भाषियोंने किसी प्रकारके झगड़ेके बिना उन्हें गले लगाकर अपनाया ॥६॥

तमिल वेशवालोंने ऐसे धर्मका पालन किया जिसमें अपनी पान चाह वे बेनी पड़े पर पर-हत्यासे दूर रहना पड़ता था। तुम्हारी तमिल भाषा ही है जिसमें यह उपदेश बार-बार मिलता है कि तुम्हारे ही प्राणके समान सभी जीवोंके प्राण है ॥७॥

तुम्हारे पूर्वज मानते थे कि न मारनेका घत ही सज्जनोंके योग्य है। तुम्हारा गृहस्थ धर्म ऐसा है कि सब भोग सब तरहसे उसकी प्रशंसा करते हैं ॥८॥

धुनिया भरमें झगड़ा फसाव बढ़ रहा है। तुम्हारे महान् कर्तव्य कई हैं। हे तमिल भाई! लोगोंको अलग-अलग करनेवाली (लोगोंमें फूट डालनेवाली) उत्तेजक बातोंको रोकनेका प्रयत्न करो ॥९॥

भारतमाताका मन तो दुखी है और हम जाति-भेदकी बातें करें—यह तो बुरा है। उस आदर्शीय माताकी वासताकी बेड़ियोंको काटकर संसार भरमें प्रेम भाव स्थापित करो ॥१०॥

तमिल प्रवेशकी जय हो। तमिल भाषाकी बृद्धि हो। हमें धारण करनेवाली भारतमाताका तप सफल हो। बुद्धबुद्ध और फनके समान इस संसारके सभी मनुष्य हिल मिलकर रहें ॥११॥

कोस्तार्मै पोय्यामै इरब्बुम दोर्म्  
 कूट्टु रवे मेय भात गुणमाम एग  
 नस्तर्म्मै अरम बळर्त्त तमिय नाडोरे  
 नानिलत्तिल अमैदि मिक्क नाडाम एन्म ।  
 वस्तार्म्मै नमक्कुवरा बायम्बु शेग  
 वळ्ळुवमे मणबडियुम यश्चान् एत्त ।  
 चोस्तार्म्मै पुगायबोण्या करुर्न् जोति  
 मुहन एंगळ गादि महान नामम बायगा ॥४॥

अणु गुब्बु बिहैगळुम अणुया बोण्या  
 अप्पासुक्कप्पात्ताम अरिबाय निकुम ।  
 इप्पयट्टु वेरुंगडने एस्ताम वस्ता  
 इरैवनेये मूक्काग इपुत्तु पेशि ।  
 तुण कोब्बु अवनळ्ळे तोडर्म् गादि  
 तूयवने इम्बियत्ताय जोति यायुम ।  
 अण कब्बु मद वैरियै अडक्क तेक्क  
 अवन बियिये मक्कळुक्कु अमैदल वेण्डुम ॥५॥

वास्त बयि उलयामेत्ताम पोट्टु वेण्डुम  
 सत्तियत्त अरियर्न्पिस एट्टु वेण्डुम ।  
 माम्बळ्ळुक्कुळ पोरबेरिगळ मरैय वेण्डुम  
 मक्कळिडम अम्बरंगळ निरैय वेण्डुम ।  
 पोन्नुपत्तुम एयै एत्ताम मुगिक्क वेण्डुम  
 कुडुर्गळे अरपाटच्चि बगिक्क वेण्डुम ।  
 गादि महान तिय नामम बाया वेण्डुम  
 कडबुळ्ळेय पेक्कवर्न् काक्क वेण्डुम ॥६॥

इस ससारमें तमिल देश ही बहु शान्ति पूर्ण प्रदेश है जो इस तरहपर आधारित धर्मका पालन करता आया कि न मारना और असत्य न बोलना नामक दो गुणोंका संयोग ही सत्य ज्ञानका मार्ग है। हममें सदाचार ज्ञानके लिए ही जो हुए थे ऐसे बळ्ळुवर ( प्रसिद्ध तमिल सन्त कवि ) ही फिरसे उत्पन्न हुए हों—ऐसे बतनोंसे अकर्णनीय करुणाकी श्योति पवित्र गांधीजीकी जय हो ॥४॥

अनुभवकी भी विद्या जिसके पास पहुँच नहीं सकती जो परे-से-परे ज्ञानभय हैं और जो असमान अपार कर्मा-मूर्ति हैं उस सर्व समर्थ परमात्माको अपनी साँस बनाकर बोझनेवाले उसीका सहारा देने वाले और उसकी कृपा प्राप्त पवित्र गांधी ही भारतकी श्योति हैं। बाँधनेका मर्म जानकर धार्मिक श्लेषको बाँधन ( बन्धन रखने ) के लिए उन्हीं गांधीका मार्ग अपनाता लोगोंके लिए आवश्यक है ॥५॥

गांधी मार्गका सारा ससार आवर कर। सत्यको सिद्धासनाम्बु करें। मनुष्योंके बीचस सझाई दूर हो जाए। लोगोंमें प्रेम और धर्म बढ़े। बिन-बखिर सुखी हों। पवित्र लोग ही राज्य शासन करें। महान् गांधीके पवित्र मार्गकी जय हो। करुणामय भगवान सबकी रक्षा करें ॥६॥

४ कत्तियिनि रत्तमिनि

कत्तियिनि रत्तमिनि  
 मुहमोह बरगुह ।  
 सत्तियत्तित नित्तियत्तै  
 मम्बुम याक्क शरणीर ॥ (कत्ति) ॥१॥  
 ओच्छियच्छि गुण्डु बिट्टिद्ध  
 गुयिर परित्त सिग्गिये ।  
 मण्डकत्तिस कच्छिरादा  
 दाण्डे योन्ध पुहुमये ॥ (कत्ति) ॥२॥  
 कुबिरे इत्तै यत्तै इत्तै  
 कोत्तुम यादा इत्तैये ।  
 एबिदि एन्ध यादमित्त  
 एट्टु म भाणो इत्तम्बाय ॥ (कत्ति) ॥३॥  
 कोपमित्तै तापमित्तै  
 शापम कूरत्तित्तये ।  
 पापमाता दोम्भ योन्धम  
 पण्णुमाहा इत्तैये ॥ (कत्ति) ॥४॥  
 कच्छरित्तै क्कट्टरित्तै  
 शरुत्तियिन्ध माबिरी ।  
 पच्छु शेय्द पुच्छियम दान  
 पत्तित्तये नाम पाक्कये ॥ (कत्ति) ॥५॥  
 गादि एण शान्त मुत्ति  
 तेत्तु काट्टु म शेत्तैरी ।  
 माग्गत्तकुळ तीर्मे कुय  
 बाप्पन्ध देयप् मार्गमे ॥ (कत्ति) ॥६॥

## ४ विना तलवार या रक्तके

[यह कविता उम्र समय रबी मई की जब 'ममक सत्याग्रह' का आरम्भ हुआ था। इस कवितान कागोमें उल्हाह देवा किन्ना और घर-घर-इस कविताका प्रचार होने लगा था।]

खड्गरहित और रक्तरहित एक युद्ध आ रहा है। सत्यकी नित्यतापर विश्वास करने वाल सब लोग उसमें सम्मिलित हों ॥१॥

(छुक-छिपकर) पास पहुँचकर गोली चलान और प्राण हरण करनेका यहाँ कोई काम नहीं। यह अमृतपूर्व एक नया ही युद्ध है ॥२॥

इसमें न चाङ्गा है न हाथी है। किन्नीको मारनेकी इच्छा नहीं है। यहाँ कोई विरोधी नहीं है। प्रहार करनेकी कोई इच्छा नहीं है ॥३॥

यहाँ कोप नहीं है ताप नहीं है घाप दना नहीं है। पाप मुक्त कोई काम करनेकी इच्छा नहीं है ॥४॥

ऐसा युद्ध न कभी देखा न सुना। हमारा पूर्व-दृष्ट पुण्य सफल हुआ कि हमें यह देखनेका अवसर मिला ॥५॥

गांधी नामक पान्त मूर्तिन (अनक मागोमें) बुनकर हमें यह मार्ग दिखाया है। मनुष्यकी मुटाईको नष्ट करनेके लिए सृष्ट यह देवी मार्ग है ॥६॥

## ६ मक्कट चैत्वम

पेद्रिडुम क्षेस्यतेस्साम  
 पेरियडु मक्कट चैत्वम ।  
 उद्रिडुम इन्बत्तेस्साम ।  
 उयन्बु मक्कट्तिम्बम ॥  
 मद्रिई उल्लगिसेम्ब  
 मनिडनुम मरुवरोणाडु ।  
 शद्रिई मदित्तु नामुम  
 सरियरा नडप्पो मागा ॥१॥

शिरन्दिडुम इन्बमाना  
 शिनुपडु ममवडु बगु ।  
 पिरन्दिडु मुद्रुम पिद्रुम  
 गाम गोप्पुम पियेगळाले ।  
 अरुम्बव कुपम्बे इम्बम  
 अमुबविप्पडु मुद्रास ।  
 इरन्दिडुम अडनेप्पोसा  
 इप्पोळ तुम्बमुम्बो ॥२॥

उरुबिदिङ्गुरैम्ब बेरुम  
 उडस मिम मेसिम्ब बेम्बम ।  
 अरिबिदिङ्गुरैम्ब बेरुम  
 अवगिन इवम्बेम्बम ॥  
 पिरबियिन कुरगळेस्साम  
 पेद्रुवर कुद्रुत्ताले  
 कदवितिल अमम्ब इस्कार  
 कडबुळिन कुद्रुमुम्बो ? ॥३॥

## ६ सन्तान भाग्य

प्राप्य सभी सम्पदाओंमें सन्तानकी सम्पत्ति सर्व ध्येष्ठ है। प्राप्य सभी सुखोंमें पुत्र-सुख उत्तम है। इस बातका कोई किसी तरहसे सम्झन नहीं कर सकता। हम भी इसको मानकर उचित जीवन बिताएँ ॥१॥

उत्तम सुख देनेवाला शिशु हमारे यहाँ जन्म प्राप्त करनेके पूर्व ही या पदा होनाक वायु हमारी ही श्रुटियोंसे हमारे वात्सल्य-सुख पानेके पहले ही मर जाता है—इससे बचकर दुग्धकी कौन सी बात हो सकती है ॥२॥

आकारका छोटा है तन बड़ा दुबला है बुद्धिकी कमी है, सौन्दर्यकी हानि आवि जो जन्म प्राप्त कमियाँ है वे माँ-बापकी श्रुतिसे ही जन्ममें ही शिशुमें आ जाती हैं। इन कमियोंमें भगवानका कोई दोष नहीं है ॥३॥



कवि-धी माता

विदि विलक्करिणु वापुम्बु  
 विमसने ममत्तुळोष्णि ।  
 मविदिने शोण्डु शुद्ध  
 मार्गसिक्त निन्द मामुम ॥  
 पुबलबरे पेद्रु मद्रुम  
 बुद्धियाय वळ्यो मातास ।  
 इवमुरा बन्ध मवकळ  
 इळमयिक्त इरप्यबुण्डो ? ॥४॥

वित्तिने पोद्रि तूपुम  
 विळै निसम पयुबु पात्तु ।  
 शुद्धिबुम मिदम वासै  
 तुळसिडा बेसि शुद्धि ॥  
 पत्तियिकात्तु पण्य  
 पयिरु शंयुबुविद्वाल ।  
 दोसैयाय शोर्गियागा  
 तोम्बमो शोलेल शोम्बम ॥५॥

विधि-निपटका ज्ञान पाकर ठानुसार जीवन बछाए परम-पवित्र भगवानका ध्यान करके सदबुद्धिसे गुद्याकरण करे और सन्तान प्राप्तकर बुद्धि पूर्वक उसका पालन करे तो सुख देनेवाला छिगु अल्पामुमें क्यों मरेगे ? ॥४॥

अहाँ बीज बोना है उस जमीनको ठीक-ठाक कर जानबर कर न जाएँ, इस उद्देश्यसे चारों ओर घेर डालकर यदि अटापूर्वक खेती की जाए तो धस्य बराब क्यों होगा ? ॥५॥

---

७ श्री मरुतु

बेयवस्तनमिक्क मामिङ्ग बन्मम  
तीमि बळर्तु तिगप्पु एने ।  
कैपिल कडंयोसै कदविगळ कोण्डु  
कन्मिल बेरिबोष्ट पाबे मरुष्टु ॥  
बेय्यपुवुबेने तुडि तुडिप्पोम  
बेवन पोंगुम मनम पडुम पाडुम ।  
बेयसिल एगुम मनिबर्पळ यास्म  
बापुक्कैपिम इन्बम इयम्बनर पाहम ॥१॥

अम्बिकेरे बन्म मनिबप्पिरप्पे  
माररि बुळ्ळरेम्बार्गळ शिरप्पे ।  
'तुम्बतुक्के मुद्रुम मरिबै शोळुति  
गुळु मडिबिकरार ऊरे कोळुति ॥  
इन्बम मडम्बवर पारैयुम काथोम  
एतुक्कु मक्कळै कोस्सुवर वीजे ।'  
एनबसै माट्टु मळ्ळेभे बेने  
एगुवर यास्म अरितार्गळ इने ॥२॥

कोळिजक्कुसाबुबस मक्कळ मरम्बार  
बूडिप्पपगुबस बूडक्कुरेम्बार ।  
अम्बिज मडुंगि मोडुंगु पिगार्गळ  
आगायम पातुप्पडुंगुगिगारळ ।  
बंजनपट्टु बसिमैयिस्सामल  
बालसिल बन्ने एबिक निस्सामल ।  
कुञ्जुपम्बेगळ पेचळै केस्वार  
गोरसै बीरतित्त पारेस्व कोस्वार ॥३॥

## ■ सक दवा

देबांश-युक्त मानव बुराईमें फँसकर दुखी क्यों है? हाथामें हत्याके हथियार लिये आँखामें नशा रखता है। धूपमें तड़पनेवाले कीड़के समान सड़पता है और बदनापूर्ण व्यथित-मन रहता है। ससारके सभी मनुष्य जीवनके सुखमें वञ्चित हैं ॥१॥

कहते हैं कि प्रमत्ता प्रदर्शन करनेके लिए ही मानव-जन्मकी सृष्टि हुई। आजके सभी बिना इस चिन्तामें डूबे हैं कि (अज्ञान मनुष्य) बुराईमें ही अपनी मारी बुद्धि लगाकर आत्मियोंका मारत और गाँवाको जलाते फिरत हैं—फिर भी कोई सुख नहीं पात। व्यर्थ ही क्यों भाइयोंका मारते हैं? क्या इसकी कोई दवा (इसको दूर करनेका उपाय) नहीं है? ॥२॥

लोग प्रमत्ताप करना भूल गए हैं। उनके हिंस्र मिस्रकर रहनेकी रीति नहीं रही। एक दूसरेसे डरत हुए अलग-अलग रहत हैं। आकाश वेद्यते हुए (निराग होकर) छिपनका यत्न करत हैं। न उनमें निष्कपट बल है न लुटेरी मीशानमें उतरनेका माहम। निरीह वृद्धोंकी और स्त्रियोंको मारते हैं। इस घोर-कर्मको समर कहत हैं ॥३॥

वि-धी मासा

बाळुकुबाळाम विस्सुकु बिस्साम  
 षोमिक्क भायुक्क तीन्दिक्क मत्साम ।  
 मळुकुके अळ निग्ग मेरुकु मेराम  
 आण्णमुम माद्रुमुम शोयवु पोराम ॥  
 मळुकु मालवन्नु मळ्ळक्क बन्निल  
 मरिपोलुम कुरि तेडुम कळ्ळगळेत्तप् ।  
 पालुकु वाय वक्कुम बालर कोत्तार  
 पावर्त्त मापरीकम्मेन जोत्तार ॥४॥

एम्बिरा बिद्दयळ वेणु कट्टोम  
 एम्मेमोपला पुडुमैळ वेट्टोम ।  
 च्चिबिरन शेम्बाय मण्णत्तोडुम  
 सपबि वेशा वपिगळ्ळै तेडम ॥  
 अबमिस्सापसा शक्तिगळ्ळ उट्टुम  
 अडि तडि शण्णैये बिट्टिड मट्टुम ।  
 तन्बिरम ओम्ब पडित्तिसम ऐयो  
 वरभियिल मक्कळ्ळ तविप्पु पोय्यो ॥५॥

इत्तर्त्त तीमैक्कुम एट्ट मळ्ळु  
 इन्बिय ज्ञानिगळ्ळ कण्ण मळ्ळु ।  
 उत्तमर याक्क उक्कुकुम मळ्ळु  
 उत्तगत्तिल तुम्बम मोपिक्कुम मळ्ळु ॥  
 सत्तियम मात्तम इरक्कु शारवर्त्त  
 समन्दिट्टे अन्नेमुम तेन्निक्कु कुवैत्तु ।  
 पत्तियम बेय्व नित्त प्पोडुम उण्णाल  
 पाल्ळुक्कु वेक्कुकुम पोरिलै कण्णाय ॥६॥

इनके औजार भी कैसे हैं—सुलवार—तीर जैसे । अगर ये अस्त्र न रहें तो मस्त्र-मुठ हो जाए । एक मनुष्य दूसरसे भिड़ जाए—पौरुष प्रकट करे—इसका नाम है 'समर' । दिन प्रति दिन आधी रातमें लुकी छिपी घात लगानेवाली लोमड़ी जैसे वृष ( पीने ) के लिए मुँह लगानेवाले सिधुओंकी हत्याको सभ्यता कहत हैं ॥५॥

हमन कितने ही यंत्रोंकी विद्या खूब पढ़ी कितनी ही नूतनताएँ पाई । ऐसी अनन्त शक्ति पाई कि चन्द्र और मंगल ग्रहोंसे बातें कर सकें । इतनी शक्ति पाकर भी हम मारपीटको छोड़ देनेका कोई मर्म सीख नहीं सके । दुनियाके सभी दुखी हैं—यह क्या झूठ है ? ॥५॥

इन सब बुराइयोंकी एक दवा है । उस दवाका पता रूगाया—  
—भारतीय ज्ञानियोंने । इस दवाकी बड़े बड़े रोग प्रघसा करते हैं । यह दवा दुनियाके दुखोंको दूर कर वेगी । सत्य और शान्ति नामक दो औपधियोंका सम भाग लेकर प्रेम नामक सहृदमें भोलो , परमेस्वरका स्मरण नामक पथ्यका पालन करो । इसका सेवन करनेपर देखो सड़ाई नामको भी नहीं रहेगी ॥६॥

विन्नी माला

## किळियुम वपियुम

आदि सुततिरस किळिये अर्क्य वपि तेडु ।  
 मावन तिरवदिप्यं किळिये मादि जयम पाडु ॥१॥  
 इन्द्र पेव मिलतिल किळिये इक्के पडि परवक ।  
 सोम्वम उमक्किरस्यो किळिये दोस्करि वाय तिरडु ॥२॥  
 काट्टिनिले पिरव्वाय किळिये काट्टेमबे परव्वाय ।  
 कूट्टिनिले किडवक किळिये कूट्टस्यो जमवकु ॥३॥  
 तग मदि कूण्डस किळिये तगि इक्क्यालुम ।  
 अगुबुदम्विरतिल किळिये मामबमेडुमवकु ॥४॥  
 सोम्व मेस्वाम मरम्बु किळिये पुट्टमेस्वाम मरम्बु ।  
 इम्बवप्पडि इक्क किळिये इक्के कोव्वायो नी ॥५॥  
 पक्क मरक्किळै मेल किळिये पाडुवक नी इयव्वाय ।  
 इक्के जपिर मेले किळिये इम्बुम एवर्कागा ? ॥६॥  
 मोदि इरे तेडि किळिये उक्कडु नी मरव्वाय ।  
 मादि पिरर कोडुवक किळिये नाणमिगिप्पुगिताय ॥७॥  
 काट्टु पया बगोय किळिये काणुवक नी मरव्वाय ।  
 पोट्टुवै जप्पिरवक किळिये बुदि मगिपुव्वाये ॥८॥  
 सोम्व मोपि मरव्वाय किळिये सोम्वु दोस्कु गिरव्वाय ।  
 इन्द्र विवम वापुम किळिये इम्बमुतक्केडु ? ॥९॥

## ८ तोता और तरीका

[ इस कविताके हर चरणमें फिटिय शब्द माता है—बिसफा मर्ब है "है तोते।" तमिल भाषामें तोतेकी स्त्री माना जाता है । ]

हे तोते ! अपनी पूर्व स्वतंत्रताको पानेका मार्ग निकालो । परमेश्वरके धरणाका आश्रय रुककर जयगीत गाओ ॥१॥

इस विशाल पृथ्वीपर मनमाने उड़नका क्या तुम्हें अधिकार नहीं है ? कहो तो ॥२॥

वनमें पैदा होकर तुम हवाके समान (निर्वाह होकर) उड़ते थे । पिंजरेमें दबदब रहते क्या तुम्हें संकोष नहीं होता ? ॥३॥

रत्न अङ्कित सोनके पिंजरेमें रहो तो भी वहाँ स्वतंत्रताका आनन्द कहाँ ? ॥४॥

अपनोंको भूल करके परिवारका त्याग करके यों रहनेकी क्या तुम्हारी इच्छा है ? ॥५॥

हरे पेड़ पर बैठे-बैठे गीत गाना तुम्हारे लिए अब साम्य नहीं है । अब अपनी जान पर भ्रमता किस कामकी ? ॥६॥

दौड़ घुप कर खाना प्राप्त करनेका क्रम तुम भूल गए । औरोंके आश्रयमें रहकर उनका दिया हुआ (अन्न) तुम निर्लज्ज होकर खाते हो ॥७॥

वनके कई फलोंको देखना (भी) तुम भूल गए । जो कुछ दिया गया उसीको खा लेते हो—इतना-बुद्धि भ्रष्ट हो गए हो ॥८॥

अपनी निजी धोखी भुलकर जो कुछ रटाया जाता है वही रटते हो । ऐसे जीवनमें तुम्हें कौनसा सुख मिलता है ? ॥९॥



उत कुल्लत पयिक्क किळिये उत्तरबानाळुम ।  
अगदु श्येय बुधिरं किळिये आशैयुवन बहिस्ताय ॥१०॥

एण्णमुनक्कहम्बास किळिये एत्तन मरामाडि ।  
कण्णं तिरक्कु मुझे किळिये काट्टिचि सुततिरमाम ॥११॥

मस्तु वयि शोस्तुबेन किळिये नाडि तेरिम्बुक्कोळ नी ।  
अस्तुल वयि बिडुत्तु किळिये अम्बिन वयि तेडु ॥ ॥१२॥

कूट्टं उवेलुवरा किळिये कूडाडुभासे ।  
वेट्टं वयिगळ नी किळिये शोप्पिडुम जातियिस्सै ॥१३॥

शोभरं शोस्तावे किळिये शोरिडु उण्णावे ।  
एत्त अयंत्तात्तुम किळिये एनेन्द वेळावे ॥१४॥

रंग रगाबेन्द किळिये ईयिबम पेसावे ।  
एगे एगे एन्द किळिये एळनाम ओस्तावे ॥१५॥

कोञ्जिन मयिपारे किळिये गेञ्जिन पुगपारे ।  
अञ्जिन नडुगारे किळिये आडि नडक्कारे ॥१६॥

कोष्ड मजमानन किळिये कोपितुक्कोष्डात्तुम ।  
आडि उयिर बापुगा किळिये आगाबेन्द शोस्ताय ॥१७॥

कोस्तुबनेग्रात्तुम किळिये कोष्बमुमञ्जावे ।  
सेस्तुबनेग्रात्तुम किळिये सेनि नडुगारे ॥१८॥

वेट्टु व नेशात्तुम किळिये वेट्टुं एगिरुप्पाय ।  
कट्टिडा बम्बात्तुम किळिये शोवन एगिरुप्पाय ॥१९॥

अगर आत्मा हो कि अपने ही कुलकी मिन्दा करो तो तुम बैठे ही करके अपने प्राण प्रेम पूर्वक धारण करते हो ॥१०॥

अगर तुम निश्चय मात्र कर सो तो देरी कहाँ ? परक मारते मारते स्वतन्त्रता सामने आ जाए ॥११॥

मैं अच्छी बात बताऊँगा जरा मान लो । बुझना मार्ग छोड़कर प्रेमका मार्ग अपनाओ ॥१२॥

पिअरा छोड़कर आना तो तुमसे होना नहीं अनुचित काम करनेवाली जातिके तो तुम नहीं हो ॥१३॥

जो रटाया जाए वह न रटो , जो खिलाया जाए वह न खाओ चाहे जितनी बार बुलाएँ, जवाब न दो ॥१४॥

रंगा-रंगा\* मत बोलो । 'कहाँ-कहाँ' कहकर हँसी का पात्र मत बनो ॥१५॥

बहक कर खुशी न मनाओ । दीन होकर स्तुति न करो । मारे डरके काँपो मत । झूमते न चलो ॥१६॥

तुम्हें जिसने खरीदा वह मासिक रुप्ट हो तो भी कह दो कि अधीन होकर प्राण धारण करना ठीक नहीं है ॥१७॥

यदि वह कहे कि मार डालूँगा तो भी डरना मत । यदि वह कह कि (बच्चा) खवाऊँगा तो काँपने मत लगी ॥१८॥

यदि वह कह कि बोटी-बोटी काट डालूँगा तो उसका निर वचन (घमकी) समझना । यदि तुम्हें वाँघन (वधनमें डारन) आए तो अपनी परीक्षा समझा ॥१९॥

---

\* अस्मर लोतेको तमिल देस रंगा एंव रटाया जाता है । रंगा भयवानका नाम है और एंव का अर्थ है कहाँ ?

शोचन् कासमहि किळिये शोर्गबुवायो नी ?  
बेहमर्यप्पोरुत्तास किळिये बेट्टि मुनबागुम ॥२०॥

इन्द्रम्पडि किडक किळिये इयला बेगवहन ।  
उग्रन एजमानन किळिये उणरम्पडि मडप्पाय ॥२१॥

इप्पडि नी मडम्बार किळिये एणियेणिये पात्ते ।  
ओप्पि यजमानन किळिये योचन् शोम्वाप्पि ॥२२॥

कारिय मुन्नासे किळिये काशळ विस्सेयेरु ।  
वीरियम पेद्यामळ किळिये बिट्टिबुवानुनैये ॥२३॥

कोबि निरगुस्सी किळिये कूशा मस पिरिसु ।  
नाबन पुगय पाडि किळिये नाट्टिसैयुम् परम्पाय ॥२४॥

नीण्ड पेरु घानम बिळिये नीयबिले परन्नु ।  
आण्डबन सन्निधिये किळिये अण्डि सुगमबेवाय ॥२५॥



यह तो परीक्षाका समय है—क्या तुम घबहाओगे ? यदि सफ़ट सह सा तो विजय तुम्हारी होगी ॥२०॥

तुम ऐसा बर्ताव करो कि तुम्हारा मालिक जान आए कि यह स्थिति (अधिक समय तक) टिक नहीं सकती ॥२१॥

तुम ऐसा बर्ताव करो तो खूब सोचकर तुम्हारा मालिक कोई मार्ग निश्चासनाका यत्न करेगा ॥२२॥

यह जान जाएगा कि तुममें रस्ती भरका भी काम नहीं है और विना रूँ किए तुम्हें छोड़ देगा ॥२३॥

तुम अपने पर संवारकर निस्सहाय फलामोय और भगवानकी स्मृति गात हुए चारों ओर चढोगे ॥२४॥

अनन्त आकाशमें उडत हुए तुम भगवानका साभिष्य पाकर सुखी होओगे ॥२५॥



९. तालाष्ट्र

आरारो, आरिररो  
 अम्मा नी कण्णुरंगु ।  
 वेरेबो, ऊरेबुषो  
 वेट्टबर गळ यारेबरो ॥  
 शीराष्म काबेरी  
 सेबो तिरुबळ्ळाल ।  
 वारामल वन्नुविल  
 मामनिये कण्णुरंगु ॥१॥

आपवकरे पुरळुम  
 काबेरी आट्टरगे ।  
 एय पडगोट्टि  
 एन कण्णवत अलासुम ॥  
 कूर्य कुडित्तुरंगुम  
 कुडित्तनम वान एगालुम ।  
 कोवेगळ अस्तवम्मा  
 कुरेण्णल उमक्केडु मिस्त ॥२॥

## ९ लोरी

[ कावेरी नदीमें बहता हुआ शिशु मिला। मस्काहकी पत्नी उसका पालन कर रही है। उसको मुलाती हुई यह छोटी माटी है। तमिल प्रदेशकी छोरीमें आरारो आरिररो अथवा आरम्ममें अबस्य रहते हैं। इस अर्थोंका भाव यह है कि न मामूम कौन अब (इस बंसमें शिशु होकर) पैदा हुआ है। ]

आरारो, आरिररो। माई मेरी। तू सो जा। न जाने तेरा क्या माम है कहीं घर है और माँ-बाप कौन हैं। इस उत्तम कावेरी देवीकी कृपासे हमारे लिए अप्राप्य तू उत्तम रत्न हमें मिला सो जा ॥१॥

मेरा पति तूव गहरी और चौड़ी कावेरीपर (नाव चलानेवाला) परीब मल्लाह है। हमारा परिवार रुखा-सूखा खाकर सन्तुष्ट होकर सो जानेवाला है। तो भी हम दीन नहीं हैं। तुम्हें किसी बातकी कमी नहीं रहेगी ॥२॥

माल कण्ठकेष्णि  
 मत्स मत्स शम्बल्लित्त ।  
 माल मिरट्टु गिर  
 म्बिकारम इत्सैयम्मा ॥  
 वळै पोपुबित्तानल  
 वैलै शोय्युम ओवर्नबाल ।  
 कालि कुल शेषवम  
 कालिइवाळ कम्पुंरंगाय ॥३॥

मदिकारम एय्य शोत्सि  
 म्भियायम शेषवरियोम ।  
 सविकारत तदिरत्तास  
 सम्पावित्तुम्बवित्त ॥  
 सुवि पावि पोय पशि  
 सुगित्तित्तुम्बुम शूवरियोम ।  
 गविकेडु वंनु विड  
 कारम्पळ इत्सैयम्मा ॥४॥

बाहु वयम्परियोम  
 बम्बु तुम्बु शेषवरियोम ।  
 शूहु पुरिम्बरियोम  
 पोय शाट्टि शोभ्रवित्तै ॥  
 नीवि मेरि तवरि  
 निवै शोत्स निगवित्तै ।  
 एहुम ओर केडुवि  
 इंगु वरा आयमित्त ॥५॥

अच्छे बतनपर दिन गिननवाले और मातहतोका डाँटने वाले हम नहीं हैं। हम हमसा हर काम करते रहने वाल जीव हैं। कासी माई हमारी कुसु-दधी है वह रक्षा करगी तू सो जा ॥३॥

अधिकारका नाम लेकर हम अन्याय नहीं करते। छात्रा पढ़ी या पहयग्रसे कमाकर खानवाले हम नहीं हैं। हम झूठ-मूठ तारीफ करके सुखी जीवन नहीं वितात। हमारी दुर्गति कभी नहीं हागी ॥४॥

हम बड़ बड़ कर वालना नहीं जानत वहस नहीं करते। हम घोखा देना नहीं जानते झूठी गवाही कभा नहीं बी। नीति और ग्यायकी भूसकर भी निन्दा नहीं करते हैं। कोई कारण नहीं कि हमारी कोई सुटाई हो ॥५॥



कवि-श्री माता

वेसै विनि कूसि कोळ्ळुम  
 विहैयळ कट्टरियोम ।  
 कुलियिनि वैसे कोळ्ळुम  
 कोडुम्बावम शोयडरियोम ॥  
 कासैयेन्नुम मासैयेन्नुम  
 कासनिनि पाडु पट्टु ।  
 मासु पणम वडासुम  
 मसु सुकम शोयडु वैप्योम ॥६॥

तेडि पुवैतु वेतु  
 वयिरार तिमामल ।  
 वाडि पशितु नोन्नु  
 वन्नुवर तिमै शोस्सि ॥  
 मोडि मोळ्ळिन्नु कोळ्ळुम  
 उसुत्तरसु मागळम्मा ।  
 नाडि मोद तीम्बुवरा  
 ज्ञायमिस्सै इन्निवत्ते ॥७॥

कोवम मिगुम्बालुम  
 कुतु शण्डे वम्बालुम ।  
 पावम पयिगळुक्कु  
 वयन्वोडुगुम एगळुक्कु ॥  
 शोबन इक्कुमट्टुम  
 वेहुम उडवुम अम्मा ।  
 वेवि तुपैयिरप्पाळ  
 तेळ्ळमुवे कप्पुुरगु ॥८॥

हम बिना काम किये पारिव्रमिक सेनकी बिद्या नहीं जानते । बिना पारिव्रमिक बिमे काम सेनेका महान पाप हमने कभी नहीं है किया । सुबह हो चाहे शाम धूब मेहनत करते और जो कुछ भी मिळता है उसीमें सुख मनाते हैं ॥६॥

हम वे निकम्मे लोग नहीं है जो पेटभर खाना न खाकर पैसे जमा करते हैं और भूखे प्यासे आनेवाले दीन दुबियोको भला बुरा सुनाकर छिप जाते हैं । हमारे पास भला दु ख क्यों आएगा ॥७॥

क्रोधके आवेशमें या मारपीटमें भी पाप और बुराईका फल माननेवाले हम लोगोके शरीर, प्राण रहते बेकार नहीं रहेंगे । बेबी हमारी रखा करेगी । हे अमृतमयी ! सो जा ॥८॥

पङ्क्ति पङ्क्तिपरियोम  
 पट्टणत्तु पेङ्क्तिपरियोम ।  
 वेङ्क्ति तुणि मरियोम  
 वीम पिसुबहु क्षेयपरियोम ॥  
 कङ्क्ति पिपेपरियोम  
 कावेरि शाटसियम्मा ।  
 उङ्क्ति पङ्क्ति इंगुनबके  
 मोद कुरेयुम इस्सपम्मा ॥९॥

हम शालाकी शिक्षा से परिचित नहीं हैं। नगरवासियोंकी वाणी नहीं जानते। घुड़ वस्त्र हम नहीं जानते। भ्यर्यके घड़े हम नहीं जानते। जोरी हम नहीं जानते। कावरी माकी सौगध है। यहाँ तुम्हें किसी बातकी कमी नहीं है ॥९॥

---

कवि-श्री माता

## १० भवन्तुम भवन्तुम विरुन्धिय नाहु

मन्त्रबत धेग्र मनिह तिस्सै—अंगे  
मंभिरि तभिरि याधमिस्सै ।  
विम्वर एम्स एबधमिस्सै—पट्टम  
तेडि अलैन्धिडुम मभकळिस्सै ॥ १ ॥

ऊखकु पतुप्पेर मत्सबर्गळ—पोडु  
पोन्नत पोयबिडु बत्सबर्गळ ।  
मारुक्कुम एबिस्सुम भोरंगळ पोप्यामळ  
अप्पप्पो तीर्पुंगळ पोपिडुबार ॥ २ ॥

मत्सबर केट्टवर एम्बेस्साम—अये  
राजांगम पट्टम पबबियस्स ।  
भोस्सिस्स मडत्तयिस्स धूरत्तिस बीरत्तिस  
शुद्धरेम्स पसर मत्तुबडे ॥ ३ ॥

कञ्जेरो एगरोर कट्टिडमुम—अर्बे  
कण्डु मडुंगुबल भंगिल्लये ।  
अञ्जमिस्सामसे यास्स पोस्सुडत  
भंगो मीत्ति मडत्तिडुबार ॥ ४ ॥

बीबिक्कु बीबियोर मीबि स्तसम—पत्तु  
बीट्टुक्कु भंगोव पाळ्ळिक्कुडम ।  
नीबिक्के भोडि यत्तैम्मु पोसाबिट्टु  
निल्लै केट्टु पोगिर निम्बे यिस्स ॥ ५ ॥

पळ्ळिक्कु प्पडिप्पुक्कु शम्बळम—इधुम  
परीट्टुक्कु कट्टप्पणामेनवुम  
पिळ्ळैगळ पम्बाड, पिन्नुम पणामेम्स  
पिन्निक्कु पिडुगुबल भंगिस्सये ॥ ६ ॥

## १० स्त्री और पुरुष (दोनों) का प्रिय देवा !

वहाँ रामा नामक एक मनुष्य नहीं है मन्त्री या तन्त्री कोई नहीं है। छोटा कोई नहीं है न उपाधिक पीछे भटकने वाले लोग ही। ॥१॥

गाँवके दस जने जो सार्वजनिक (बाह्योपर) विचार करनेमें समर्थ हैं किसीका कोई पक्ष लिए बिना समय समय पर निर्णय करते रहेंगे। ॥२॥

वहाँ अच्छे बुरेका आधार राजकीय उपाधि या पदवी नहीं है पक्षमें चरित्रमें दूरतामें और धीरतामें बहुत लोगों द्वारा माना जाना ही आधार बनेगा। ॥३॥

वहाँ न कचहरी (मदालत) नामक कोई इमारत होगी और न कोई उसे देखकर डरेगा। निर्णय होकर सभी अपने अपने दायित्वको जानते हुए नीतिका अनुसरण करते करते रहेंगे। ॥४॥

हर मार्ग पर एक न्यायालय हर दस घरपर एक पाठशाला (यह वहाँका क्रम हागा) न्यायपर इधर-उधर भटककर (बहुत) खर्च करके बरवाद होनेका क्रम वहाँ नहीं है। ॥५॥

पाठशालामें पत्रनेक लिए शुल्क फिर परीजाने लिए शुल्क, उसके बाद वास्तुकारोंके गेद चलानेके लिए और शुल्क आदि शोषण वहाँ नहीं है। ॥६॥

वैलपिस्साववर यावमिस्सै—मुट्टुम  
 बीणरुक्कंगे वल्ले पिस्सै ।  
 कूलपिस्साववर यावमिस्स—शुम्मा  
 कुम्बिट्टु तिन्गिय कुम्बमिस्सै ॥ ७ ॥

कूनुम कुल्लनुम नीण्डि मुडंगळुम  
 कोञ्जम, मवत्तकुम पंजमिस्सै ।  
 वानम कोट्टुप्पवेनुरिस्सामल्ल—पोषु  
 धमं मेग्गे वंसु तांगिडुवार ॥ ८ ॥

ओपि मन्नगळित्तेस्सोळ्म—अंगे  
 उडु उडुत्तु कळित्तिडुवार ।  
 तप्पियम शोप्पिडु तोग्गवे—मवत्त  
 वप्पनै तम्बिडु वेव्वाडु ॥ ११ ॥

वाडु वपवकुवकु नेरमिस्सै—अगे  
 वञ्जित्तु वाया मुडियाडु ।  
 मुट्टु श्रेय पंढपम एडु मिस्सै—मुट्टुम  
 शोन्विञ्जुगिक्क वपियुमिस्सै ॥ १० ॥

कळ्ळै कुडिप्पडु कूडाडु—अंगे  
 कामा कम्मगळ्ळ कण्णविस्सै ।  
 कोळ्ळै यडित्तिडु तेवपिस्सै—एम्म्म  
 कोञ्जमुम यावत्तकुम पञ्जमिस्सै ॥ ११ ॥

कावेरी नीर वट्टि पोवदिस्सै—ओव  
 कासवाय मेत्तिरि एणुमिस्सै ।  
 वावत्तुम कट्टु गळ्ळ एडुक्करोप्पोडुम  
 कळ्ळर वयमेग्ग वाळ्ळयिस्सै ॥ १२ ॥

वहाँ कोई बेकार नहीं रहेगा। अयोम्य लोगोंके लिए वहाँ स्थान नहीं है यों ही (झूठी) नम्रता प्रदर्शित कर खाने वालोंकी टोली नहीं है। ॥७॥

कुबड़े अन्धे सँगड़े लूले कम हैं। उन्हें भी किसी बातकी कमी नहीं है। वहाँ पान बेचना प्रम नहीं है—सामूहिक (दान) धर्मका प्रबन्ध रहेगा। ॥८॥

सभी सन्तुष्ट और प्रसन्न मनके साथ खा पहनकर सुखी रहेंगे। न बुराई करनेका विचार होगा न उसका दण्ड देनेकी आवश्यकता रहेगी। ॥९॥

वहाँ तर्क वितर्कके लिए समय नहीं रहेगा घोखा देना असम्भव होगा। जुआ खोरी किसी तरहकी नहीं रहेगी। सुस्त रहकर सुखी होनेका कोई मार्ग नहीं होगा। ॥१०॥

वहाँ मद्य-पान मना है। काम अनित कलह वहाँ नहीं हाता। झूट मारकी कोई आवश्यकता ही नहीं है किसीका किसी बातकी कोई कमी नहीं है। ॥११॥

कावरी ( नदी ) का जल कभी सूखता नहीं है। नहरका मिम्बी\* नामक कोई व्यक्ति नहीं है। कभी भी वहाँ पहरे और वन्दनकी कोई आवश्यकता नहीं है। पौर धर्मका वहाँ नाम भी नहीं है। ॥१२॥

---

\*जहाँ बाँध बनाकर नहरोंमें पानी बहायका प्रबन्ध रहता है वही पानीके बहावपर ध्यान रखनवालोंकी नहरका मिम्बी कहते हैं।



पण्यपस्काररंगल एस्कास्म— एंयुम  
 पट्टिणि एतगिर शोस्लेहु ।  
 गण्णियम अट्टवर याह मिस्से—ओठ  
 कासिसनम पण्य एत्ताहु ॥१३॥

कण्डबुम केट्टुबुम एप्पडि पोनासुम  
 कण्ठेरिबम्बु पोय शोन्नबु मय ।  
 कण्ठवर उर्भय शोस्सबुम वाय पोत्ति  
 कै कट्टि मिग्गिडुम कट्टमिस्से ॥१४॥

कोडुस प्पभत्तैयुम वीगुवर्कु—नित्तम  
 कोट्टे वाशसित्त कात्तिरुयुम ।  
 अडुत्तप्पिरविबिक पोगुम मट्टुम—ओम्बे  
 अस्सत्त अडम्बिडा तोस्सेयिस्स ॥१५॥

बुवकस शोस्सि अयुववकुम—वेगु  
 बूरम नडम्बु पिराडु शोस्सि  
 पक्कत्तित्त मिग्गवर एनेम्ब केट्टकयुम  
 पट्टु पोवबुम वाट्टुमिस्स ॥१६॥

तीण्डुप्पडादेम्ब शोभ्भासुम-अगे ।  
 तीण्डुदल वेण्डि तिरिवाविस्से ।  
 वेपिडय सुगंगळ याबुम पिररे पोस  
 वेण्डु मट्टुम उण्डु बेरेवर्कु ? ॥१७॥

कोयिस कुळपळुम वेचाबुण्डु—आनास  
 कुम्बिड पोवावित्त अण्ठेयिस्से  
 वायिस अपा तपम वळ्ळनेनेञ्जत्तित्त  
 वेत्तु पिपैत्तित्त तेबैयिस्से ॥१८॥

बडिडविक पोडा पण्यमुमित्त—अगे  
 बडिडविक बडिड शेय वाट्टमिस्से ।  
 वेट्टिविक शाबियुमिस्सास—बेरम  
 वेण्णिस पुरण्डिडुम नाणयगळ ॥१९॥

वहाँ सभी खेतीका काम करते हैं—फिर भूखका नाम भी वहाँ कैसे रहेगा? गम्भीरता-सून्य वहाँ कोई नहीं है। छोटापन वहाँ नहीं हो सकता। ॥१३॥

पाहे जो देखा हो या सुना हो पर बबहरी (अदालत) में आकर झूठ भी कहा जाय वह सत्य ही माना जाता है। पर उस वेषमें जो कुछ देखा उसे सच-सच कहते किसीको डरनका कोई कष्ट नहीं उठाना होगा। ॥१४॥

दिया हुआ पैसा वापस पानके लिए प्रति दिन अदालतमें हाजिरी देनी पड़े और फिर भी अमले जन्मकी प्राप्ति तक तग हो होकर बकनेकी स्थिति हो ऐसी बात वहाँ नहीं है। ॥१५॥

अपना दुबड़ा रोनेके लिए (अपने दुखकी बातें सुनानेके लिए) बहुत दूर जाकर कुछ कहो तो भी सुनने वाला शू भी न करे ऐसी निर्बल स्थिति वहाँ नहीं है। ॥१६॥

छुओ मत कहने पर वहाँ कोई छूतके लिए आतुर होकर नहीं फिरता। सुखके लिए आवश्यक जितने साधन दूसरोंके पास हैं उतन ही अपने पास पाकर कोई असंतुष्ट क्यों होगा? ॥१७॥

मन्दिर और तीर्थ बहुत हैं पर (पहले कौन कर) ऐसा पूजा सम्यन्धी भागडा नहीं है। मुँहमें राम और बगलमें छुरी रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। ॥१८॥

सूदपर कगानेके लिए किसीके पास पैसा नहीं है। सूदपर सूद लेनेका कानून नहीं है। पेटकी कोई चाभी नहीं होती। साख जवानपर ही बछती है। ॥१९॥

बानियम लवसम अस्त्रामस—शगे  
 लगमुम वेळ्ळियुम दोस्यमस्त ।  
 नाभयमाट्रेण नाटक आल्लगळ  
 नागरिका पित्तसाट्ट मिस्सै ॥२०॥

बिन्न कुपम्बैककु तालिकट्टि—बेगु  
 दोगिरम तालि अरत्तालुम ।  
 बभम कोडुत्तबन पायबे कुसैत्तिडुम  
 बण्ड वपवकगळ कण्डबित्तै ॥२१॥

नाट्टुक्कु पयबर यादमिस्सै—पिरर  
 नाट्टिन मेळ आशैयिस्साबबनास ।  
 दूट्टुक्कु दूडुम कोडुत्तिडुवार—परी  
 दुष्टर बम्बालुम तुरत्तिडुबोम ॥२२॥

धान्य और अनाज ही वहाँ सम्पत्ति है न कि सोना और चाँदी ।  
सिक्का-परिवर्तन नामक सुसभ्य घोषावाजी वहाँ मही ह । ॥२०॥

छाटीसी बन्नीका मगर सूत्र बाँध दिया जाए (विवाह कर दिया जाए) वह धीघ ही बितन्तु (विधवा) हो जाए और उस अभागिनका जीवन बरत्राद कर दिया जाए, एसी कुरीति वहाँ नहीं है । ॥२१॥

देघका कोई धनु नहीं है । दूमरोंक देघपर कोई कृदष्टि नहीं है । गरम बानोंका गरम अवाध दिया जाएगा और दुष्ट आए तो उन्हें भगा दिया जाएगा । ॥२२॥

---

कवि-धी मासा—

दामियम लवसम अस्तामस—मंगे  
तगमुम वळ्ळियुम शेस्वमस्त ।  
माणयमाट्टेय नाटक जासगळ  
नागरिका पित्तसाट्ट मिल्सै ॥२०॥

खिल कुपस्वेवकु तासिकट्टि—वेगु  
शोम्यिरम तासि भरत्ताळुम ।  
वसम कोडुसवन पायव कुसंतिडुम  
वण्ड वयवकगळ कण्डबिस्सै ॥२१॥

नाट्टुक्कु पगवर पारमिस्सै—यिरर  
नाट्टिम मेस आनीयिस्तावरगस्त ।  
शूट्टुक्कु सूडुम कोडुत्तिडुवार—परं  
कुट्टर वदासुम तुरत्तिडुवोम ॥२२॥

## ११ नूतन वर्षकी वधाहर्षी

आजके दिन हमारे जीवनमें एक नए वर्षन प्रवेश किया है। इस अवसरपर हम ईश्वरकी पूजा और प्रार्थना कर उसको सिर नवावें। बुराईयाँ हट जाएँगी सकल टल जाएँगे स्थिति उत्तम होगी कीर्ति फैलेगी कार्यमें अभिरुचि बढ़ेगी मनमें प्रेम और सस्कृतिके भाव भरेंगे। धान और धर्मकी वृद्धि होगी। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि प्रिय बाधु जनकीके साथ रहते हुए गृहस्थ धर्मका पालन कर आप मंगलमय जीवन बिठाएँ। ॥१॥

सत्य और शान्तिका सहारा लेकर सभारंगमें प्रवृत्त होनेका मार्ग बताने वाले उत्तम मनुष्य गांधीका मनमें स्मरण करके और सब लोकका पालन करने वाले परमात्माको सिर नवाकर आज 'चित्त' (श्रीध) मासके मधुवर्षके शुभ दिनपर उत्तम सुस्कार वाली तमिस्र माताकी कीर्ति गान करता हुआ मैं आशीर्वाद देता हूँ कि सब तरहका शय पाकर आपका कौटुम्बिक जीवन समृद्धि पाए। ॥२॥

११ पुताण्डु वापुत्तुगळ

पुगुन्दु ममदु वापुविस  
 पुवियबोर आण्डिभाळे ।  
 पूशने पुरिन्दु पोदि  
 ईशने वधंगि निपाम ॥  
 उगुम्बिदुम सीमे वाबुम  
 ओपिन्दिदुम तुम्बमेस्ताम ।  
 उयम्बिदुम निसैमे कीति  
 ओंगिदुम कारियतिस ॥  
 मिगुम्बिदुम इम्बम नेम्बिल  
 मिदबिदुम म्बुम पपुम ।  
 मेबिदुम बदमम वातम  
 मेविय शुदुम शूया ॥  
 मगिपुम्बिदुम उळ्ळतोडु  
 मनैयरम शिरक्क नीगळ ।  
 मंगळम वेरुगि वाया  
 मनमारा वापुत्तुपिग्नेम ॥१॥

त्तियमुम शास्तमुमे तुचगळाय ।  
 चरुमार्गे वपि मडक्कुम कोळगे तम्ब ॥  
 उत्तमनाम पावियरै उळ्ळ लेण्णि ।  
 उल्लगळुम परम्पोळ्ळ वणगिनिन्द ॥  
 चित्तिरैयाम पुताण्डु तिरुनाळ काणुम ।  
 शीर मिपुम्ब तमिपु तामिन पुगयैपाडि ॥  
 मेत्त नसम वेरुगि उंगळ कुन्दुम्ब वापु ।  
 मे-मेक्कुम शिरप्पैय वापुत्तुपिग्नेम ॥२॥

## ११ यह (स्त्री)

[ यह अक्षर कविवरि 'बह' और 'बह' नामक रचनासे उत्पन्न है । तमिस्र भाषामें 'बह' शब्दके तीन रूप हैं, एक पुरुष सूचक दूसरा स्त्री सूचक और तीसरा बौद्ध-जन्तु या निर्जीव वस्तु सूचक । केवल मनुष्य जातिके स्त्री-पुरुष सूचक शब्द अक्षर-अक्षर हैं । बौद्ध-जन्तुओंको सूचित करनेवाला शब्द स्त्री और पुरुष जाति दोनोंके लिए प्रयुक्त होता है । ]

यदि उस हिरन\* कहा जाय तो उसमें (भय भीत होकर) शोक उठनेकी आदत नहीं है । मीन सी आँखों वाली कहा जाए तो मछलीमें कालिमा नहीं है । यदि मधु भाषिणी कहा जाए तो मधुमें तृप्ति पदा करनेवा गुण है । यदि चक्रचन्द्र-तुल्य भाषा माना जाए तो घप मुख प्रकाश विहीन मानना पड़ेगा । ॥१॥

यदि मयूर सी घोमा वाली कहा जाए तो मोरनीक पुच्छ नहीं हुआ । यदि बोकिल वचनी कहा जाए तो कायसमें सप्त-म्बर (उच्छारण) की कमता नहीं है । घूप सी स्वर्णिम कान्तिवाली कहा जाए तो घूपमें छाप है । तीरसा बटाख माना जाए तो उसमें केवल नाच है, सुष्टि नहीं है । ॥२॥

\* तमिस्रमें सिन्धुके हिरन या भार माननी प्रथा प्रचलित है ।



१२ अष्टक



मान एना अचळे चोभाल  
 मरुळुवळ अचळु कित्तल्लै ।  
 मीम बिधि उड्याळोग्रास  
 मीनिले करमे इस्तै ॥  
 तेन भोयिककुवमै शोभाल  
 तेबिट्टु इल तेनुनकुण्डु ।  
 कून पिर मेट्टि एग्रास  
 कुर मुगम इवण्डुप्पोगुम ॥१॥

मयिलेनुम धायलेग्रास  
 तोगे वेष्मयिलुक्किस्तल्लै ।  
 कुयिलेनुम कुरलळ एग्रास  
 एयिथो कुयिलुक्किस्तल्लै ॥  
 बेयिल्लेमेनि येग्रास  
 बेयिल्ले बेय्यमुण्डु ।  
 अयिलेनुम पार्वे एग्रास  
 अयिबिधि आक्क मिल्लै ॥२॥

## १२ षष्ठ (स्त्री)

[ यह षष्ठ कविकी 'बहू' और 'बहु' नामक रचनाम उपसृप्त है। तमिल भाषामें 'बहू' शब्दके तीन रूप हैं, एक पुरुष सूचक ब्रह्मण स्त्री सूचक भीर वासरा श्रीक-बन्नु या तिरुवीव बन्नु सूचक। केवल मनुष्य जातिक स्त्री-पुरुष सूचक शब्द ब्रह्मण-अन्वय हैं। श्रीक-बन्नुबोला सूचित कर्मवाला शब्द स्त्री और पुरुष जाति दोनोंके लिए प्रयुक्त होता है। ]

यदि उस हिरन\* कहा जाय तो उसमें (भय भीत हाकर) श्रीक उठनकी आपत्त नहीं है। मीन सी श्रीकों वाली कहा जाए तो मछलीमें कासिमा नहीं है। यदि मधु भाषिणी कहा जाए तो मधुमें तृप्ति पैदा करनका गुण है। यदि वक्रचन्द्र-मुत्थ माया माना जाए तो शय मुख प्रकाश बिहीन मानना पडगा। ॥१॥

यदि मयूर सी घोभा वाली कहा जाए तो फाल्गुण पुष्प नहीं होता। यदि कोकिल बचनी कहा जाए तो कायममें सत्र-स्तर (नक्षत्रारण) की क्षमता नहीं है। धूप सी स्वर्णिम कान्तिवाली कहा जाए तो धूपमें ताप है। सीरुवा कटाक्ष माना जाए तो उसमें कक शय है मृष्टि नहीं है। ॥२॥

\* तमिलमें सिवयोका हिरन या और कर्मवाला प्रयुक्त है।

चन्धिरवदमम एग्यास  
 चन्धिरन महनाळ तेयवान ।  
 अम्बरपेण पोळ एग्यास  
 मबळै नाम पार्तबिस्स ॥  
 धोन्धिरु मगळ पोळ एग्यास  
 तिरुविने कण्डार घारे ।  
 तुम्बर वडिवेग्यासुम  
 दोस्सिल्ले बलिमै इस्से ॥३॥

कूबसै मोगम एग्यास  
 मोगतिस कबमै कोळ्ळम ।  
 काम्बळै कपोत्तेग्यास  
 केट्टे कण्डबिस्से ॥  
 मोन्बडुम बाडिप्पोगुम  
 मुत्सैवान पत्सुवकीडो ?  
 एग्विये एग्विटासुम  
 इयकैयिन एयिसैपोक्कुम ॥४॥

बिरुगळ पबळम एग्यास  
 बोषिये मीट्ट कामो  
 कुरबळै शकमेग्यास  
 शगोसि कुमुरिवकूबुम ॥  
 करमदै कमसम एग्यास  
 मामैयिल्ल कमसम कूम्बुम ।  
 शोर मरम मूपसि तोळ्ळ  
 कूबमै वेगदरैक्कामा ॥५॥

यदि चन्द्र-मुखी कहा जाए तो चन्द्र दूसरे ही दिन घटन लगता है। यदि देवकन्या कहा जाए तो उसका हमने कभी देखा नहीं है। यदि लक्ष्मी-सौ कहा जाए तो उसको भी किसने देखा है? यदि सुन्दर आकार वाली कहा जाए तो उन शब्दोंमें पर्याप्त बल नहीं है। ॥३॥

यदि केशोंको मेघ कहा जाए तो मेघकी वासिमा कम है। 'कान्दळ' (नामक) पुष्प तुल्य यदि हाथको कहा जाए तो उस पुष्प का केवल नाम सुना है उसको देखा किसीने नहीं। सूँघते ही मुरझाने वाला कुन्व भला दौतोंके समान हो सकता है? यदि अलङ्कृत कहा जाए तो प्राकृतिक शोभाकी हानि होगी। ॥४॥

यदि उँगलियोंकी प्रवाल कहा जाए तो उससे भला बीजा बजाई जा सकती है? यदि कण्ठको मंत्र तुल्य बताया जाए तो शंखकी ध्वनि रुक-रुककर निकलती है। यदि हाथको कमल माना जाए तो सम्पत्ती कमल समुचित हो जाता है। निरा बूझ जो वास है उसको कण्ठकी समता देना क्या उचित होगा? ॥५॥

कवि-श्री माला—

कृमिप एन मूबके गोभ्रास  
 कूर्मेयुम नेमे यित्से ।  
 ममिपबबळ पाडस एग्रास  
 बेबरे अमुबमुप्यडार ॥  
 तमिप एनुम इनिने एग्रास  
 तनिसमिप इप्पोदित्से ।  
 कमप मणम बेहम एग्रास  
 कन्नियिन ताये काण्बळ ॥१॥

पपस उबम शोत्कि  
 पन्डितगळुवकृबकूड ।  
 कपर्ने पुरिसिबडाबा  
 कट्टे रे पिन्निक्काट्टुम ॥  
 शोर्पसा मडुक्क बेण्डाम  
 शुक्कमाय शोत्सप्पोनास ।  
 अर्पुब अयगु मुट्टुम  
 इयर्कियल अर्मेन्ब न्नी ॥७॥

कण्बबर मरक्क माट्टार  
 केट्टुबर कायप्पोबार ।  
 मण्बैयिस पयगिमोर्गळ  
 मबळै विट्टुगला माट्टार ॥  
 पेण्डु गळ बन्नु बन्नु  
 पेयुबर्काशी कोळबार ।  
 कण्बैयुम कळिप्पुमेन्नाम  
 शासामाम मबळ वाग्बैस ॥८॥

‘बुदबुदा यदि नाकको माना जाए तो उसमें न नुकीलापन है न सीधापन। उसके गीतोंको यदि अमृत-मय कहा जाए तो केवल देवता अमृतके स्वादसे परिचित हैं। यदि तमिल का माधुर्य माना जाए तो आजकल ठेठ तमिल प्रचलित नहीं है। यदि सुगन्धित शरीर कहा जाए तो केवल उस कन्याकी माँ उस सुगन्धका अनुभव कर सकती है। ॥६॥

अनक शब्दोंके छेर रूगानेकी कोई आवश्यकता नहीं जिनसे अनेक उपमाओंसे पूर्ण ‘प्रवच’ (काव्य) तो तैयार हो जाएँ, पर पण्डितों का भी अनुमान ठीक न बैठ। सक्षपमें इतना ही कहा जा सकता है कि वह ऐसी नारी थी जिसमें समस्त अद्भुत सौन्दर्य स्वाभाविक रीतिसे समा गया था। ॥७॥

(एक बार भी) देखने वाले झूल नहीं सकते (उसके बारेमें) सुननेवाले उसको देखने चाहते। पास जो रह सके हैं वे उससे अरुण होना नहीं चाहते। स्त्रियाँ आ-आकर उससे बातें करनेको अतुर होती हैं। झगड़ा-फिंसाव भी उसके पास आकर सान्त हो जाता है। ॥८॥

तत्रित्कुम अरिन्दार मुने  
 तान तनि मडमै तांगुम ।  
 मन्नपम इस्सा थोस्स  
 केटकबुम मानम कोळवाळ ।  
 अन्नियकैनुम तीने  
 माट्टिड अच्चम कोळवाळ ।  
 मन्नबर तवरि नाळुम  
 मबित्तिडा पयिपु मच्चुम ॥६॥

तमक्कुम तन्ने तापर  
 तवक्किडुम कुयन्व याय ।  
 मनक्कुरै ओम्बमिगि  
 मरुट्टुवार एबह मिगि ॥  
 इतक्कुसं इस्मार तम्मो-  
 विचर्चे पोस मोवि याडि ।  
 वनक्किळि पोसक्कोञ्जि  
 बळम्बेवळ बरुनेयिगि ॥१०॥

इयक्केयिन मसमुम तस्कोर  
 इर्चेय्यिनाळ मेम्बे पच्चुम ।  
 छेयक्केयाम पगुप्पु मिक्क  
 शैम्मेयाय छेम्बेवाळे ।  
 मयक्किळा अरिबुन नस्कोर  
 मबित्तिडुम पोक्कुम चाम्पु ।  
 बियप्पोडुम एक्कम कण्डु  
 बियप्पुर बिल्लिगि निगाळ्ळ ॥११॥

अपनेसे बड़ोंके सामने अपनी मूर्खताको प्रकट करनेवाले विनय-हीन बचनोंको वह सुनती हुई भी सहम जाती। परायोंकी भी बुराई करती हुई डरती थी। राजा भी यदि भूल करता तो अपार अतृप्ति प्राणुत होती। ॥९॥

उसके माँ-बाप उसपर अभिमान करते थे उसे किसी प्रकारकी मानसिक चिन्ता नहीं थी उसे डराने वाला कोई नहीं था उष्ण बर्गके लोगोंने घाब रह कर वह बिना किसी कष्टका अनुभव किये वनैले शुकके समान बहकती हुई बढ़ी। ॥१०॥

प्रकृतिका हित और सज्जनोंका सत्संग पाकर वह सुसंस्कृत हुई। आर्जित विद्या आदि भ्रम-विहीन ज्ञान-युक्त और प्रशंसनीय गम्भीरता-युक्त बनी। वह इस प्रकार बड़ी कि उसको दखन वाले चकित हो जाते थे और उसको चाहते भी लगते थे। ॥११॥



मिबन्निबुम शोस्वम मिषक  
 मेष्टिम शिरिबुम इस्ते ।  
 अदिम्बोरु वार्ते वेशुम  
 अहम्बपुम अरिय माट्टाळ ॥  
 सुदम्बर इयस्त्रि नोडु  
 सुबम्बर पयक्कम शोर्बुम ।  
 इबन्बर कुसबिप्पेशि  
 एवरैयुम सममाय एण्बुम ॥१२॥

पळ्ळिपिळ वेष्पाद् काना  
 पलगसे क्यगन्बसिस ।  
 ओळ्ळिय मुरैपिर कट्टे  
 जयर्बर पट्टम पेडाळ ॥  
 वेळ्ळैयर् नागरीक  
 बिवगळुम विरम्बिकट्टु ।  
 कळ्ळमुम कपट मिग्गि  
 कळ्ळयिळा पयिपोल मिग्गळ ॥१३॥

उडैगळिस शूडम पार्पाळ  
 उरम्बिसे शूडम पार्पाळ ।  
 कडे गळिस शौगुम पण्डम  
 कायकरि शूडम पार्पाळ ॥  
 नडेमुदै ओपुक्कम काप्पाळ  
 नाबुरै मल्लै काप्पाळ ।  
 तडेपुर नोम्ब पेदै  
 तायेन तर्गुम तडकाळ ॥१४॥

अपार ऐदबय्य-युक्त होकर भी अहंभाव विहीन थी। कडाईका एक शब्द भी तथा घमण्ड तो वह जानती ही नहीं थी। स्वतंत्र स्वभावकी और स्वतंत्र आचार बिचारकी होकर भी सभीको समान मानकर सभीसे हितकर बातें करती थी। ॥१२॥

त्रिगोंके उच्च महाविद्यालयोंमें उत्तम रीतिकी शिक्षा पाकर उसने उत्तम उपाधि पाई थी। गोरोंकी रीति रिवाजोंका प्रेमके साथ परिचय पाकर वह निष्पट स्वभावकी होकर शास्त्रा विहीन शास्यके समान बहने लगी। ॥१३॥

पहनाबेमें सफाईका ध्यान रखती थी। खाने-पीनेमें सफाईका ध्यान रखती थी। बाजारोंमें शाक-सब्जी लेती तो उसकी सफाईका ध्यान रखती थी। बाल चलन और वर्तकपर ध्यान रखती थी। मैहसे निकलनवासे शय्योंके हितकर होनेका ध्यान रखती थी। सकट घरतोंको माताके समान सम्भालती थी ॥१४॥

कुयसोडु बीर्षे नाबम  
 कुरसोडुम इशंयक्कूट्टि ।  
 पपुवरप्पाडि केट्टोर  
 परवभाम अडैयक्कयेवाळ ॥  
 बिपसुर पोपुडु पोवकुम  
 वीण सुगम बिदम्ब माट्टाळ ।  
 एयिसुडै वेम्मीक्कुट्टु  
 इदप्पिडमाबाळ एम्बोम ॥१५॥

मादगळ सयम कूट्टि  
 मगळिरबम उरिमे काक्क ।  
 माबरम तेडुम वेक्के  
 अडिक्कडि मडक्कक्कयेवाळ ॥  
 तीडुवम वयक्क मेस्ताम  
 तीम्बिड वेण्णुमेरे ।  
 ओदक्कम उक्कत्तोडुम  
 उरैत्तिडुम ओन्ने मासे ॥१६॥

वेक्कळै इगप्पु सुट्टुम  
 वेवैगळ एम्ब वेशि ।  
 पुक्ककोळ एयुबि वैत्तु  
 पुरे कोळ शोयुडु वाप्पिन ॥  
 कणगळिक्क मोर्षे कुत्ति  
 करित्तिड शोयुवार एम  
 एय कोळ एन्नि एन्नि  
 एगुवाळ अकुवे एक्कम ॥१७॥

वाँसुरी और वीणाके नादक साथ अपनी कण्ठ ध्वनि मिलाकर  
 गूढ़ गीत गाकर सुनने वालोंको वह मुग्ध कर देती थी। म्यर्षकी  
 तोंमें समय नष्ट करनेवाले अल्प सुर्बोंकी उसे कभी खचि नहीं थी।  
 तम स्त्रीत्वका आगार थी वह ॥१५॥

महिलाओंका सष स्थापित कर महिलाओके अधिकारकी  
 र्था करती थी और उसके अनुकूल आचरण करती थी। उसकी एक  
 त्र इच्छा यह थी कि सभी बुरी प्रथाओंको दूर करनेके लिए अवर्णनीय  
 स्थाहके साथ परिश्रम किया जाए ॥१६॥

महिलाओंको तुच्छ बताकर उन्हें निगी निम्ननीय बताते वालोंने  
 ऐसी चोट पहुँचाई जो स्वस्थ न होकर फैलती जाती है जीवनके वो  
 नेत्रोंमें से एक को फोड़ डाला। यों बार बार विचार करती हुई  
 इसी विचारमें मग्न रूहा करती थी ॥१७॥

कुप्यतोडु धीप नावम  
 कुरतोडुम इशायककृष्टि ।  
 पयुवरप्पाडि केदपोर  
 परवसाम अइयववेय्वाळ ॥  
 बिपसुर पोपुहु पोवकुम  
 धीप सुगम बिस्म्व माट्टाळ ।  
 एदिसुई पप्पैककुट्ट  
 इरप्पिडमावाळ एम्बोम ॥१५॥

मावर्गळ सगम कृष्टि  
 मगळिरवम उरिमी काक्क ।  
 भावरम तोडुम पेक्के  
 अडिक्कडि नडक्कव्वेय्वाळ ॥  
 तीडुक्क वपक्क मेस्साम  
 तीम्बिड वेक्कुमेर्रे ।  
 ओवक्क उक्कतोडुम  
 उरैत्तिडुम ओग्गे भास ॥१६॥

वेम्माळी इगपुम्बु मुट्टुम  
 पेवैगळ एम्ब वेशि ।  
 पुणकोळ एपुबि वीत्तु  
 पुरै कोळ शेयूहु बाप्पिन ॥  
 कप्पगळिक ओर्षे कुत्ति  
 करित्तिड शेय्वार एप्प  
 एप्प कोळ एन्पि एन्पि  
 एंगुवाळ अडुवे एक्कम ॥१७॥

वाँसुरी और बीणाके नादके साथ अपनी कण्ठ ध्वनि मिलाकर विस्तृत गीत गाकर सुनने वालोंको बह मुग्ध कर देती थी। व्यर्थकी बातोंमें समय नष्ट करनेवाले अल्प सुखोंकी उसे कभी रुचि नहीं थी। उत्तम स्त्रीत्वका आगार थी वह ॥१५॥

महिलाओंका संप स्थापित कर महिलाओंके अधिकारकी रक्षा करती थी और उसके अनुकूल आचरण करती थी। उसकी एक मात्र इच्छा यह थी कि सभी दुरी प्रथाओंको दूर करनेके लिए अवर्णनीय उत्साहके साथ परिश्रम किया जाए ॥१६॥

‘ महिलाओंको सुख्य बताने के लिये मिरी निम्ननीय बताने वाक्यान्वय एसी बोट पहुँचाई जो स्वस्थ न होकर फँसती जाती है। जीवनकाल में नौमें से एक को फोड़ बाँटा। ’ यो बार बार विचार करना हुई इसी विचारमें मग्न रहा करती थी ॥१७॥

कवि श्री माला—

मदममम मादकिस्ते  
मदसैयं विवर्षयाक्कि ।  
नहमनप्पुवु मिग्गि  
मस्सुदोर तुणियुमिग्गि ॥  
उह मणल तरप्पोल  
ओळ्ळित्तिस्सुवोडुंग चेष्मुम ।  
शिह मनप्पाम्मैये मम  
इत्तत्तिन नाशम एस्साल्ल ॥१८॥

कपेम पेशुवागळ  
कपिमं पेण्णे कान्क  
पपल पेण्ण माडि  
पप्पल्लाम आप्पगळ मट्टुम ॥  
अर्पुवम आमवागुम  
अनियायम इन्व माट्टिन ।  
नर्पवम वेडुत्त वेन्  
माळ्ळेसाम मैवाळ नगे ॥१९॥

माट्टियम आडक्केयुवुम  
माडगम माडिक्क चेषुवुम ।  
पाट्टियुम पाडक्केयुवुम  
परत्तैयर कुत्तमुम पण्णि ।  
माट्टिय कर्बेगळेस्सत्ताम  
माडक्ककानि इन्व ।  
वट्टैये पेण्णल्ल एग  
वि

वह कहा करती थी, यह संकुचित भाव ही हमारे देशके पतनका मूल कारण है जो विधान करता है कि महिलाओंका पुनर्विवाह नहीं हो सकता छोटी छोटी सड़कीको भी विधवा होनपर सुगन्धित फूससे वञ्चित कर, अच्छे कपड़ोंसे वञ्चित कर रेशमें फँसे रखके समान प्रकाशमय होनेपर भी संकुचित कर दिया जाए ॥१८॥

यह देवी दिनभर यह सोच-सोचकर दुखी होती थी कि सतीत्वका गुण यात है पर स्त्रियाँ तो उसकी रक्षा करती रहीं और पुरुष अनेक युवतियोंसे मेरु बड़ाकर मनमाना करता रहे—इस देशका यह कैसा अज्ञान का न्याय है? इसीने देशका नाश कर दिया है ॥१९॥

वह कहा करती थी कि नाच नचाकर, नाटक खेलने देकर, गीत बजाकर, बरिया बनाकर पुरुषोंके जो कुछ कर दिखाया उससे उनका यही मनोभाव प्रकट होता है कि स्त्री केवल सुख पहुँचाने वाला शिकार (साधन) मात्र है ॥२०॥



१३ भवन

नीपङ्कन कगळ , आपम्बु  
 निमिन्दु अगग्र मम्बु ।  
 तोषिड कस्तैप्योस्त  
 तिरपङ्कन इरञ्चु तोळुम ॥  
 तूम् एमत्तो दम कात्गळ  
 तुणैतर नडक्कुम पावम ।  
 आण तगै मुद्दुम तक्क  
 अळबोडुम अमपपेट्टान ॥१॥

अरिवोळि बोसुम कक्कळ  
 अरबुरै पेसुम नाक्कु ।  
 शेरि इवम शिकैयै वेट्टित्तु  
 तिगपतर शीबि विट्टु ॥  
 चिरिवसा पेरिबुम अस्त  
 शीरेनुम मूक्किनोबुम ।  
 कुरिगळुम मेरिगळ धाबुम  
 गुणमूळान एण्ने कूरुम ॥२॥

कक्कबर कळिककुम तोट्टुम  
 केट्टुबर मडिक्कुम आट्टुम ।  
 अर्चैयिस्त पयक्क मिस्सार  
 अडक्कमाय अणुगुवार्गळ ॥  
 शर्चैगळ अडगुम कक्कळ  
 शक्तिपुगळ शळैपुकोळ्ळुम ।  
 तोण्डु शोय एवत्तळर  
 तुमुक्कोडु वचक्कम शेम्बार ॥३॥

## १३ गह (पुरुष)

सम्बे हाथ सुखील उन्नत विद्याल बक्षम्बस, छूनेपर पत्थरसे प्रतीत होनेवाले कर्धे, स्वम्भसे प्रतीत हानेवाले दी पैर उन्नत साथ देनेवासे धरम सब छरहसे पूर्य थ्रेष्ठक योग्य सारे अंग उचित प्रमाणके से। ॥१॥

आँखोंसे बुद्धिमत्ता प्रकट होती थी, जीह्वा धर्मकी पर्वा करती थी, सिरके केश कर्धे हुए और सुन्दर सँवारे हुए थे नाक न छोटी थी न बड़ी सुन्दर थी उसके सभी रंग और रूप धोपित करते थे कि वह मुखवान था। ॥२॥

देखनेवालोंको मुख प्रवान करलवाला रूप था। गुण ऐसे थे कि उसका परिषय पानेवाला प्रभावित होकर उसका आदर करते थे निकट रहनका जिन्हें अवसर मिला नहीं था व मन्त्राके साथ उसके पास जाते थे। उसके सामने झगड़े फसाद मिट जाते थे। उसका सेबक अभिमानके साथ उसके सामन सिर नवाते थे। ॥३॥

पडिप्पित्तस पट्टम पेद्दान  
 पम्बुगळ कयार कालात्त ।  
 मडिप्पित्तस पडवकम पेद्दान  
 मरगित्तस वेयम पूच्छु ॥  
 तडिप्पित्तस परिसु पेद्दान  
 नाडिय एरैयुम मग्याय ।  
 मुडिप्पित्तस मुयर्चि मिक्कान  
 मुट्टिसुम चिरम्ब तक्कान ॥४॥

दोम्बरिर दोम्बनेन्  
 क्षिरप्पुळ पिरप्पु चाप्पुवान ।  
 कम्बियिस मात्ते मिक्कोन  
 कवित्तियिल नेत्तम मिक्कोन ॥  
 पम्बिक्क कर्त्तमळ वेण्डि  
 पयिर्चियुम मुयर्चि शेप्पवान ।  
 मस बवि एत्तत्तक्क  
 नई नोडि पुडय मण्वन ॥५॥

अयगुळ एरैयुम कच्छे  
 मळविल्ला मात्ते कोळवान ।  
 पवगिडुम एत्तिसुम जळ्ळ  
 अयमैये कच्छु पेत्तुम ॥  
 एवुविडुम एपुत्तिलेत्तम  
 अयमैये एट्टि पोट्टि ।  
 तोपुविडुम वेम्ब मागा  
 अयमैये तुत्तक्क वैप्पान ॥६॥

पड़ाईमें उसने उपाधि प्राप्त की कन्दुक-क्रीडामें (हाथसे खेलने और पैरसे खेलनेमें) पुरस्कार पाए रगमंजपर नाटक खेलनेमें पुरस्कार पाए। जिसमें ही हाथ लगाता उसीमें मन लगाकर उसे सम्पन्न करता, वह हर तरहसे अनुकरणीय था। ॥४॥

घनिकोंमें घनी माना जाए—ऐसा जन्म उसने पाया। बिद्याके प्रति उसका बड़ा प्रेम था। कविताके प्रति बड़ी अभिरुचि थी अनेक प्रकारकी कलाओंका प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करता था। वह सदाचारी एवं सन्मित्र था। ॥५॥

किसी भी सुन्दर वस्तुपर उसका मन मुग्ध हो जाता था। जिसके भी सम्पर्कमें आता उसके सौन्दर्यपर ही उसका ध्यान जाता। मित्रानेमें व्यक्तियोंकी सुन्दरताको महत्व देता। सौन्दर्यको वह उपास्य देव ही मानता था। ॥६॥

उडंगळिस अयगु पापनि  
 उष्कलम अयगु पापनि ।  
 कुड तडि पडुवकं मेअ  
 कुरिञ्चियिस अयगु पापनि ॥  
 कडगळिस अयगाय तोग  
 कडडई येस्साम चांगि ।  
 अडेवुर वोट्टिल एंगुम  
 असंकरित्तपगु पापनि ॥७॥

कासैयिस अपगिल पुत्तु  
 काय कमि निरेम्बु काट्टुम ।  
 शोसैयिन अयगै शोरुवान  
 सूरियन शिबम्बु तोण्डम ॥  
 मालैयिन अयगै वोट्टि  
 मसैगळिस पडिम्ब मेग  
 चिसैयिन अयगै वोट्टि  
 चित्तिरक्कोळै तीट्टुम ॥८॥

-केञ्चिह 'कामिरा बिस  
 कडडईयेस्साम 'पोटो'  
 इडई पोत्त एडुत्तु वन्ने  
 इवट्टुरै कपुबि पापनि ॥  
 अञ्चिह पडत्तिसेस्साम  
 अयगैये पोळ्ळाय पेशि ।  
 मेञ्चिडुम नम्बरोडु  
 मिय मिग पोपुडु पोवडुम ॥९॥

पहनावेमें सुन्दरताका ध्यान रखता था। भोजन-पात्रमें वह सुन्दरताका ध्यान रखता था। छाता, छड़ी विस्तर मेज कुर्सीमें सुन्दरता का ध्यान रखता था। बाजारमें कोई सुन्दर वस्तु देखता तो उसको खरीदता था और उसे घरपर सजाकर रखता और घोभाका आनन्द पाता था। ॥७॥

सवेरे-सवेरे सुन्दर फूल-फलोंसे युक्त होकर घोभा पानेवाले पीछोंका वह गुण गान करता। प्रकृतिकी तूलिकाकी वनी सध्या कालीन छाल-सूर्यकी और पर्वतोंपर जमे वावणके टुकड़ोंकी घोभाका गुण-गान करता था। ॥८॥

हाथमें लिए छोटे कैमरा के चित्र (फोटो) खूब मिकालकर सघेरे कमरमें उन्हें धोता। उन सभी चित्रोंमें सौन्दर्यको ही महत्व देनेवाले चित्रोंसे बातलाप करता हुआ समय बिताता था। ॥९॥

नाटक प्यिरियन, मत्स  
 माट्टियक्कलैयिल आश ।  
 केडयम कत्तियोडु  
 केरडिगळ पयग आग ।  
 मीडिय नेरम मीरिस  
 नीडिड निरैय भाशी ।  
 ओडमुम ताने मोट्टि  
 उसविड उसप्पान उळ्ळम ॥१०॥

धीररगळ कबैय पोडुम  
 वेट्टियै विपम्बु बायत्तुम ।  
 धीरगळ मुत्ते बाप्पुओर  
 तिरमैयिन शिरप्प पेशि ॥  
 धूरगळ पसा पेर शोन्न  
 सुबन्बर उरगळ शोत्सि ।  
 भारोड मनिबर्केनुम  
 आप्पये अयगान एम्बान ॥११॥

काबले बैयुबम एम्बान  
 कडबुळे काबल एम्बान ।  
 बूबसा वाप्पु मुट्टुम  
 काबत्तिर पोडुम्बुम एम्बान ॥  
 आबलाल काबलेनुम  
 अप्पोळ्ळ अडन्नि लाबार ।  
 शाबसे मेत्ताम एम्ह  
 शाट्टुबान शक्तिप्पिस्तलामस ॥१२॥

नाटकका प्रेमी था। नृत्यमें उसकी अभिरुचि थी। बाल-सुखार लेकर उनका अभ्यास करता। पानीमें देर तक तैरते रहनेका शौक उसे था। आप ही नाब बसाकर मन बहलाया करता था। ॥१०॥

वीरोंकी कथाकी प्रशंसा करता और उनकी विजयका वर्णन करता। पूर्वकासके वीरोंकी वीरताका गुण-गान करता। कई वीरोंके बचनोंको छुड़ाता हुआ कहा करता था कि हर मनुष्यमें पौरुष ही प्रधान गुण है। ॥११॥

बहू कहा करता था कि प्रेम ही भगवान है और भगवान ही प्रेम है। इस संसारका सारा जीवन प्रेममें समया हुआ है। इसलिए जिसमें बहू महान् प्रेम नहीं है उसका मर जाना ही अच्छा है। ॥१२॥



पेक्षगळ अपगु बेपुव  
 पिरिबोध पिरबि एम्बाल ।  
 पपकोळ पाडि आडि  
 पस कर्ने परिधि योडुम ॥  
 कण गोळुम उडगळ पुण्डु  
 कळि तवम काड्दि याया ।  
 एषकोळुम इतिमक्केस्साम  
 इवम्पिड माग एण्णुम ॥१३॥

पपल वपियिल माट्टिन  
 पोडुनळम परिणु पेशि ।  
 शोर्पोपिवाट्टुळ्ळान  
 चुबम्बर आशी पुट्टुम ॥  
 अर्पुव तिरमैयोडुम  
 अरिबुडन अमबडान  
 कर्पेन मिगुम्ब तस्स  
 कवयळुम काट्टि चोस्वान ॥१४॥

ऊरेलाम शोपिक्क बेण्डुम  
 उपिरेलाम कळिक्क बेण्डुम ।  
 नेरिसा पुडुर्मे मिकक  
 समुबल्लम निडव बेण्डुम ॥  
 पारेलाम तनडु माट्टिन  
 पेक्क्युगय परपि, मक्कळ्ळ ।  
 पोरेलाम मोडुंग बेण्डुम  
 एम्बवे पोपुडुम वेण्णाम ॥१५॥

वह कहा करता था कि स्त्री मात्र सौन्दर्य देवीकी प्रतिमूर्ति है। वह मानता था कि गाने और नाचनेवाली अनेक कलाओंका अभ्यास करनेवाली सुन्दर पहनावे पहनकर एगोको प्रसन्न करनेवाली युवती हर तरहके माधुर्यका आकर है। ॥१३॥

अनेक प्रकारसे देशके हितकी बातें करनेकी वाकपटुता उसमें थी वह ऐसी अजबकी कहानियाँ सुनानेमें समर्थ था जिनसे देश प्रेमका भाव पैदा होता था और जो कल्पना पूर्ण और ज्ञान वर्धक थीं। ॥१४॥

उसका एक मात्र कथन यह था कि सारा-देश हरा-भरा हो। पीब मात्र सुखी हों। सारे ससारमें हमारे-देशकी कीर्ति फैले और आपसकी झगड़ाई बन्द हो जाए। ॥१५॥

अडिमपळ इस्सा नाडुम  
 अम्बरम अरदु दोम्य ।  
 कडिबरुम खाति बेद  
 कद्विगळ इस्सा नाडुम ॥  
 कुडि शोर्ले कळबिन अण्णम  
 कोण्णमुम इस्सा नाडुम ।  
 विडिबडुम एण्णो बेद  
 पेण्णये विडिबि पेण्णुम ॥१६॥

वायुमेयुम कठथै शोर्ने  
 वायुक्कीये वगुत्तुकूरी ।  
 त्रूयुमेयै पुगट्टल ओग्रे  
 इलक्किय तुरैयाय कोण्ण्डा ॥  
 तायमोयि तमिय पोट्टुल  
 तमियरम एण्णे नस्स  
 आय् कुडे अरितारबन्मै  
 अडिक्कडि कूट्टिप्येत्तुम ॥१७॥

पुडिय नल एण्णम बेण्णुम,  
 वायुक्कीयिर् पुडुमै बेण्णुम ।  
 मविण्णुडन नम्मे कण्णु  
 मट्ट नाट्टुबरगळेस्साम ॥  
 तुडिण्णुडन तोडरा एस्सा  
 तुरैयित्तुम पुडुमै तोग्रे ।  
 विडिप्ययन एण्णे पेण्णै  
 विट्टिड बेण्णुम एन्बान ॥१८॥

उसके भाषणोंमें उसकी यही इच्छा प्रकट होती कि देशका वह सुमोदय कम होगा कि जब राष्ट्र वासता-मुक्त हो सासक प्रेम और धर्म युक्त हों, फूट डालनेवाला जाति भेद मिट जाए और मद्यपान हत्या और बोरीका नामोनिधान भी न रहे । ॥१६॥

समर्थ विद्वानोंका वार वार समावेश कराकर वह कहा करता था कि साहित्यका एक मात्र उद्देश्य यह हो कि वह समर्थता और करुणाका महत्त्व प्रकट कर पवित्रताका बोध करावे । इस प्रकारके साहित्यसमाठा तमिल भाषा की सेवा करना हमारा कर्तव्य है । ॥१७॥

वह कहा करता था कि आवश्यकता गई विचार धाराकी है । जीवनमें एक नवीनता आवश्यक है । हमें धाम्यकी बातें करना छोड़कर ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि सभी क्षेत्रोंमें नवीनता आ जाए और संसारके सभी देश आतुरता और आदरके साथ हमारा अनुकरण करनेको तैयार हो जायें । ॥१८॥

पिरन्ववर शावहुष्म  
 पेट्टपोमट्टिकागा ।  
 अरन्ववम सिम्बे घोडे  
 अम्बुझेर पणिगळ भाट्टि ॥  
 इरन्ववरगो एग्गम  
 इक्क्यवर आवार एम्ब ।  
 सिरन्विड्डम बेदा बक्ति  
 मुरेगळे सिम्बे शेयबान ॥१९॥

मादबन भवन पेरागुम  
 मा पेदम दोस्वर मैम्बन ।  
 ओददम कस्त्रि कट्टे  
 जयर्बरप्पट्टम पेदुगान ॥  
 तीबदम अरिविकर्गागा  
 बेदा मासिरैयुम शेयबोन ।  
 एबोच कुरैयुम इगि  
 इदबस्तु एपाब्बुळ्ळान ॥२०॥

पन्नत्तिमनेल भाश बस्तु  
 पडिप्पैयुम एन्निपार्तु ।  
 चुणत्तयुम कोञ्जम पौट्टि  
 कुत्तरीये कर्कडिडामल ॥  
 मन्नत्तिनाल मन्नै तगळ  
 मदमगन मरक्किक्कोळ्ळ ।  
 कणक्किक्का तन्नी तायर  
 कात्तिम्बार्गळ कच्छीर ॥२१॥

वह सदा देव सदाकी घातोंपर विचार करता हुआ यह मानता था कि हम समीक्षा मरना ता निश्चित ही है या लाग अपनी उत्तम अन्म भूमिकी चिन्ता करत हुअे उसकी सेवा करत मरेंगे व ही अमर नेंगे । ॥१९॥

उसका नाम था माधव । बड़े छनी परिवारमें पैदा हुआ था । उत्तम विद्या प्राप्त करके अच्छी उपाधि प्राप्त की । निर्मल ज्ञान प्राप्त करनेके लिए उसने देशकी यात्रा की थी । उसके जीवनमें किसी बातका कमी नहीं थी । वह सत्ताईस वर्षका था । ॥२०॥

**१४. ओरु नाळैक्कु ओरुवरम**

पह्लसवि

ओरु नाळैक्कोरुवरम  
ओरु मोळिप्पोपुवेनुम ।  
उरैप्पडैलवने  
एण्णिञ्चुगित्तुम्बो मनने ॥ (ओरु)

अनुपह्लसवि

तिरु नाळुम तेरुम एरु तेळिमसैन्बल्ल  
शाम्बने असैयामल्ल बिपालत्तिल्ल निरत्तिये (ओरु)

चरणङ्गळ

बिळियुमुन बिपित्तने  
बेळुक्कुमुन बीट्टै बिट्टाय ।  
बेम्बेराम इळत्तुक्कु  
वौवासपोल ओट्टु मिट्टाय ।  
उळसुम मनमुम शोर्म्बु  
ओप्पिन्दिवा बीडु वन्नुम ।  
उण्णुमपोपुनुन कूडा ।  
एरुम निलप्पबिस्त ॥ (ओरु) (१)

## १४ एक दिन एक वार

[ यह कविका गीत है। तमिलके पीठोंमें पहले पस्सवि नामके चरण होते हैं। यह पस्सवि हिन्दीकी टक के समान है।

पस्सवि के बाद अनुपस्सवि नामके चरण रहते हैं। बीचका जो राग होता है उसका एक भाग 'पस्सवि' के पानेमें आता है और दूसरा भाग 'अनुपस्सवि' के नागमें आता है। अनुपस्सवि के बाद "चरण" नामक पूरे गीत आते हैं। हर बीचमें रागके दोनों भाग रहते हैं। ]

### पस्सवि

हे मन ! जिसने तुम्हें पैसा किया उसका क्या तुमने एक दिन भी एक क्षण भरके लिए भी स्मरण करके सुख पाया ?

### अनुपस्सवि

मेले या पर्वके अवसरपर महीं मनको घटकने न वे कर ध्यान लगाकर (क्या तुमने) ।।टेक।।

### चरण

(तुम) सूर्योदयके पूर्व जागे पी फटनेके पहले चरते बाहर गए विभिन्न जगहोंकी जममादडकी तरह उड़ते गए धारीर और मनसे बककर आराम के लिए घर आए वहाँ जाते हुए भी तुम्हारा मन स्मर नहीं हुआ ॥१॥ टेक



अरेककाशुककानालुम  
 ओह नाळ मुपुडुम काप्पाय ।  
 भायिरम पेरेयेनुम  
 असुप्पिगिप्पोय पार्याय ।  
 उरैप्पार उरगद् केस्साम  
 उयस्त्रिडुम होस्वने ।  
 उमुळ इरुप्पवने  
 एन्निडा नेरा मिस्त्रे ॥ (ओह) (२)

शिसा माळैक्कविकारम  
 सेय्युम ओहबर्कञ्ज ।  
 शेय्या होस्वने एत्तम  
 होप्पाय नी पस्त्रे केञ्ज ।  
 पत्तमाळुम चम्म मेस्साम  
 पालिक्कुम अदिकारी ।  
 परमने निनेक्कवुम  
 ओह कणम उमक्कित्तै ॥ (ओह) (३)

'नाळुम कियमै' एषु  
 नत्सवर उरत्तालुम ।  
 नाळैक्कु भागट्ट म  
 वेसे अदिकम एन्नाय ।  
 पावुम पयत्तैसेडि  
 पडुम पाडु कणक्कित्तै ।  
 वगवार्ने एन्ना मट्ट म  
 अबकाशम उमक्कित्तै ॥ (ओह) (४)

एक अश्लीलके लिए दिन भर खड़े रहते हो, हजार लोगोसे मिसना हा छो भी जा जाकर मिलत हो। पर वाम्पायकारोंकी वाकसे भी परे ओ है, तुम्हारे अन्दर ओ है उसका स्मरण करनेको समय नहीं है ॥२॥ टेक

पोड़े धिनोंक लिए अधिकार बलानेवाले एक ब्यक्तिसे डरकर वह जो कुछ करनेको कहता है वह तुम वसि विखाते हुए करते हो पर बहुत दिनों तक—जम भर—तुम्हारा पालन करने वाले अधिकारी परमात्माका स्मरण करनेके लिए तुम्हें एक क्षणका भी समय नहीं मिलता ॥३॥ टेक

यदि कोई सज्जन कहे कि आज तीन है, त्यौहार है ( इसलिए भगवानका स्मरण करो) तो तुम कहते हो 'आज काम अधिक है कल कर लेंगे। तुम्हें धनके लिए जो परिश्रम करते हो उसकी कोई सीमा नहीं पर भगवानका स्मरण करनेके लिए तुम्हें समय नहीं है ॥४॥ टेक

अरेक्कानुक्कानात्तुम  
 ओद नाळ मुपुत्तुम काप्पाय ।  
 भापिरम पेरेयेमुम  
 अरुप्पिगिप्पोय पार्याय ।  
 उरैप्पार उरैयट केत्साम  
 उयन्दिबुम शेस्वन ।  
 उम्मुळ इदप्पबमै  
 एण्णिडा नेरा मिल्सै ॥ (ओद) (२)

शिसा नाळैक्कदिकारम  
 शोय्युम ओरुवर्कळिञ्ज ।  
 शोय्या शोस्वर्दै एत्साम  
 शोयबाय नी पत्सै केळिञ्ज ।  
 पत्तनाळुम जम्म मेत्साम  
 पासिबुत्तुम अदिकारी ।  
 परमनै तिनैक्कबुम  
 ओद कम्म उन्निकल्सै ॥ (ओद) (३)

'माळुम क्रियमै एम्  
 मत्तुवर उरैतात्तुम ।  
 नाळैक्कु भागट्टुम  
 बेळै अदिकम एम्बाय ।  
 पात्तुम पयसैत्तैडि  
 पत्तुम पाडु कप्पिकल्सै ।  
 वागवानै एन्ना मट्टुम  
 अन्नकाशम उन्निकल्सै ॥ (ओद) (४)

एक अघेसीके लिए दिन भर खड़े रहते हो हजार श्लोकासे मिलना हा तो भी जा जाकर मिलते हो । पर वामोपकारोंकी वाकसे भी परे जो है, तुम्हारे अन्तर जो ह उसका स्मरण करनेको समय नहीं है ॥२॥ टेक

थोड़े दिनोंके लिए अधिकार बसानेवासे एक व्यक्तिसे डरकर वह जो कुछ करनेको कहता है वह तुम वाँट विखाते हुए करते हो पर बहुत दिनों तक—जन्म भर—तुम्हारा पासन करत वाले अधिकारी परमात्माका स्मरण करनेके लिए तुम्हें एक क्षणका भी समय नहीं मिलता ॥३॥ टेक

यदि कोई सज्जन कहे कि आज तीज है त्यौहार है ( इसलिए भगवानका स्मरण करो) तो तुम कहत हो 'आज काम अधिक है करू कर लेंगे' । तुच्छ धनके लिए जो परिश्रम करते हो उसकी कोई सीमा नहीं, पर भगवानका स्मरण करनेके लिए तुम्हें समय नहीं है ॥४॥ टेक

१५. इन्द्रियताय तोत्तिरम्

पत्सवि

ताये बन्धनम्—इन्द्रियत्  
ताये बन्धनम् ।

अमुपत्सवि

बारपि तस्मिन् बेरिस् इपैयेमप्  
पूरम् बळन्निगप् पुण्णिय बूमियेम्— (ताये)

वरप्यङ्गळ

मिस् बळम् नीर बळम् निरेम्ह बुम्माडु  
नीम्ह उम् परप्पिक्कुम् बेरिस् ईडु ।  
बिस्सैयिक्कुम् बिळ्ळैबिक्कुम् मत्तिम्हडुम् बेसम्  
बेष्चिय याडुम् उम् एस्सैयिस् पात्तम् ॥ (ताये) (१)

मुप्पडुम् पत्तुम्माम् कोडि उम् मक्कळ  
मुक्कुम्पत्तैयुम् आष्चिडत्तक्कार ।  
अपुद्द मायिय आदुक्कयळ निरेम्हाय  
अरियात्तम्मात्तम् अडिम्मैयिस् इक्कम्भोम् (ताये) (२)

पडैयेडुत्तबत्तम् पडियेडुत्तबत्तम्  
पर्यत्त नाट्टार उम्मेयडुत्तबर्  
अडैबुडुम् अत्तम् पेय्यरपुम् तागि  
आडरित्ताम्ह उम् अक्कुम्माम् ओम्मा (ताये) (३)

बायैम्हळ पपक्का पडित्तबळ नीये  
पडित्तबत्त पय्यम्मेत्तम् नडसैयुळ्ळाये ।  
आशागळ अप्पडिय अरगळ्ळिरविरम्हाय  
अम्बिन अप्पिम्हळै अम्मेत्तैयुम् अरिम्हाय ॥ (ताये) (४)

## १५. भारतमाताका स्तोत्र

### पहलखि

हे माता बन्धे । हे भारतमाता बन्धे ।

### अनुपल्लखि

तू सम्पूर्ण सम्पन्नता युक्त ऐसी पुण्य भूमि है जिसकी ससार भरमें कोई सानी नहीं है ।

### चरण

तेरे प्रदेशमें उर्वर भूमि और जीवन प्रद बल भरपूर है । तेरा बिस्तार तो असमान है । मूल्यमें और उत्पादनमें तेरा देश उन्नत है । जो कुछ भी आवश्यक हैं उन सब का तेरे अन्दर बास है ॥१॥ टेक

सीस और दस करोड़ तेरी सन्तान हैं जो तीनों लोकोंका शासन करने योग्य हैं । आश्चर्य जनक समर्थासे तू युक्त है । हम अपनी मूर्खताके कारण बासतामें रहे ॥२॥ टेक

तेरे पास आने वाले विभिन्न देशके लोग चाहे चढ़ाई कर आए हों, चाहे भूखके मारे आए हों उन सबको अपनाकर सबका पालन करनेका तू जो गुण है वह बड़े ॥३॥ टेक

तूने कई भापाएँ सीखीं , जो कुछ सीखा उसके योग्य तेरा परित्र है । तू इच्छा मात्रको हटानेवाली धार्मिकतामें श्रेष्ठ है । प्रेमके सभी मार्गोंसे परिचित है ॥४॥ टेक

ज्ञानमुम कसैयळुक्त्तबप्पिडमावाय  
 मागारिगत्तिन पिरप्पिडमावाय ।  
 ज्ञानमुम तवगळ तागिनदुन के  
 बहमम यावैयुम तयैत्तकुमिगे ॥ (साये) (३)

मब बेरि कोट्टुमैयै माट्टुम न्नन पोरुमै  
 मट्टवर मबत्तैयुम पोट्टुम उन पेदमै ।  
 सबमेनुम सत्तिय सान्त्तियै पुरैप्पाय  
 सम्मार्गत्तवर शिर्बैविल इरुप्पाय । (साये) (६)

तू ज्ञान और कलाका वासस्थल है। सभ्यताकी जन्मभूमि है।  
तेरे हाथने दान और उपका धारण किया है। यहीं पर प्रक-वत्सके  
घर्मकी शोभा हुई ॥५॥ टेक

तेरी सहिष्णुता घमनिघताका, परिवर्तन, करती है तेरी  
बड़ाई पराए, घर्मोंकी प्रशंसा करती है। तेरी आशुति सदाय, और धान्ति  
है। मन्त्रे सज्जनोंके मनमें तू रहती है ॥६॥ टेक



कवि-श्री माता—

१६ कडबुळी अरिन्दवर

पस्तुवि

अवरे कडबुळी अरिन्दवरावर  
अनेवसम मडित्तड तमुम्बवरावर

(अवरे)

अनुपस्तुवि

तुम्बप्पडुबोर तुयरस सहियार  
तुडितुडित्तोडि तुर्चे शोयप्पुगुबार  
इम्बस तमक्केना एबैयुम बेण्डार  
यावसम तुगप्पडा शोवळळ पुण्डार ॥

(अवरे)

धरणकुळ

पक्षियास बाडिम एबैयुम पार्तु  
पट्टिमि तमक्केन प्परिबपितार्तु ।  
बिद्योयाम मुडिम्बबे बिबप्पुडन कोडुप्पार  
बीप उपचारम बिल्लम्बुवस बिडुप्पार ॥ (अवरे) (१)

नोयास बडम्बिडुम पारैयुम कडु  
नोम्बेनन्नेयुपार एम्मात्तोडुम ।  
तायाम एनवे तम तुगम एबैयुम  
तळ्ळिळवत्तासमिनिस तानिसम्बुवयुम ॥ (अवरे) (२)

## १६. भगवानको जाननेवाले

### पत्सवि

वे ही भगवानको जाननेवाले हैं—सबके आदरके योग्य हैं—

### अनुपत्सवि

(जो) दुःखी लोगोंका दुःख न सहकर तड़पते हुए उनकी सहायता करने जाते हैं। अपने लिए कोई आनन्द नहीं चाहते पर इस उद्देश्यसे सेवा निरत हैं कि सब लोग सुखी हों। टेक॥

### घरष

(जो) भूखसे पीड़ित किसीको भी देखकर अपना ही उपवास मानकर कृपा पूर्वक उन्हें सान्त्वना देकर धीमे ही अपनी क्षतिभर (अन्न) प्रेम पूर्वक बेते हैं और भयर्षकी औपचारिक बातें छोड़ते हैं ॥१॥ टेक

बीमारीसे पीड़ित किसीको देखकर, प्रत मानकर सब तरहकी सुधूपी करते हैं। कर्तव्य मानकर अपना सो सब सुख छोड़ते और पास रहकर उसकी सेवा करते हैं ॥२॥ टेक

१७ तिरुमुक्ति सूक्तोम

पत्सवि

तिव मुक्ति शूद्रिकुबोम—वेय्वत्तमिय मोयिक्कु । (तिव)

अनुपत्सवि

वव मोयि एवत्तकुम पारिककोडुसुदवि  
वर्म्म मिगुम्ब तमिय उम्भ उसगरिय । (तिव)

चरणकूळ

पेट्टकळै इपप्पु मट्टवरेसोपुवा  
पेवैर्म्म शोयुवु विट्टोम आदक्कि नाळ नम अरै ।  
उट्ट अरशियन्दे उरिर्म्म पेवैर्म्म कुगि  
उळ्ळाम ववम्बिननाळ पिळ्ळैगळ शीर्कुलैम्बोम— (तिव) (१)

अशेयै मीट्टुम अक्कळ अरियण मीदिवत्ति  
अक्किन्नम मुपुडुम अक्कळ महिर्म्म चिळपम्बोपुबोम ।  
मुम्भ पेवैर्म्म वव्वे इलुम पुडुर्म्म पेट्टु  
मुत्तमिय शेरम्बियक्कळ चित्तम कुळ्ळिन्दिव्वे । (तिव) (२)

तायिन ममम कुळ्ळिर्न्नाळ तवम अडुवे नमक्कु  
वारवि तथिस मम्मै पारित्तमेळ इगय्वार ।  
नोपुम नोडियुम चिट्टु-नुम्परिवोडु नस्स  
मूसुम कसैगळ एत्ताम मेसुम मेसुम कळप्पोम (तिव) (३)

## १७ श्री मुकुट पहनावें

### पस्तवि

(हम) श्री मुकुट पहनावें, वही तमिल भाषाका (टंक)

### अनुपस्तवि

आनेवाली सभी भाषाओंको खूब देखकर भयद पहुँचाने वाली वानपील तमिलकी सच्चाई दुनिया जाने (इस उद्देश्यसे) । टंक ।।

### स्वरण

हमने यह भूल कर डाली कि आनेवाली माँको छोड़कर अन्योकी सेवा की । इससे हमारी माँ अपना राज्य खाकर अपने अधिकार और अपनी बड़ाईसे वञ्चित होकर दुःखी हुई । इसलिए उसकी संतान हम भय्ट हुए ।।१।। टंक

माँका उदारकर उसे फिर उसका सिंहासनपर बैठाकर ससार-भरमें उसकी कीर्ति फैलावेंगे । उसका पुराता गौरव प्राप्त हो जाए, और भी नया गौरव प्राप्त करे और त्रितमिल (प्राचीन कालमें, बेर चोल पाण्ड्य नामक तीन प्रसिद्ध राजाओंसे आदर भाव्य अथवा इयल ही नाटक—काव्य संगीत और नाटक—नामक तीन विभागोंवाली) का चित्त प्रसन्न हो इस उद्देश्यसे ।।२।। टंक

माँका मन प्रसन्न हो तो वह हमारे लिए तपस्या (तुल्य) है । अब फिर इस ससारमें कौन हमारा अपमान करेगा ? आधि-व्याधि रहित होकर, सूक्ष्म बुद्धियुक्त होकर हमें धर्मियों और कलामोंकी अधिकाधिक उपरति करें ।।३।। टंक

## १८ देवात्तोण्डु

पस्सवि

बेस लोच्छुगळ होम्दिबुबोम  
बेयुबम तुभे बरक्क लोयुबोम । (बेसत्)

अनुपस्सवि

मम्मुडे मरुं माम् मळ  
मम्मैमळ मुन्पोस इति मीळा ।  
एम्मुडेय राञ्जियम इहु बेगे  
इम्बिय मणिप्पिड चोम्बेगळ ॥ (बेसत्)

चरमकुळ

पञ्जसकोडुमैयै ओयित्तिडुम  
बारत नाडिनिक्केयित्तिडुम ।  
अट्टुम अडिमैत्तम नौमि  
अम्बिन आर्म्मि वेच्छुमेगळ ॥ (बेसत्) (१)

शोरम तुन्निमुम इस्सामळ  
ओम्बियिगेबदम निस्सामळ ।  
वीरुम पुडुमै पोडुवायबिम  
बिडुबलै यिम्बम बेच्छुमेगळ ॥ (बेसत्) (२)

पट्टिनिक्किडुप्पवर इस्सामळ  
पडिक्कावरेना शोस्सामळ ।  
एट्टिममट्टिमुम एस्सावम  
इम्बुक्कम राञ्जियम तेनपडवे ॥ (बेसत्) (३)

इम्बियर एस्साम ओद चाति  
घाक्ककुम इगे ओद तीति ।  
मोम्बवर ओस्सवम इस्साव  
मुत्तम अरशियळ उष्ठाक्का ॥ (बेसत्) (४)

## १८ देश सेवा

### पल्लवि

देशकी सेवा करें इसको हाथ जोड़ें कि वह हमारी सहायता  
रे।

### अनुपल्लवि

अपने देशका पालन हम करें, पुरानी भलाइयाँ फिर प्राप्य हों  
इन उद्देश्योंसे) यदि भारतीयोंको यह मामलर धुंधी मनानेका अधिकार  
तो कि यह हमारा राज्य है तो । टेक॥

### चरण

अकाल मामक आफतको हटानेके लिए, भारत देशको अधिक  
जबर बनानेके लिए यदि तुच्छ वासतासे निवृत्त होकर प्रेमका प्रसाप  
पाना हो तो ॥१॥ टेक

यदि (हम चाहें कि) कोई भी अम भीर वस्त्र-विहीन होकर  
मुक्त न रहे और यदि हम गौरवमय नबजीवन मुक्त होकर स्वतन्त्रताका  
मानन्द पाना चाहें तो ॥२॥ टेक

भूखा कोई न रहे अपढ़ कोई न कहलावे और अमा साध्य सब  
पुख पावें—ऐसा सुखमय राज्य स्थापित करनेके लिए ॥३॥ टेक

भारतके सभी लोग एक जातिके हैं सभीके लिए यहाँ समान  
नियम (कानून) है दुःखी कोई नहीं है—ऐसी स्थिति जिसमें हो बीसा  
राज्य स्थापित करनेके लिए ॥४॥ टेक

जातिबकोडुमैगळ मींगिडबुम  
 समरस उर्पाबिगळ मींगिडबुम ।  
 मोदिबकोडुम इरुप्पिडमाम  
 मिर्कुमोर अरणिपल उरुप्पडबे ॥ (बेसात्) (५)

परिगळै एस्साम कुरैतिडबे  
 वदम्बडि विळेयुपळ निरैन्बिडबे ।  
 बिरिगिरा पोडुप्पणळ्पेसम्बे येसाम  
 वेट्टिन्बिक्कमम तोट्टिडबुम ॥ (बेसात्) (६)

पप्पत्तिम पेसमैय पोबिकवैप्पोम  
 पण्डुळ्ळिन बिल्लै तूक्कि बप्पोम ।  
 गुणत्तिम पेसमैगळ इस्साब  
 कुलमुम विरिबिनिण्बेस्साबु ॥ (बेसात्) (७)

मनिबन मनिबन एयप्पबैयुम  
 मक्कळै पोरिल मायप्पबयुम ।  
 तनियोड वयिमिल तडुत्तिड मोर  
 बरमम उरुगिनिन्न तपत्तिडबे ॥ (बेसात्) (८)

सत्तिम बापबिने माडुबकुम  
 झान्बप्पेसमैगळ कूडुबकुम ।  
 उत्तम गाबिमिम उपबेसम  
 उत्तगुक्कोडुम नम बेसम ॥ (बेसात्) (९)

ताप्पम्बव रेम्बवर इंगिस्सै  
 बरिद्विरध नमक्किनि पयिस्सै ।  
 बापन्बिडुम बरैयिळुम पुणय शोय्थोम  
 वानिळुम उयर्बाम बापन्बिडुबोम ॥ (बेसात्) (१०)

जाति भेद को दुराह्वय दूर करने के लिए समता का भाव फैलाने के लिए और म्यापका निवास स्पष्ट हो ऐसा एक राज्य स्थापित करने के लिए ॥५॥ टेक

कर कम करने के लिए, आमदनी और उत्पादन बढ़ाने के लिए, बिम्बूत होनेवाले सार्वजनिक खर्च को घटाकर विफायत साने के लिए ॥६॥ टेक

पसके महत्त्व को हम दूर कर देंगे वस्तुओं की कीमत हम बढ़ाकर रखेंगे गुण सम्पन्न न हो ऐसा कोई घराना अब नहीं रहेगा ॥७॥ टेक

मनुष्य का मनुष्य घात्रा दे शोग युद्ध में मर जाएँ—एसी रीति का एक बिभिष्ट रीति से राकन के लिए और ससार में धर्म की स्थापति हो इस उद्देश्य से ॥८॥ टेक

हमारा देश ससार भर को उत्तम मानव गान्धीजी के उपदेश का बोध करायेगा कि वह सत्य-जीवन ग्रहण करे और धान्तिका महत्त्व जान ॥९॥ टेक

मिन्न नाम का यहाँ कोई नहीं है। दारिद्र्य अब हमारे हिस्से का नहीं है। जब सब जीवित हों प्रगति-योग्य काम करेंगे आकाश भी उन्नत होंगे। (अथवा स्वर्ग में भी उन्नत रहेंगे।) ॥१०॥ टेक





जाति-भेद की बुराईयों दूर करनेके लिए समताका भाव पैदा करनेके लिए और म्यामका निवास स्थल हो ऐसा एक राज्य स्थापित करनेके लिए ॥१॥ टेक

कर कम करनेके लिए, आमदनी और उत्पादन बढ़ानेके लिए विस्तृत होनेवाले सार्वजनिक खर्चका घटाकर विफायत लायेके लिए ॥६॥ टेक

वैमरु महत्वकी हम दूर कर देंगे वस्तुओंकी कीमत हम बढ़ाकर रखेंगे, मुक्त सम्पन्न न हो ऐसा कोई घरना अब नहीं रहेगा ॥७॥ टेक

मनुष्यका मनुष्य छात्रा \* लाग युद्धमें मर जाएँ—एसी रीतिका एक विधिगत रीतिसे रोकनेके लिए और संसारमें धर्मकी स्थापि हा इस उद्देश्यसे ॥८॥ टेक

हमारु दण संसार भरकी उत्तम मानव गान्धीजीके उपदेशका भाव फलनगा कि वह सत्य-जीवन ग्रहण करे और धान्तिहा महत्त्व प्राप्त ॥९॥ टेक

“निम्न” नामका यहाँ कोई नहीं है। धारिद्र्य अब हमारे हिम्नका नहीं है। अब तक जीवित हों प्रयत्न-भाग्य काम करेंगे, आकाशम भी उन्नत हागे। (अथवा स्वर्गमें भी उन्नत रहेंगे।) ॥१०॥ टेक